(शेष टाइटिल पृष्ठ ३ पर देखिये)

दो शब्द

यू ना आधुनिक [illegible] पैथिक होमियापैथिक यूनानी बायाकेमिक, नचुरल ट्रीटमेंट (जल, विद्युत तथा वाष्प द्वारा चिकित्सा) इत्यादि कई प्रकार की चिकित्सा पद्धतिया प्रचालत हैं परन्तु आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति भारतवर्ष मे इतनी ही प्राचीन है जितनी कि मानव सृष्टि समय के प्रभाव से यह विद्या नष्ट प्राय सी हो गई थी अब पुन इसके उद्धार का प्रयत्न किया जा रहा है और य विद्या उन्नत होती जा रही है।

पूर्व काल म जब तक पाश्चमाय तथा यवन आदि जातिया भारत मे नहीं आई थी आयुर्वेदिक चिकित्सा का बोल बाला था और राज्य का आर स इसे बहुत प्रोत्साहन मिलता था। यह भारतवष वही पुण्य भूमि है जहाँ इस चिकित्सा पद्धति का उद्भव हुआ और जिस पर प्रकृति ने अपने तमाम सौन्दय पैदा किये है तथा सुहावना वस्तुओ स इसे सजाया है निर्मल जल से भरी हुई अनेक छोटी बडी नदिया हरे भरे पडो स भरे हुए सुन्दर वन उपवन और पवत शृंखलाए फल फूल और सुन्दर वृक्षो से शोभायमान उद्यान एव पुष्पवाटिकाए हर प्रकार की ऋतुए इत्यादि इत्यादि जो प्रकृति ने इस पुण्य भूमि को अच्छा समझ कर प्रदान की है, ससार म किसी को नहीं तथा बडे बडे प्रतापी राजा महाराजा शूरवीर, योगी, तपस्वी दानी, मानी सब विद्याओं मे निपुण बडे २ उच्च कोटि के विद्वान जो इस पुण्य भूमि पर पैदा हुए ऐसे आज तक भी कहीं दूसरी भूमि पर नहीं हुए यही युग से जब ये देश अपनी सर्व विद्याओ के उच्च शिखर पर पहुँचा हुआ था। सर्व विद्याओ मे भारत ने वे उन्नतिया की कि जिस से

आज दूसरी जातियाँ लाभ उठा रही हैं। उन विद्याओं को सीखने के इच्छुक सदा से इस भारत वर्ष में आते रहे हैं। कोई जाति इस बात से इनकार नहीं कर सकती कि किसी युग में यह भारत वर्ष सर्व विद्याओं का भण्डार था। सर्व विद्याएं यथा-फ़िलौस्फ़ी फ़िजियालोजी मेकालोजी विज्ञान, योग, दर्शन, न्याय तत्व, रासायनिक, अध्यात्मीक विद्या इत्यादि जो आजकल दूसरे देशों में उन्नति पर देखने में आती है उन सब का निकास यहीं भारत की पुण्य भूमि है।

सब से प्रथम आयुर्वेद विद्या यहीं से पैदा हुई और इसके पश्चात् यहां से अरब, यूनान, योरुप, अमरीका, इंगलैन्ड आदि अन्य देशों में पहुँची, बड़े बड़े आधुनिक पश्चिमीय और पूर्वीय विद्वानों ने भी इस बात को अपनी पुस्तकों में लिखा है कि आयुर्वेद चिकित्सा सब से प्राचीन है और तमाम चिकित्साओं का इसी से निकास हुआ। इस विद्या के आदि विद्वान अश्विनी कुमार और धन्वन्तरि जैसे आयुर्वेद पारगत को समार जानता है जो कटा हुआ सर जोड़ देने दान्त और आँख नये बना कर लगा देने तक की योग्यता रखते थे। भारत वासी आज तक उनकी पुण्य स्मृति में धन तेरस (धन्वन्तरि त्रयादशी) नामक त्योहार मनाते हैं इस दिन प्रत्येक भारतीय अपने गृह को शुद्ध व स्वच्छ करता है और निरोग रहने के लिये भगवान धन्वन्तरि की पूजा करता है। परन्तु दुख है कि उनके लिखित 'अश्वनी कुमार संहिता' तथा 'धन्वन्तरि संहिता' नामक ग्रन्थ आजकल हमें प्राप्त नहीं हैं। इन को छोड़ कर और भी ग्रन्थ जो इनके पश्चात होने वाले आयुर्वेद ऋषियों ने लिखे कई एक आज कल संसार में नहीं हैं। इन ग्रन्थों में हमारे ऋषियों ने अपने जीवन भर परिश्रम करके जो ज्ञान का भण्डार भर दिया था जो आधुनिक एलोपैथिकादि विद्वानों

के स्वप्न में भी नहीं आ सकता. काल चक्र का प्रभाव है, यवन यहां आये, उनका देश पर आधिपत्य हुआ, द्वेष बुद्धि होने के कारण विद्या से लाभ उठाना तथा उसका आदर करना उन्हो ने नहीं सीखा धर्मान्धता के कारण उन्हो ने हमारे बहुत से ग्रन्थों को जलाया अनेकों को नष्ट भ्रष्ट किया तथा शेष को जल प्रवाह कर दिया जो कुछ आयुर्वेदिक ग्रन्थ हम आज कल देख रहे हैं वे ऐसे है जो नष्ट होने से बचा लिये गये थे, और वह भी इतने काफी है कि आयुर्वेद की चिकित्सा प्रणाली को सर्वदा सब चिकित्सा प्रणालियों से आगे रख सकते हैं। आज कल जितनी चिकित्सा पद्धितियां संसार मे देखने मे आरही है वे सब आयुर्वेद की रूपान्तर ही है कोई नवीन नही। जो जो बातें एलोपैथी ने आविष्कार की हैं और अभी तक जारी हैं तथा जो जो शल्य यन्त्र तथा अन्य कार्यो के लिये उपकरण एलोपैथिक वेत्ताओं ने आज तक बनाये है वे कुछ नवीन नहीं है आयुर्वेद की पुस्तकों मे इन का वर्णन है। आयुर्वेद का महान ग्रन्थ सुश्रुत सहिता शल्य विज्ञान से ही भरा हुआ है। अन्तर केवल इतना ही है कि एलोपैथिक की भान्ति नवीन युग के आयुर्वेद विद्वान इन्हें कार्य रूप(Practical Condition)में न लासके कारण कि उनकी परिस्थितियां उन्हे सहायता न पहुँचा सकीं। परन्तु बहुत से आयुर्वेद विद्वानो ने आयुर्वेद को पुन उन्नत करने का बीडा उठा लिया है, इसी भाव को लक्ष्य करके सन् १८६८ मे जब कि भारत मे कोई अच्छी आयुर्वेदिक सस्था न थी बृहत् आयुर्वेदीय औषध भाण्डार नाम की संस्था का उद्घाटन इसके सञ्चालकों द्वारा हुआ, तब से आज तक ये संस्था जनता की महान सेवा करती चली आरही है और भगवान की कृपा से नित्य इसी प्रकार करती रहेगी। आयुर्वेद के समुत्थान के लिये इस संस्था ने

आज तक जो जो प्रयत्न किये है वे सर्व विदित है। हमारा ध्येय इस संस्था द्वारा केवल आर्थिक लाभ ही नही विशेषत: आयुर्वेदोन्नति करना है।

इस संस्था की विशेषता

ये संस्था शुद्ध आयुर्वेदीय तथा यूनानी औषध तय्यार करने वाली और उन्हे वैद्यो तथा जनता को उचित मूल्य पर देने वाली भारत की प्राचीन तम संस्था है। सर्व औषधिया बडे बडे आयुर्वेद पारगत अनुभवी विद्वानो की देख रेख मे तय्यार कराई जाती है और इनमे उत्तम प्रकार की ताजा जड़ी बूटियां ही काम मे लाई जाती है, मर्यादा बाहिर जडी बूटियों को औषधालय से बाहिर निकाल दिया जाता है।

संस्था का व्यवसाय

बहुत विस्तृत पैमाने पर चालू है, जिसकी ठीक ठीक व्यवस्था करने केलिये संस्था ने निम्न कार्य क्रम विभाग खोले हुए है।

(१) आयुर्वेदीय औषध निर्माण शाला—जहा आयुर्वेद मे उच्च शिक्षा प्राप्त अनुभवी कविराजो की देख रेख में रस, भस्म, गुटिका, पर्पटी, गुग्गुल चूर्ण, तैल घृत आसवारिष्ट, खण्ड, मोदक अवलेह, पाक लेप वर्ति अञ्जन, क्वाथ, मरहम नस्य, क्षार, द्रवक्षार, शुष्कसत्त्व अर्क तथा कूपीपक्व रसायने इत्यादि शास्त्रीय औषधिया शास्त्रानुकूल व अपने वंश परम्परागत अनुभूत प्रयोगानुकूल निहायत स्वच्छता से तय्यार होती है।

(२) यूनानी औषध निर्माण शाला—यहां, यूनानी दवाइयों के बनाने में दक्ष अनुभवी दवासाजो द्वारा यूनानी खमीरेजात,

जवारिश, तिर्याक, कुर्स, हबूब माजून अर्क यान इत्यादि दवाए तय्यार कराई जाती हैं।

(३) पेटेन्ट औषध निर्माण शाला—यहां संस्था के सचालक महोदय के पूर्व पुरुषों की शतशानुभूत पेटेन्ट औषधिया उन्हीं की मौजूदगी मे तय्यार होती हैं।

(४) बनस्पति संग्रहालय विभाग—इस विभाग मे बहुत से प्रकार की दुष्प्राप्य जड़ी बूटियो तथा खनिज द्रव्यो का स्टॉक रहता है जो संस्था ने बड़े बड़े जंगलो तथा पहाडों मे प्रचुर धन व्यय करके सर्व साधारण की सुगमता के लिये विशेष परिमाण मे संग्रह किये हुए हैं।

(५) चिकित्सा तथा रोग निर्णय विभाग—यहाँ रुग्ण व्यक्तियो की चिकित्सा होती है। बाहर से चिकित्सार्थ आये हुए व्यक्तियो का उनकी स्थिति अनुसार उचित व्यय पर विशुद्ध भोजन तथा स्वच्छ निवास स्थान का प्रबन्ध भी इसी विभाग द्वारा किया जाता है। आउटवार्ड रोगियो के लिये प्रातः ६ से १० तथा साय ४ से ८ बजे तक स्वयं संस्थाध्यक्ष राजवैद्य श्री महावीर प्रसाद जी रसायन शास्त्री परामर्श देने के लिय पधारते हैं। केवल रोग निर्णय के लिये वैद्य जी से परामर्श करने की ४) फीस देनी पडती है। वैद्य जी को बाहर बुलाने के नियम आगे देखे।

(६) पुस्तक विभाग—इस विभाग द्वारा आयुर्वेदीय तथा अन्य पुस्तकों का प्रकाशन एव बिक्री का कार्य होता है। यदि किसी महानुभाव को किसी अप्रकाशित ग्रन्थ के प्रकाशन करवाने की अथवा किसी प्रकाशित वैद्यक ग्रन्थ की आवश्यकता हो हमारे पुस्तक विभाग के मैनेजर को लिखे।

सब औषधियां बड़े पैमाने पर तय्यार कराने से लागत कम बैठती है इसीलिये बहुत सस्ते मूल्य पर बेची जाती हैं बड़े बड़े वैद्य, हकीम, राजे महाराजे, नवाब, ताल्लुके दार जमीन्दार, रईस व साधारण जन हमारे यहां से औषध मंगाकर व्यवहार मे लाते हैं और नित्य अतीव गुणकारी पाते है, सब ने हमारी औषधियो की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है, जिनके अनेको प्रमाण पत्र हमारे पास मौजूद हैं।

वैद्यजी का परिचय

पाठक गण ! चिकित्सा कराने से पहिले रोगी के लिये यह जान लेना अत्यावश्यक है कि चिकित्सक कितने कार्य कुशल तथा अनुभवी है, उनकी कितनी योग्यता है, वैद्यक व्यवसाय उनका नूतन है या प्राचीन, क्योंकि रोगी के जीवन मरण का उत्तर दायित्व प्राय वैद्य के उपर ही निर्भर है।

चरक संहिता में एक स्थान पर लिखा है —

प्रयोग ज्ञान विज्ञान सिद्धिसिद्धाः सुखप्रदाः।
जीविताभिसरायेस्युर्वैद्यत्व तेष्ववस्थितम् ॥

(चरक)

अर्थात्—जो चिकित्सक विचार पूर्वक औषध का प्रयोग करना शास्त्र ज्ञानविज्ञान (कर्म दर्शन अन्य शास्त्रो का ज्ञान अन्य चिकित्सापद्धतियो का ज्ञान) एवं चिकित्सा की सफलता से प्रसिद्ध हो तथा सुख (आरोग्य) के देने वाला हो वही वैद्य प्राणो का देने वाला है।

इस विषय में हमारा निवेदन है कि बृहत् आयुर्वेदीय औषध भाण्डार के संचालक महोदय खानदानी वैद्य हैं, चिकित्सा कार्य आपके वंश में नवीन नही प्रत्युत २२ पुश्त से चला आरहा है इसी लिये आपको शास्त्रीय सिद्ध प्रयोगो के अतिरिक्त अपने वंश परम्परागत शतशोनुभूत प्रयोगों का भी विशेष ज्ञान है। आपके पिता श्री पूज्य राजवैद्य शीतल प्रसाद जी रसायन शास्त्री एक बड़े यशस्वी वैद्य होगये हैं न केवल देहली की जनता ही वरन् देश-देशान्तर की जनता तक आपके नाम व गुणों से भली प्रकार परिचित है—आज तक उन्हे जीवन का देवता कहकर पुकारा जाता है। यह बात प्रसिद्ध थी कि यदि किसी मरणासन्न रोगी के कुटुम्बी वैद्य जी को रोगी को देखने के लिये बुलाने आते और वैद्य जी उस समय न मिलते, उन्हे विश्वास हो जाता था कि रोगी नहीं बचेगा और यदि मिल जाते तो रोगी का शुभ कर्म मानते। विशेष क्या कहना रोग निर्णय के लिये रोगी की कठिन अवस्था के समय एकत्रित हुए स्थानीय वैद्य और डाक्टर महोदय भी आपकी तात्कालिक गम्भीर गवेषणा पूर्ण रोग विवेचना पर मुग्ध थे आपकी प्रत्युत्पन्नमति सराहनीय थी। सारे भारत वर्ष मे दूर दूर तक के मनुष्य आपके द्वारा चिकित्सा कराते थे। इन ही श्री वैद्यजी के निरीक्षण मे रहकर इनके सुयोग्य पुत्र रसायन शास्त्री वैद्यराज श्री महावीर प्रसाद जी ने आयुर्वेद शास्त्र का अध्ययन व चिकित्सा क्रम प्राच्य प्रतीच्य मतानुसार सीख कर अपनी असाधारण कार्य कुशलता का परिचय दिया है। हमारे

औषधालय की सेवा से सर्व साधारण जनता प्रसन्न है। बाहर के रोगियों की चिकित्सा पत्र व्यवहार द्वारा रोग निर्णय करके औषध भेजकर की जाती है। ऐसे रोगियों को पत्र व्यवहार करते समय इसी सूची पत्र में लिखित प्रश्नों के उत्तर देते हुए पत्र लिखना चाहिये।

धर्मार्थ औषधालय

आपने अपने निवास स्थान पहाड़ी धीरज पर एक धर्मार्थ औषधालय भी खोला हुआ है जहाँ असहाय निर्धन जनता को औषध मुफ्त दी जाती है, आवश्यकता पड़ने पर उनके घर जाकर भी मुफ्त देखा जाता है।

आपसे साग्रह निवेदन है कि आवश्यकता होने पर आप भी हमारी सेवाओं से लाभ उठाकर हमें कृतार्थ करें तथा भारतीय प्राचीन चिकित्सा प्रणाली की उत्तरोत्तर उन्नति करने में हमें प्रोत्साहन देंगे। एक बार ही परीक्षा करने पर आप हमारी औषधों पर मुग्ध होजावेंगे।

आपका हितेच्छु—

—प्रबन्धकर्ता

व्यापारिक नियम

१. इस से पूर्व के सूचीपत्रों में लिखित भावों पर औषध भेजने के लिये आग्रह नहीं करना चाहिये।

२. आर्डर आने पर यदि औषध स्टौक में तय्यार होती है तो तुरन्त भेजदी जाती है, अगर खतम होगई हो तो शीघ्रातिशीघ्र तय्यार कराकर भेजने की कोशिश की जाती है।

३. उधार का व्यवहार नहीं है।

४. औषधें मंगाने का आर्डर अच्छी प्रकार सोच समझ कर भेजना चाहिये क्योंकि पत्र पाते ही शीघ्रातिशीघ्र पार्सल भेज दिया जाता है। वी० पी० लौटाकर संस्था को हानि न पहुंचावें।

५. आर्डर देते समय हर बार अपना नाम व पत्र पहुंचने का पूरा पता साफ साफ अक्षरों में लिखना चाहिये।

६. हिन्दी, उर्दू या अंगरेजी में पत्र व्यवहार करना चाहिए।

७. यदि पार्सल रेल्वे से मंगाना हो तो लिखें कि मालगाड़ी से भेजा जाय या सवारी से। रेल से माल मंगाने वाले व्यक्तियों को औषध का कम से कम ¼ मूल्य पेशगी भेजना चाहिये बाकी मूल्य वी० पी० से वसूल करलिया जायेगा। अपने नजदीकी रेल्वे स्टेशन का नाम मय उसकी लाइन के सुपाठ्य अक्षरों में लिखें।

८. १०) या इस से अधिक मूल्य की औषध मंगाने वाले सज्जनों को कम से कम ¼ मूल्य पेशगी भेजना चाहिये तथा पार्सल का वजन सेर भर से ऊपर हो जाने पर भी यही नियम लागू होता है।

९. आसव, अरिष्ट, तैल, घृत, पाक इत्यादि भारी वस्तुएं रेल्वे से भेजी जाती हैं, डाक से भेजने पर व्यय अधिक लगता है, जिन सज्जनों को डाक से ही मंगाने मे सुविधा हो उन्हे डाक से भी भेजी जा सकती है।

१०. यदि वी० पी० पहुंचने पर किसी प्रकार का सन्देह हो वी० पी० छुड़ाकर या डाक खाने में डिपोजिट रखकर संस्था से पत्र व्यवहार करें, वी० पी० लौटाकर संस्था को हानि न पहुंचावें, भूल चूक लेनी देनी व्यापारिक नियम है सर्वदा ठीक हो सकती है। डाकखाने मे वी० पी० अधिक से अधिक ७ दिन तक ही डिपोजिट रखा जा सकता है।

११. हमारे यहाँ से सब पार्सल भली प्रकार पुख्ता पैक करके भेजे जाते हैं, रास्ते की टूट फूट की संस्था उत्तरदायी न होगी।

१२. १) से कम की वी० पी० नहीं भेजी जाती ऐसे सज्जनों को औषध का मूल्य पोस्टेज व्यय सहित पेशगी भेजना चाहिये।

१३. रुपया, हुंडी, मनिआर्डर, बैंक चैक या ब्रिटिश पोस्टल द्वारा भेज सक्ते है।

१४. पत्र व्यवहार करते समय उत्तर के लिये ~) का टिकट भेजना चाहिये।

१५. सूचीपत्र मे औषधियो के मूल्य जिस परिमाणानुसार दिये हुए हैं उस परिमाण से कम औषध मंगाने वालों को उसकी अपेक्षा कुछ अधिक मूल्य देना पड़ता है।

१६. संस्था से पत्र व्यवहार करते समय कृपया हमारे अंतिम पत्र का नम्बर व तारीख लिखना न भूले नहीं तो उत्तर मे देर होजाने की संभावना है।

१७. वी० पी० लौटाने की अवस्था में दोबारा औषध तब तक नहीं भेजी जाती जब तक औषध का पूरा मूल्य उसके भेजने के व्यय सहित पेशगी प्राप्त नहो।

१८. ग्राहकों को ध्यान रखना चाहिये कि डाक खाना वी० पी० की रक़म के अतिरिक्त पार्सल देते समय मनिआर्डर की कमीशन अलग चार्ज करता है, जो डाक खाने में रहती है।

१९. डाक, पैकिंग, रेल्वे खर्च, मजदूरी या किसी प्रकार की कस्टम ड्यूटी सब ग्राहकों को देनी पड़ती है।

२०. हिन्दुस्तान, बर्मा, पर्शियनगल्फ, अदन, सीलोन, फिजी आइलैन्ड्स को छोड़कर अन्य देशों के ग्राहकों को रकम आर्डर के साथ ही पोस्टेज सहित भेजदेनी चाहिये, क्योंकि वहाँ वी० पी० नहीं जाती इसलिये वहाँ मूल्य आये बिना माल नहीं भेजा जाता।

२१. फरमायिशी नुस्खेजात भी तय्यार कराकर भेजे जासकते हैं जिन की आधी कीमत पेशगी आने पर ही आज्ञा का पालन किया जा सकेगा, पहिले नुस्खा भेजकर पत्र द्वारा मूल्य मालूम करलेना चाहिये।

२२. देहली में १ सेर का वजन ८० तोला (८० रुपये भर) होता है इसी वजन से सब औषधियाँ भेजी जाती हैं।

२३. चैक, हुँडी, पोस्टल आर्डर इत्यादि सब निम्न पते पर भेजना चाहियेः—

राज वैद्य महावीर प्रसाद रसायन शास्त्री,
प्रोप्राइटर—बृहत् आयुर्वेदीय औषध भाण्डार
चान्दनी चौक, देहली।

२४. अपनी दवाओं के स्टाकिस्टों से हम सरबन्द औषधियाँ वापस करलेते हैं और उनके स्थान पर दूसरी भेज देते हैं।

कमीशन नियम

एजेन्सीज के तरीके से हमे अनेक प्रकार की हानि व कष्ट पहुँचने के कारण हमने इस तरीके को बिल्कुल बन्द कर दिया है और हिन्दुस्तान, बर्मा तथा दूसरे मुल्कों में जहाँ जहाँ हमारी एजेन्सीज थीं सब हटाली गई है। जो सज्जन हमारी औषधियों का स्टौक रखना चाहते है रख सकते है। सब औषधें कमीशन काटकर वी० पी० से ही भेजी जासकेंगी। उन व्यक्तियों की आज्ञानुसार जो हमारी औषधियों का स्टौक रखते है, माल ग्राहकों को भेजा जाता है परन्तु उसको कमीशन उन्हे उसी दशा में मिलती है जब पार्सल का रुपया संस्था को प्राप्त हो जाता है। कमीशन नियम निम्न प्रकार है —

१ थोक माल के ग्राहकों चिकित्सकों, धर्मार्थ संस्थाओं तथा औषध विक्रेताओं को ही कमीशन दी जासकेगी।

२ थोक माल के ग्राहकों को १५) से कम के माल पर कोई कमीशन न दी जासकेगी।

३ औषधियों पर अधिक से अधिक २५ प्रतिशत तक कमीशन का नियम है जो निम्न प्रकार व्यवहार मे लाया जायेगा। ये नियम शास्त्रीय औषधों पर है।

कम से कम	१५)	के माल पर	६¼ प्रतिशत
,, ,, ,,	५०)	,, ,,	१२½ ,,
,, ,, ,,	५००)	,, ,,	२५ ,,

४. यदि ४००) से अधिक का माल मगाना हो, चिकित्सकों, धर्मार्थ संस्थाओं तथा औषध विक्रेताओं को पत्र व्यवहार करना चाहिये।

५. ४००) के माल का पहिला आर्डर देने वाले सज्जनों को संस्था का स्थायी ग्राहक समझा जायगा। दूसरी बार छोटी से छोटी रकम के आर्डर पर भी कमीशन मिलेगा जिस दर से ४००) के आर्डर पर दिया जाता है।

६. सोना, मोती, हीरा, पन्ना आदि जवाहरात, इनकी पिष्टी तथा भस्म एवं, कस्तूरी केशर गोरोचन, आदि वस्तुओं पर कोई कमीशन न दिया जा सकेगा।

७. पेटेन्ट औषधियों पर कमीशन नियम इस प्रकार है —

१५) के माल पर	६$\frac{1}{4}$ प्रतिशत
४०) ,, ,, ,,	१२$\frac{1}{2}$ प्रतिशत
४००) ,, ,, ,,	२५ प्रतिशत

८. उन व्यक्तियों के लिये जो ४००) के माल का आर्डर देंगे, नियम नं० ३ और नं० ५ के अनुसार कमीशन दी जायगी। विशेष रियायत यह होगी कि इस मूल्य का माल वे ३ मास के अन्दर थोड़ा थोड़ा करके मंगा सकते हैं। कमीशन पूरा माल मंगा चुकने के पश्चात ही दी जायगी।

९. हमारे द्वारा तय्यार की हुई प्रत्येक औषध पर हमारा ट्रेड मार्क तथा लेबिल लगा हुआ होता है, ग्राहकों को माल लेने से पूर्व हमारे बृहत आयुर्वेदीय औषध भाण्डार का नाम भली प्रकार देख लेना चाहिये।

रोग निर्णय के लिये कुछ प्रश्न जिनका ठीक २ उत्तर भेजना चाहिये।

बहुतसी बार ऐसा होता है कि रोगी अपने रोग का ठीक ठीक निश्चय नहीं कर सकता, बहुत से मनुष्य अपने रोग को कुछ का कुछ समझ कर औषध मगा लेते हैं फिर निराश होना पडता है। संस्था ने उनके रोग का ठीक ठीक निश्चय करने के लिये रोग निर्णय विभाग खोला हुआ है। रोगी घर बैठे पत्र द्वारा रोग निश्चय कराकर औषध सेवन करके आरोग्य लाभ कर सकता है। जो व्यक्ति अपने रोग के विषय में वैद्यजी का केवल परामर्श ही लेना चाहते हैं उनसे ४) फीस ली जाती है जो व्यवस्था पत्र के साथ ही मनिआर्डर द्वारा भेजनी चाहिये। रोग विषयक सब पत्र व्यवहार गुप्त रखा जाता है। रोग निर्णय के लिये हमने यहाँ कुछ प्रश्न दिये हैं जिनका बिल्कुल ठीक उत्तर भेजने चाहिएँ।

१. आपकी आयु कितनी है ?
२. व्यवसाय क्या है ?
३. विवाहित है या अविवाहित ?
४. आपको क्या क्या मुख्य पीड़ायें प्रतीत होती है ?
५. रोग कब से है और इस समय उसकी क्या दशा है ?
६. विवाह किस आयु मे हुआ, कोई सन्तान यदि हो तो लिखे ?
७. आपके परिवार में माता, पिता, भाई, बहिन का स्वास्थ्य कैसा है उनमेंसे किसी को यदि कोई रोग हुआ हो या हो सूचित करें ?

८. आपको अपने जीवन में शुरू से अब तक अन्य क्या क्या रोग हुए और वे किस प्रकार शान्त हुए। उन रोगों के शान्त होने के पश्चात् शारीरिक स्वास्थ्य पर कैसा प्रभाव पड़ा—पूर्णतया लिखें ?

९. आपका शारिरीक बल कैसा है ? कोई व्यायाम करते है क्या ?

१०. आपके निवास स्थान का जलवायु कैसा है ? उसके आस पास कोई गन्दगी या मच्छर वग़ैरह के स्थान, गन्दे पानी के गढ़े व जोहड़, तालाब आदि तो नहीं हैं ?

११. आपका स्वभाव क्रोधी तो नहीं है ?

१२. कोष्ठबद्धता तो नहीं रहती ?

१३. यदि किसी वैद्य हकीम, डाक्टर से चिकित्सा कराई हो उसका क्या फल रहा ?

१४. शराब, भंग, हुक्का, बीड़ी, सिग्रेट, चरस, सुल्फा, कहवा, चाय आदि मादक वस्तुओं मे से यदि कोई पीते हो तो लिखें ?

१५. भोजन मे प्राय: क्या क्या वस्तुएँ सम्मिलित होती है ? क्या मांस खाते हैं ?

१६. आपकी दैनिक दिनचर्या (Daily Programme) क्या है ?

१७. मल, मूत्र, रक्त, पीप, कफ इत्यादि यदि कोई टैस्ट कराया हो उसका परीक्षा फल भेजें ?

१८. यदि रोगी महिला हो लिखें श्वेतप्रदर (सफेदा जाना) तो नहीं है ?

१९. नीन्द का क्या हाल है ?

२०. और जो कुछ बातें लिखना चाहें लिखें।

कुछ ध्यान देने योग्य बातें

१. चिकित्सकों को चाहिये कि जिन औषधियों में मीठे विष का सम्मिश्रण हो उन्हें बहुत छोटे बच्चों, वृद्ध मनुष्यों, गर्भा स्त्रियों, हृद्रोगों से पीड़ित तथा अत्यन्त दुर्बल शरीर व्यक्तियों को न दें।

२. रेचक औषधें जिनमें जमालगोटा का सम्मिश्रण हो, गर्भा स्त्रियों, बहुत छोटे बच्चों वृद्ध, अति निर्बल एवं संग्रहणी से पीड़ित व्यक्तियों को न दें।

३. औषधें जिनमें अफीम का सम्मिश्रण हो छोटे बच्चों, कोष्ठ-बद्धता तथा पेट के अफारे से पीड़ित व्यक्तियों को नहीं देनी चाहियें।

४. औषध की दूसरी खूराक उसी समय देनी चाहिये जब पहिली खूराक दिये कम से कम ३ घन्टे व्यतीत हो जावें।

५. यदि छोटी खूराक से कुछ विशेष लाभ न हो, थोड़ी अधिक कर सकते हैं परन्तु उचित से अधिक (Over dose) न होनी चाहिये।

६. हमारी औषधियाँ, उनके जो जो गुण लिखे गये हैं तथा जिन जिन रोगों में वे लाभ करती हैं, तत्काल गुण करती

हैं, इसलिये औषध सेवन करने से पूर्व प्रत्येक रोग का निर्णय बिल्कुल ठीक व पूर्णतया करलेना चाहिये ताकि औषध लेने मे भूल न हो। बाज़ दफ़ा ऐसा होता है कि रोगी औषध तो सेवन करता है परन्तु अपने रोग को यथार्थ नहीं समझता, (औषध जिस रोग के लिये वह है अपना गुण करती है) रोगी को किंचित भी मालूम नहीं देता क्योंकि उसे रोग ही दूसरा होता है दवाई वह किसी अन्य रोग की खा रहा है। इस नासमझी मे रोगी औषध का निर्गुण समझ बैठता है अपनी नासमझी की ओर ध्यान तक नहीं देता। इसलिये ये अत्यन्त आवश्यक है कि दवा सेवन करने से पूर्व किसी योग्य चिकित्सक द्वारा अपने रोग का ठीक ठीक निश्चय कराले तत्पश्चात् औषध खावे।

७. जो औषधि पीस कर काम मे लीजाये उनको पीसने के लिये उत्तम मजबूत खरल होनी चाहिये ताकि औषध नष्ट न हो और खरल का पत्थर घिसकर औषध मे न मिल जाय। इस कष्ट से बचने के लिये हमने ग्राहकों के लिये पिसी हुई औषधे विक्रयार्थ रखने का भी प्रबन्ध किया हुआ है। इस लिये औषध भेजने का आर्डर देते समय ये अवश्य लिखना चाहिये कि औषध पिसी हुई भेजी जाय या बेपिसी।

८. मात्राये जो हमने अपने इस सूचीपत्र में दी हैं वे सब पूरी आयु यानी १६ वर्ष या अधिक वालों के लिये ही हैं, कम

आयु, बालकों तथा बहुत छोटे बच्चों के लिये आयु के अनुसार कम कर देनी चाहिये।

शास्त्र संकेत चिन्ह

र० रा० सु०	—	रस राज सुन्दर
भै० र०	—	भैषज्य रत्नावली
यो० चि०	—	योग चिन्तामणी
भा० भै० र०	—	भारत भैषज्य रत्नाकर
र० सा०	—	रसायन सार
भा० प्र०	—	भाव प्रकाश
आ० का०	—	आयुर्वेद कालानिधि
च० सं०	—	चरक संहिता
नि० र०	—	निघन्टु रत्नाकर
यो० र०	—	योग रत्नाकर
र० र० स०	—	रस रत्न समुच्चय
र० सा० सं०	—	रसेन्द्र सार० संग्रह
र० यो० सा०	—	रस योग सागर
र० त०	—	रस तरंगिनी
शा० सं०	—	शारंगधर संहिता
वै० जी०	—	वैद्य जीवन

हमारी परम्परागत व हजारों बार की अनुभूत

कुछ पेटेन्ट औषधियां

पुरुषों के लिये

रसायन वटी

(रजिस्टर्ड)

(श्री कामदेव रसायन की सुनहरी गोलियां)

यह गोलियाँ सोना, मोती-अम्बर आदि अनेक बहुगुण व बहुमूल्य औषधियों और कई एक जड़ी बूटियों के रसों के मिश्रण से बड़ी मेहनत से तैय्यार की जाती हैं। इनके सेवन से हाज़्मा तेज हो जाता है, भूख खूब लगती है, जो कुछ खाया जाता है शरीर में लगता है, नया शुद्ध खून पैदा होकर शरीर सुर्ख सुन्दर, तेजस्वी बन जाता है। स्नायविक दुर्बलता दूर होकर शरीर गठीला, फुर्तीला, सुडौल और ताकतवर बन जाता है। ये गोलियां वीर्य के दोषों को दूर कर उसे उत्पन्न व पुष्ट करती हैं व सन्तानोत्पत्ति के योग्य बनाती हैं, हस्तमैथुनादि अनुचित कार्यों और दुर्व्यवहारों से असमय में ही जिन्होंने अपने वीर्य और शक्ति को नष्ट कर लिया है उनके लिये यह गोलियां नई जिन्दगी देने का काम करती हैं। इनके सेवन से मस्तिष्क शक्ति बढ़ जाती है—याददाश्त तेज हो जाती है, आँखों की रोशनी को भी तेज करती व क़ायम करती हैं। इन गोलियों में किसी के धर्म के विरुद्ध कोई वस्तु नहीं है। हर मौसम में सेवन की जा सकती हैं। मू० ४८ गोलियों की शीशी २) रुपया तीन शीशियों का ५) डाक व्ययादि ।।=)

सेवन विधि शीशी के साथ है।

सिद्ध सालब पाक रसायन

(रजिस्टर्ड)

यह रसायन वीर्य सम्बन्धी सब दोषों को दूर करके उसे शुद्ध पुष्ट एवं सन्तानोत्पत्ति के योग्य अमोघ बना देता है। धातु दौर्बल्य रोग से आक्रान्त होकर जिन मनुष्यों के रस, रक्त, मांस शुक्रादि सम्पूर्ण धातु क्षीण हो गये हैं तथा वीर्य के पतला होने से, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, इन्द्रिय की शिथिलता, पुरुषत्वहानि, अधिक शुक्रपात तथा ध्वजभङ्गादि रोगों के कारण इन्द्रिय-सुख रहित वंशलोप की आशंका से समय व्यतीत कर रहे हैं, उन्हें इस रसायन का सेवन करना संसार सुख एवं सन्तानोत्पत्ति के लिये अतीव सुखकारी होगा। यह दैवी औषधि वृद्ध पुरुषों को भी युवा के तुल्य शक्तिमान् बना देती है, दिमाग़ को बड़ी ताकत देती है। इस कारण उन लोगों के लिये जिन्हें दिमाग़ी काम करना होता है, जजों, बैरिस्टरों, वकीलों, मास्टरों, कवियों, विद्यार्थियों, क्लर्कों एवं पत्रसम्पादकों, व्याख्यानदाताओं आदि को बड़ी सुखकारी वस्तु है। हर तरह की निर्बलता को दूर करने वाली एक उत्तम स्वादिष्ट अनुपम खूराक है। मूल्य एक सेर ५) रु० डाक व्ययादि १), १ पाव का डिब्बा २) रु०, डाक व्ययादि ।।=) आना।

सेवन विधि:—१—१ तोला सांय प्रातः गोदुग्ध से

स्वप्नदोष नाशक वटी

ये गोलियां स्वप्नदोष (बद ख्वाबी) के रोगियों के लिये अमृत तुल्य गुणकारी हैं, इनके थोड़े ही दिन के सेवन से ख्वाब में बिगड़ना, धातु का पतलापन, बहुत जल्द दूर होकर शरीर

दृष्ट, पुष्ट, शक्तिशाली बन जाता है मूल्य २४ गोलियों की शीशी १), ३ शीशियों का २॥) डाक व्ययादि ॥-)।

सेवन विधिः—२ गोलियाँ रात सोते समय जल से निगल जाएँ

प्रियामन मोहिनी गुटिका

इसका नाम ही इसके गुणों को प्रकट करने के लिये काफी है, विशेष लिखने की आवश्यकता नहीं इसलिये यदि आप अपनी प्रिया को अपने ऊपर मुग्ध करना चाहते हैं, तो अवश्य ही इन गोलियों को मंगाकर इनका चमत्कार देखिये। आपका हृदय समुद्र की तरह लहरें मारने लगेगा, आप मस्त हो जायेंगे।

मूल्य ८ गोलियों की शीशी १), ३ शीशियाँ २॥) डाक व्ययादि ॥-)।

सेवन विधिः—१ गोली सम्भोग से १ घन्टे पूर्व दुग्ध से निगल जाएँ। ऊपर से पान का बीड़ा चबाएं।

कामिनी मान मर्दन

(रजिस्टर्ड)

यह एक अत्यन्त रुकावट करने वाली, उत्तेजक, अपूर्व शक्तिवर्धक एक खास चीज है, जिसके चमत्कारिक गुणों का वर्णन करने की सभ्यता आज्ञा नहीं देती। बस इस लिये पत्र व्यवहार से ही इसके अजीब गुणों को मालूम करें।

मूल्य १ मात्रा १) रु० डाक व्ययादि ॥-)।

सेवन विधिः—स्त्री सम्भोग से २ घन्टे पूर्व दुग्ध के साथ लेवें ऊपर पान खाना चाहिये बीच में कोई भोजन नहीं लेना चाहिये इच्छा हो तो दुग्ध ले सक्ते हैं।

अजीबोग़रीब तिला

बचपन की खराब आदतों, युवावस्था की अत्यन्त विषय वासना, व हस्तमैथुन इत्यादि से जो इन्द्रिय छोटी, पतली टेढ़ी और दुर्बल हो जाती है इसको थोड़े ही दिन लगाने से यह सब शिकायतें बहुत जल्द दूर होकर लिंगेन्द्रिय दीर्घ स्थूल और दृढ़ हो जाती है, और मैथुन शक्ति प्रबल होकर पुरुष सन्तानोत्पत्ति के योग्य हो जाता है इससे किसी प्रकार की हानि नहीं होती, और न छाला वगैरा ही पड़ता है। मूल्य १ शीशी २) छोटी शीशी १।) बड़ी तीन शीशियाँ ५) डाक व्यय आदि ।।=)।
सेवन विधि पत्र साथ मिलेगा।

सिद्ध कस्तूरी रसायन तिला

(रजिस्टर्ड)

यह एक प्रकार का सुगन्धित तेल है जो अनेक बहुमूल्य औषधियों द्वारा बड़ी मेहनत से तैयार किया जाता है, इसकी पूरी २ तारीफ करने के लिये सभ्यता आज्ञा नहीं देती इसलिये केवल इतना ही बतादेना पर्याप्त होगा कि इस की मालिश से लिंगेन्द्रिय की दुर्बलता, शिथिलता छोटापन, टेढ़ापन व पतलापन दूर होकर इन्द्रिय में दृढ़ता स्थूलता और दीर्घता आजाती है, जिससे कि वृद्ध मनुष्य भी युवा के समान आनन्द प्राप्त कर सकता है। सन्तानोत्पत्ति तथा गृहस्थ सुख से वंचित (महरूम) हुए अनेक पुरुषों ने इससे आशातीत लाभ प्राप्त करके इस दिव्यौषधि की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। मूल्य प्रति तो० १०। ३ माशे की शीशी २।।) डाक व्ययादि ।।=)।
सेवन विधि पत्र साथ मिलेगा।

नस ढीली की पोटलियाँ

जिन पुरुषों ने हस्तमैथुन, प्रकृति विरुद्ध मैथुन, अकाल मैथुन और अति मैथुन से लिंगेन्द्रिय को बेकार कर लिया है, उन मनुष्यों को इन पोटलियों की एक हफ्ते तक सेक करने से लिंग में कैसा ही ढीलापन और सुस्ती व कमजोरी हो निहायत ताकत आजाती है। बूढ़े को भी मानिन्द जवान के कर देती है। मूल्य १४ पोटलियों की जो एक सप्ताह के लिये काफी है सिर्फ ३) है। डाक व्ययादि ।।=) सेवन विधि पत्र साथ मिलेगा।

आनन्द वर्धक तैल

यह एक अद्भुत तैल बड़ी २ क़ीमती दवाओं के मिश्रण से खास तौर पर बनाया जाता है। इसको अपनी प्रिया से आलिंगन करने के ५-७ मिनट पहिले लिंगेन्द्रिय पर लगाया जाता है जिससे कि बिलकुल बेकार मुर्दा लिंगेन्द्रिय में भी चैतन्यता (ताज़गी) और दृढ़ता आजाती है। परस्पर इतना प्रेम हो जाता है जिसका बयान नहीं किया जा सकता. बस इसके सेवन से ही इसकी खूबियाँ मालूम हो सकती है। यह चीज़ बड़े २ रईसों राजाओं के सेवन करने योग्य है। प्रति शीशी ५) डाक व्ययादि ।।=)

श्री कामदेव तैल

(रजिस्टर्ड)

यह कस्तूरी, केशर आदि अनेक प्रकार के बहुमूल्य सुगन्धित द्रव्यों से खास तौर पर बड़े परिश्रम से तैयार कराया हुआ हमारे यहाँ का परम्परागत एक सिद्ध तैल है, जो कि इतना खुशबूदार और सुन्दर है कि मनुष्य इसकी गन्ध से ही मस्त और प्रफुल्लित

हो जाता है। जब शरीर की वायु बढ़कर मांस तन्तुओं के मुखों को संकुचित कर भली प्रकार रक्त सचार नहीं होने देती जिस से कि शरीर की पुष्टि में भी रुकावट पहुँच कर शरीर कृश हो जाता है, ऐसी अवस्था मे इस सुगन्धित तैल की प्रतिदिन मालिश कराने से सर्व प्रकार के वात पित्तादि रोग दूर हो कर शरीर कामदेव के समान सुन्दर सुडौल पुष्ट और तेजस्वी बन जाता है। मूल्य एक पौंड ४) आधा पौंड का २।।) रु० । डाक व्ययादि १≤) व ॥−) क्रमशः

सिद्ध तैल

इस तैल को यदि मैथुन के बाद इन्द्री पर मालिश कर दिया करे तो कभी निर्बलता नहीं होती बल्कि वृद्धि ही होती है। मूल्य २) मुद्दतों के लिये काफी है। डाक व्ययादि ॥−)

स्त्रियों के लिये

प्रदरान्तक वटी

(योनि मार्ग से सफेद के गिरने को रोकने की लाजवाब दवा)

स्त्रियों के लिये यह व्याधि निहायत ही खौफनाक है। परन्तु वे इस रोग को शर्म के कारण नही बताती। इस रोग के रहते हुए प्राय स्त्रियाँ गर्भ धारण नही कर सकतीं। रोज़ ब रोज़ निर्बल होती जाती है। कमर और पट्ठो में हमेशा दर्द सा रहता है. भूक मर जाती है चेहरे का रग फीका सा हो जाता है। धीरे २ दुबलापन आजाता है, अन्त में तपेदिक होकर स्त्री की मृत्यु तक हो जाती है। ऐसी हालत देखकर उसके पति को चाहिये कि हमारे औषधालय से अपनी प्राण प्रिया को प्रदरान्तक वटी मंगाकर

फौरन सेवन करावे। इस के १ मास के इस्तेमाल से प्रदर बन्द हो जायगा और स्त्री तन्दरुस्त और ताक़तवर हो जायेगी। ६० गोलियों का पैकट मूल्य ३॥) डाक व्ययादि ।।=) आना।

हेम पुष्पा

(रजिस्टर्ड)

यह बहुतसी जड़ी बूटियों का तरल सार है स्त्रियों के प्राय सब ही गुप्त रोगों में अमृत के तुल्य गुण करता है। श्वेत प्रदर, रक्त प्रदर असृग्दर, रजोलोप, अल्परज, रजोरोध, ऋतुकष्ट हिस्टीरिया आ द रोगों को जादू की तरह नष्ट करता है। गर्भाशय को सबल कर सन्तानोत्पत्ति के योग्य बनाता है, कोमल से कोमल मन वाली स्त्रियाँ भी इसे आसानी से पीलेती है क्योंकि पीने में स्वादिष्ट है। हर मौसम मे सेवन योग्य है। मूल्य प्रति शीशी १।) बड़ी शीशी ३) डाक व्ययादि ।।=) व १=) सेवन विधि पत्र साथ मिलेगा।

सौभाग्य वटी

प्राय. स्त्रियों को मासिकधर्म के समय नलों मे सख्त दर्द हुआ करता है। जिस से वह घबरा घबरा उठती हैं। माहवारी बहुत कम या बिलकुल नहीं होती या माहवारी के दिन बीतने के पश्चात् मात्रा से बहुत अधिक हो जाती है और कई २ रोज़ तक जारी रहती है। इस तरह की व्याधियां गर्भ नहीं होने देतीं, या गर्भ गिराने वाली होती है। इस बीमारी से छुटकारा पाने के लिये हमारे यहाँ की तैयार की हुई सौभाग्यवटी मासिक धर्म से एक सप्ताह पहले सेवन करनी चाहियें। यदि दर्द के समय खाई जावे तो दर्द फौरन बन्द हो जाता है। कैसी

हो पुरानी बीमारी क्यों न हो उपर्युक्त तरीके से ३ मास तक सेवन कर, पूर्णतया आराम हो जाता है। मूल्य ४८ गोलियों का ६) रु० डाक व्ययादि ॥-) सेवन विधि पत्र साथ मिलेगा।

सिद्ध सुपारी पाक रसायन

(रजिस्टर्ड)

यह दिव्यौषधि ४० बहुमूल्य दवाओं से तैयार होती है। योनी रोगों के दूर करने में इस के समान दूसरी औषधि नहीं है। सहस्रों स्त्रियाँ जो योनि-रोगों की वेदना सहते २ लाचार हो गई थीं जिन्हें गर्भ रहने की आशा ही न रही थी जो स्त्री समाज में लज्जित और दुखित होती थीं. जिन्हें अपनी जिन्दगी भार मालूम होती थी. जो सन्तान के लिये रात दिन कुढ़ती और तरसती थी आज वही सौभाग्यवती देवियाँ हमारे सिद्ध सुपारी पाक रसायन के गुणगान कर रही हैं जिस के सेवन से वे श्वेतप्रदर, रक्तप्रदर, मासिकधर्म. की अनियमितता. बार२ गर्भ का गिरना. बालक हो-होकर मर जाना तथा एक बालक हो कर फिर न होना, दौरे की बीमारी (हिस्टीरिया) शारीरिक निर्बलता दुर्बलता सिर, कमर, नलों का दर्द सिर का घूमना चेहरे का फीकापन आदि अनेक रोगों की यन्त्रणा से छूट कर स्वस्थ और पुष्ट होकर कई २ बालकों की मातायें बन गई हैं। इस के सिवाय जापे की बीमारी, बुढ़ापे की कमजोरी में बड़ी मुफीद है। मू० एक सेर ७) रु०, १ पाव का डिब्बा २) रु० डाक व्ययादि १=) तथा ॥-)

योनि संकोचक

श्वेत प्रदर, अतिमैथुन व अति सन्तानोत्पत्ति या अन्य किसी रोग के कारण योनि ढीली या शिथिल पड जाती है, जिस

से कि रति भोग के समय में आनन्द न आने के कारण स्त्री-पुरुष में परस्पर प्रेम की मात्रा भी कम हो जाती है। ऐसे समय में इस दवा के लगाने मात्र से ही योनि की दुर्गन्धि व प्रदरादि रोग दूर होकर वह स्वाभाविक अवस्था जैसी दृढ़ व संकुचित हो जाती है, जिससे कि दम्पति में पहले से भी अधिक प्रेम उत्पन्न होकर आनन्द और सुख से जीवन व्यतीत होने लगता है मूल्य १) रु० डाक व्ययादि ।।~) सेवन विधी पत्र साथ मिलेगा

कुच कठिन

स्त्रियों की कुचाओं का सुडौल व संगठित रखना भी सौंदर्य वृद्धि का एक प्रधान साधन है। जब ये किसी रोग या आलिङ्गनादि के दुरुपयोग से अथवा दुर्बलता के कारण समय से पूर्व ही ढलक जाती हैं, अर्थात यौवनावस्था मे ही वृद्धा का सा रूप बना देती हैं, ऐसी अवस्था में हमारी यह औषधि लेप मात्र से ही स्तनों के पट्ठों को संकुचित, दृढ़ और सुडौल बना कर सुन्दराकार बनाती है। मूल्य १) डाक व्ययादि ।।-)
सेवन विधि पत्र औषधि के साथ मिलेगा

गर्भ रक्षक

यह औषधि गर्भाशय के अनेक रोगों को दूर कर उसे सबल बनाती है, खास कर उन स्त्रियों के लिये जिनके गर्भ गिर जाते हैं सुधा का काम देती है। गर्भावस्था शुरू होते ही इसका सेवन प्रराम्भ कर दिया जावे और कुछ काल तक जारी रक्खें तो निश्चय ही गर्भ स्थिर होकर सुन्दर बालक समय पर उत्पन्न होगा यदि गर्भ होने से पहले ही इसका ३ सप्ताह इस्तैमाल किया जावे

तो गर्भ गिरने का भय ही नहीं रहता। बडी अद्भुत औषधि है। इसके सेवन से प्राय पुत्र होते हैं। मू० १० तोला २॥) डाक व्ययादि ॥-)

सेवन विधि —६ माशा दवा सुबह गोदुग्ध के साथ खाना।

गर्भा सुखद

(रजिस्टर्ड)

गर्भ की हालत मे प्राय स्त्रियो की अवस्था बड़ी नाजुक और दयनीय हो जाती है। नींद का न आना, सर में दर्द होना दान्तो मे दर्द होना, थूक का अधिक आना, छातियों मे दर्द होना या दुग्ध श्राव होना, खाँसी होना, दिल धड़कना, चक्कर आना, बेहोशी होना, भोजन मे अरुचि, कै होना, (बाज़ दफा तो इतनी कै होती है कि एक घूंट पानी भी हजम नहीं होता), कब्ज़ होना बवासीर होना, दस्त जारी हो जाना, बार बार पेशाब दर्द के साथ आना या बन्द हो जाना, खून पतला पड़ जाना, हाथ पैरो पर सूजन आना, दमकशी होना आदि आदि अनेक तकलीफे सताती हैं, इन सब के लिए हमारी गर्भासुखद पृथक २ अनुपान के साथ अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हुई है, आवश्यकता पडने पर अवश्य आजमाइये। इस से कभी कोई हानि नहीं होती। मूल्य प्रति शीशी २) रु० डाक व्ययादि ॥-)

शीघ्र प्रसव

(प्रसव कष्ट निवारक)

जिस समय बच्चे के पैदा होने मे देर हो रही हो और दर्दों का कष्ट सहन करना पड़ रहा हो या दर्द कभी मन्दे कभी तेज़ होते हों ऐसी अवस्था मे इसकी १ मात्रा लेते ही बिना तकलीफ़ के प्रसव हो जाता है, मानो अन्दर से किसी ने धकेल के निकाल

दिया, हर वैद्य व गृहस्थ को चाहिए इसको अपने पास रक्खे। समय पर बड़ा काम देता है। मूल्य १ शीशी १) डाक व्ययादि ।।=) सेवन विधि पत्र साथ मिलेगा

दुग्ध वर्धक

कभी कभी स्त्रियों के स्तनों में दुग्ध बहुत कम होता है जिससे बच्चे का पेट नहीं भरता ऐसी हालत में हमारा दुग्धवर्धक का सेवन कराना चाहिए। इस से दूध शुद्ध और खूब पैदा होता है मूल्य १ डिब्बे का २) डाक व्ययादि ।।=) आना।

सेवनविधि पत्र साथ मिलेगा।

दुग्ध शोषक

जिन स्त्रियों के स्तनों में दुग्ध का अधिक जोर होने के कारण कष्ट होता है उन्हें इस औषध के लेप मात्र से दूध का जोर कम हो कर कष्ट कम हो जाता है कुछ दिन लगातार लगाने से दुग्ध बिल्कुल सूख भी सकता है मूल्य १ शीशी १) डाक व्ययादि ।।=)

बच्चों के लिये

रत्नगर्भगुटिका (रजिस्टर्ड)

(बच्चों के सूखिया मसान की मुजर्रब दवा)

ये गोलियाँ जवाहर, सोना, अम्बर, मुश्क, शेरनी का दूध और बहुत किस्म की जड़ी बूटियाँ मिलाकर त ~ री जाती है। ४० दिन के खिलाने से, बच्चा कैसा ही सूख गया हो, तन्दरुस्त होकर हृष्ट पुष्ट हो जाता है। ४० दिन के खिलाने और जिस्म पर लगाने की दवा का मूल्य १०) डाक व्ययादि ।।=)

अष्ट मंगल तैल

बच्चे को निहलाने से पहले इस तैल को मलना चाहिये बच्चे के जिस्म पर जिल्दी बीमारी नहीं होगी, शरीर कुन्दन की तरह चमकने लगेगा, बच्चा ताकतवर और सुडौल होगा। सब अंग खूब पुष्ट हो जायेंगे, मस्तिष्क, नेत्र व स्मरण शक्तियां सारी उम्र अच्छी रहेंगी, हम सिफ़ारिश करते हैं कि हर बच्चेवाला इस शीशी को ख़रीद कर फायदा उठावे। कीमत फी शीशी १) डाक व्ययादि ।।=)

शिशु सुखदा वटी

(रजिस्टर्ड)

इन गोलियों के प्राय सेवन करने से बच्चे बिल्कुल तन्दुरुस्त रहते हैं रोगों का भय नहीं रहता और बच्चे मोटे ताज़े, सुन्दर और मजबूत बने रहते है। निहायत अजीब व ग़रीब गोलियाँ हैं मुल्य १०० गोलियों का १।) डाक व्ययादि ।।=)
सेवन विधि १—१ गोली सायं प्रात माता के दुग्ध से या जल से।

कुमार कल्याणक

श्लेष्म नाशक

बच्चों के कफ, खाँसी पसली रोग, बुखार, सुनसुना, जुकाम आदि व्याधियों में निहायत मुफीद है। कीमत एक शीशी ।।) डाक व्ययादि ।।-) सेवन विधि पत्र साथ मिलेगा

सुख विरेचन

इससे बच्चों को दस्त बहुत साफ बिना तकलीफ खुल कर हो जाता है। मू० १ शीशी ।।)

काली खांसी की दवा

यह खाँसी बच्चों को बड़ा कष्ट देती है। खाँसते २ मुंह लाल हो जाता है कै हो जाती है, बच्चा बेहोश हो जाता है, कभी २ कमेड़ा तक आ जाता है। हमारी यह औषधि रामबाण है। कुछ दिन के सेवन से खाँसी बिलकुल जाती रहती है। जहाँ बड़े २ इलाज नाकामयाब रहे है इसने अपना चमत्कार दिखलाया है।

बच्चों के कमेड़े की दवा

कैसे ही जोर से कमेड़े आते हों तीन चार मात्रा औषध लेने से आराम आजाता है। कुछ दिन सायं प्रातः देने से हमेशा के लिये छूट जाता है। मू० १ शीशी ।।) डाक व्ययादि ।।-)

सर्वोपयोगी

ज्वर मुरारि

ये गोलियाँ सब प्रकार के नवीन और प्राचीन तथा बारी से आने वाले ज्वरो को जड़ से दूर कर देती हैं इनके सेवन से भूख और शक्ति दिन प्रति दिन बढ़ती जाती है, चित्त प्रसन्न हो जाता है, मलेरिया के दिनों में स्वस्थ मनुष्य भी १ गोली प्रातःकाल दूध या गरम जल से लेते रहे तो मलेरिया के आक्रमण से बचे रहेंगे, इससे किसी प्रकार खुश्की या गर्मी नहीं होती। मू० २४ गोलियां ।।।) डाक व्ययादि ।।-)

बृहत प्लीह नाशक वटी

(तिल्ली दूर करने की अक्सीर दवा)

यह गोलियां तिल्ली के लिए अमृत समान गुणकारी हैं।

बच्चों की बढ़ी हुई तिल्ली और पेट का बेडौलपना बहुत जल्द दूर होकर भूख बढ़ने लगती है, और शरीर में नवीन रक्त उत्पन्न करके शक्ति देती है।

मू० ४८ गोलियों की शीशी १॥) डाक व्ययादि ॥-)

ज्वर दावानल

(रजिस्टर्ड)

यह दवा सब किस्म के नये पुराने, नौबत में आने वाले बुखारों को जड़ से दूर करने में बेनजीर है। साथ ही बरसों की बढ़ी हुई तिल्ली व जिगर को दफा करने में अक्सीर का काम करती है। कमजोरी व खून की कमी को पूरा करके जिस्म को मजबूत सुर्ख व ताकतवर बना देती है। मू० १ शीशी ॥) १ दर्जन ८) डाक व्ययादि पृथक।

अतिसार नाशक वटी

यह गोलियाँ सब प्रकार के दस्तों की बीमारी में लाभदायक हैं, चाहे दस्तों के साथ आंव या खून भी आता हो—इस से किसी तरह का कष्ट नहीं होता। मूल्य २४ गोली ॥) डाक व्ययादि ॥-)

सिद्ध अर्शोहरि रसायन

(बवासीर की अक्सीर गोलियां)

यह गोलियाँ बवासीर के इलाज में हुक्मी असर रखती हैं बवासीर कितनी ही पुरानी हो, खूनी हो या बादी, क़ब्ज की शिकायतें मस्सों में चीस चबक दर्द आदि इन सबको रफा करके बहुत जल्द बवासीर को जड़ से नष्ट कर देती है। मू० २४ गोलियाँ व मरहम की एक डिबिया २) डाक व्ययादि ॥-)

रक्तार्श विमोचिनी गुटिका

यदि बवासीर का खून बहुत जोर से आ रहा हो तो इन गोलियों का सेवन करना चाहिए। इससे रक्त बहुत जल्द बन्द हो जाता है। २४ गोलियों का दाम १) डाक व्ययादि ।।-)

मरहम बवासीर

इसके लगाने से मस्से और गुदा नरम रहते है दस्त आते समय तकलीफ नहीं होती, मस्सों व गुदा की मे़जिश व जलन और फूलापन जाता रहता है। प्रति शीशी ।।) डाक व्ययादि ।।-)

अग्निमन्दीपनी वटिका

(अजीर्ण का अनुभूत इलाज)

अजीर्ण रोग देखने में तो एक साधारण सा मालूम होता है परन्तु, वास्तव मे यह सब रोगो की जड है। खाने पीने मे असावधानी करने से अक्सर बदहजमी हो जाती है। जिससे कि मुह का मजा खराव, खाने की तरफ रुचि न होना, छाती मे जलन, खट्टी ? डकार, भोजन करने ही दस्त की हाजित होना, पेट मे गड़गड़ाहट का होना, जी मिचलाना, अफारा, दिन प्रतिदिन कमजोरी का बढ़ते जाना इन सब हालतो में हमारी अग्नि सदीपनी वटिका निहायत ही अक्सीर है। चन्दरोज के इस्तेमाल से कुव्वत हाजमा बढ़कर गिजा अच्छी तरह तहलील होने लगती है और आहार रस बन कर शरीर दिन प्रतिदिन मोटा ताजा और बलवान हो जाता है। मू० ४८ गोलियाँ १।।) डाक व्ययादि ।-)

दिव्य विन्दु

(हैजे की मुजर्रबउल मुजर्रब दवा)

यह हमारे दवाखाने की तैयार की हुई जादू असर दवा है

जो करीब २ कुल घरेलू बीमारियों का जो अक्सर बूढ़े, बच्चों और जवानों का होती रहती है, पूरा इलाज है। प्रायः जो बीमारीयां अचानक आक्रमण कर देती हैं—जैसे सब प्रकार के पेट के दर्द, कै, हैजा, अफारा, पेचिश, दौरा, जुकाम, खाँसी, नजला, वगैरह २ इसके इस्तेमाल से फौरन ही दूर हो जाते हैं। यह वह अमृत समान गुणकारी दवा है जिसकी एक बिन्दु गले से उतरते ही फौरन जादू का असर दिखाती है। वबाई (संक्रामक) रोगों में भी निहायत मुफीद है। ताऊन (प्लेग) हैजा, मलेरिया बुखार के जमाने में जरूर इस्तैमाल करनी चाहिए। यह वह दवा है जिसकी हर मनुष्य को घर में और मुसाफिर को अपने साथ रखने की बड़ी जरूरत है। यह दवा दर्द-पसली, दर्द सीना, दर्द दाँत व दाढ़, बदहज़मी, तिल्ली, वमन, हैजा, पेचिश, मरोड़ा, सिर में चक्कर, अम्लपित इत्यादि अनेक रोगों में निहायत मुफीद है। मू० ॥) शीशी. १२ शीशी ५) डाक व्ययादि ॥−)

रक्त रोधक

यह बड़ी ही अजीब दवा है। सब प्रकार के खून बहने को रोकती है चाहे शरीर के किसी भाग से आता हो, नकसीर, रक्तपित्त, बवासीर का खून, पेचिश का खून, रक्त प्रदर, आदि सब को २-३ मात्रा पीते ही बन्द करता है। मू० १ शीशी १) डाक व्ययादि ॥−)

यक्ष्मा (सिल व दिक़)

(Tuberculosis)

इस भयंकर रोग को कौन नहीं जानता, जिससे हिन्दुस्तान में हजारों जानें रोज काल ग्रसित होती रहती हैं। हमारे यहां

इस रोग का मुद्दत से खानदानी इलाज चला आता है, जिससे बेशुमार रोगियों को लाभ पहुँचा और उनकी जानें बच गई हैं। यदि दुर्भाग्य से आप इस रोग में फंस गये हैं या इस के आक्रमण का भय हो गया है तो आप अवश्य इन औषधियों को मंगा कर सेवन करें। आप आश्चर्यजनक लाभ उठायेंगे।

रत्नोपरत्न मिश्रित हेममृगांक	१॥ माशे	मूल्य ४)
महायक्ष्मारि लेह	१० तोला	मूल्य १)
यक्ष्मा सुधा	१ बोतल	मूल्य ॥।)

डाक व्ययादि पृथक।

सेवन विधि व पथ्यापथ्य पत्र औषधियों के साथ मिलेगा।

कांस कुठार वटिका

(खांसी की अक्सीर दवा)

खांसी शुष्क हो या तर दोनों को एक सप्ताह में दूर कर देती है। ४८ गोलियों का पैकट १) डाक व्ययादि ।।−)

सिद्ध श्वास कुठार रसायन

दमा एक खौफनाक मरज़ है इसका मरीज़ प्रति दिन कमज़ोर व दुबला होता जाता है। इस की तकलीफ अक्सर रात को ज्यादा होती है, दौरे के वक्त खांसते २ दम फूल जाता है, पसलियां दुखने लगती हैं। कभी २ दम इतना उखड़ता है कि सांस लेना दुश्वार हो जाता है, मरीज़ घबरा २ कर उठ बैठता है। बदन पसीना २ हो जाता है। इसके सिवा खांसी हमेशा उठती रहती है, और दम सा घुटा रहता है। ऐसी दर्दनाक हालतों में हमारा सिद्ध श्वास कुठार रसायन निहायत ही मुफीद

रहता है। पहिली ही खुराक के सेवन से दमा बिलकुल दब जाता है। दौरे के वक्त दो एक खुराक देने से जादू का सा असर दिखाता है, बलगम आसानी से निकल कर रोगी को चैन पड़ जाता है, इसी तरह कुछ अर्से के इस्तेमाल से दमे की जड़ बिलकुल जाती रहती है। मूल्य ५० गोली ३) डाक व्ययादि ।।-)

कोकिल कंठ

इन गोलियों के सेवन से आवाज का बैठना दूर होजाता है। आवाज को उत्तम बनाने के लिये अजीबोगरीब गोलियाँ हैं। व्याख्यानदाताओं और गवैयों की जान है। मूल्य प्रति शीशी ।) डाक व्ययादि ८ शीशी तक ।।-)

सिद्ध भूतांकुश

यह औषधि पागलपन की अजीबोगरीब दवा है। इसके सेवन से बुरी बुरी हालत के रोगी भी अच्छे हो जाते हैं। मदात्य में भी बेहद मुफीद है मूल्य ।।) डाक व्ययादि चार शीशी तक ।।-)

अपस्मार नाशक

(मृगी की नायाब दवा)

यह मृगी की अक्सीर दवा है, इसके कुछ दिन सेवन करने से यौवनावस्था से पहले की मृगी निश्चय जाती रहती है, सिर पर लगाने और खाने की दवा मूल्य ५) डाक व्ययादि ।।-)

सिद्ध सारस्वत वटी

यह गोलियाँ मस्तिष्क को बल देती है। बुद्धि, मेधा,

धृति, स्मृति (याददाश्त) को बढ़ाती हैं। छात्रों, अध्यापकों, वकीलों कवियों आदि जिनको याददाश्त का विशेष काम पड़ता है, उनके लिये बड़े कामकी है। इनका चमत्कार अवश्य देखें।

मूल्य ४८ गोलियों का २) डाक व्ययादि ।।-)

सिद्ध वातारि

यह दवा वायु रोगों के लिये रामबाण है। इसके सेवन से पक्षाघात [फालिज], सर्वाङ्गवात अर्दित (मुख टेढ़ा होना), हनुग्रह (ठोडी का जकड़ जाना), गठिया, जोड़ों का दर्द व सूजन, कम्पवायु आदि स्त्रियों के गर्भाशय सम्बन्धी, हिस्टीरिया, नलों का दर्द, कमर का दर्द आदि अनेक रोगों को दूर करता है, शरीर को स्वस्थ व पुष्ट बनाता है। मूल्य ४८ गोलियों का ३) डाक व्यय इत्यादि ।।-)।

बृहत् समीर पन्नग वटी रसायन

(रजिस्टर्ड)

यह गोलियाँ एड़ी से चोटी तक के सर्व प्रकार के शारीरिक दर्द चाहे वह वात पित्तादि किसी भी दोष व किसी कारण से कैसे ही सख्त क्यों न हों उन्हें दूर करने में बिजली की भाँति असर दिखाती है। दर्द से बेचैन मनुष्य तुरन्त हंसने लगता है। इसके अतिरिक्त यह गोलियाँ माहवारी को साफ लाने व नलों के दर्द में अपना तुरन्त असर दिखाती है। मूल्य ३२ गोलियों की एक शीशी का १) डाक व्ययादि ४ शीशियों तक ।।-)

शूलगज हरि

इन गोलियों के सेवन से, पेट का फूलना, हवा ज्यादह पैदा होना, वाय का गोला, शूल इत्यादि सब प्रकार के उदर-विकार दूर होते हैं। मूल्य ५० गोली १) डाक व्ययादि ४ शीशियों तक ।।-)

नागार्जुन वटी

यह गोलिया दिल की बीमारियों मे बेहद मुफीद है। दिल का बैठा जाना वगैरा वात, पित्त, कफ आदि किसी दोष के कारण हो। इसके सेवन से आराम आजाता है। मूल्य २४ गोलियों का २) डाक व्ययादि ।।-)

कृच्छ्र नाशक

(रजिस्टर्ड)

(सूज़ाक व कुरहा का अचूक इलाज)

रजस्वला स्त्री के साथ विषय करने से, गर्म चीजों के इस्तेमाल से अथवा चूने की तपी हुई छत पर गर्मी में पेशाब करने से और धूप मे अधिक देर तक काम करने से अक्सर यह रोग हो जाता है। जिससे लिंगेन्द्रिय के मुख पर वरम होजाता है, पेशाब मे जलन, खून और पीपका आना शुरू हो जाता है। फिर धीरे २ उस मे कुरहा पड जाता है। हमारा कृच्छ्र नाशक इन सब दर्दनाक हालतों को एक सप्ताह ही में पूर्णतया आराम कर देता है। चीस, चबक, जलन तो २४ घन्टे ही मे जाती रहती है। मूल्य फी शीशी १।) तीन शीशियां एक बार लेने पर ३) डाक व्ययादि ।।-) ।

सिद्ध पाषाण भेद

इसके सेवन से गुर्दे और मसाने की पथरी चूर चूर होकर निकल जाती है। बडी अजीब दवा है। मूल्य २४ गोलियों का १।।) डाक व्ययादि ।।-)

प्रमेह नाशक वटी

प्रमेह (जिरयान) २० प्रकार का होता है, जिसमे सबसे भयंकर मधुमेह है. इस रोग में पेशाब मे शक्कर मिलकर आती है, इसलिये पेशाब मे चींटियां लगने लगती है, प्यास ज्यादह लगती है, कमजोरी दिनो दिन बढ़ती जाती है। हमारे यहा इस बीमारी के लिये खास तौर पर यह गोलिया तैयार की जाती है। कुछ दिनो के सेवन करने से पेशाब मे शक्कर आना बन्द हो जाता है. और गई शक्ति फिर वापिस आ जाती है। मूल्य ४८ गोलियों का ४) डाक व्ययादि ।।-)

मुटापा दूर करने की दवा

इस बीमारी मे चरबी और मांस बहुत बढ़ जाता है। जिससे शरीर बेडौल और भारी हो जाता है, दिल और फेफड़े अपना काम पूरे तौर से नहीं करते। हाज्मा भी प्राय खराब हो जाता है, चलने फिरने में भी दुःख होता है, दम फूलने लगता है, जिन्दगी जान को वबाल हो जाती है। ऐसी हालत मे हमारे यहां की मुटापा दूर करने की दवा का सेवन करें। इससे आहिस्ता आहिस्ता चरबी घटती जाती है, और बदन सुडौल हो जाता है। अधिक गुण यह है कि शक्ति नहीं घटती। मूल्य १ पैकट ५) डाक व्ययादि ।।-)

दुबलेपन को दूर करने वाली दवा

जो अति मैथुन, क्रोध, शोक, चिन्ता, भय, लंघन से या अति रूक्ष पदार्थों के खाने से, निद्रा नाश से ज्वरादि रोगों से दुर्बल हो गये हैं, उनके लिये यह औषधि भिन्न भिन्न अनुपानों से बड़ी लाभदायक है। इसमें शरीर में मांस बढ़ता है और शक्ति आजाती है। मूल्य १ पैकट २।।) रु० डाक व्ययादि ।।=)

कोष्ठ बद्धारि वटी

ये गोलिया अत्यन्त पाचक, कब्जकुशा, जिगर और मेदे को ताकत देने वाली है। इनके खाने से भूख खूब बढ़ जाती है, पेट साफ और हल्का रहता है, दस्त बिना तकलीफ के आमानी से आजाता है, दायमी क़ब्ज के लिये तो ये गोलिया अक्सीर है। २ गोलियाँ रात को सोते समय दूध से लेनी चाहिये। कीमत २४ गोलियों की शीशी ।।) १२ शीशियों का ५) डाक व्ययादि ।।=)

अतिस्वादिष्ट चूर्ण की गोलियां

ये गोलियां बहुत ही खुश मज़ा है। खाने के बाद एक-दो गोलिया अवश्य ही खानी चाहियें। खाना हज़म होकर एक दो डकार आकर मन प्रसन्न हो जाता है। बदहज़मी, कै, जी मिचलाना, हैज़ा (विशूचिका) आदि के लिये निहायत अक्सीर है। मूल्य फी शीशी ।।) १२ शीशी ५) डाक व्ययादि ।।=) व १=) क्रमश

नमक सुलेमानी

ज़ायका निहायत मज़ेदार है, हाज़िम इस कदर है कि

पेट के दर्द, बन्द हैजा, चुभन वगैरः बदहजमी के रोगों को आनन फानन में ही दूर कर देना है, और भिन्न २ अनुपानों के साथ आखों, मेदे व पुरुषत्व को ताकत देता है, गठिया, बुखार, खांसी दमा आदि बहुत से रोगों में गुणदायक है। चेहरे के रंग को निखारता है, फी शीशी ।≈) डाक व्ययादि २ शीशियों तक ॥=)

क्षुधासागर चटनी

यह एक निहायत हाजिम, कब्ज़ कुशा और बहुत ही लज़ीज़ नरम चूर्ण है। कैसी ही बदहजमी हो एक माशा भर चाटते ही डकार आजाती है, भूख लग आती है, तबीयत खुश हो जाती है। प्रति पैकट ।) डाक व्ययादि ४ पैकटों तक ॥=)

शोथ नाशक

इसके लेप करने से हर प्रकार की सूजन, दर्द, गाठ आदि को बहुत जल्द आराम हो जाता है। यहाँ तक की प्लेग की गिल्टी में भी बड़ी मुफ़ीद है। कीमत फी शीशी ॥) डाक व्ययादि ४ शीशियों तक ॥=)

कण्ठ माला की दवा

इस बीमारी को अक्सर लोग जानते हैं। इस में बेर से छोटी और बड़ी २ गाठें गले में हो जाती है और निहायत तकलीफ होती है। इसके लिये हमारे यहा की दवा इस्तेमाल करने से यह मर्ज़ बहुत जल्द दूर हो जाता है। खाने व लगाने को दोनों दवाओं की कीमत ५) डाक व्ययादि ॥=)

व्रण राक्षस तैल

यह सब प्रकार के ज़ख्मों को अच्छा करता है। ख्वाह

वह नया हो या पुराना नाडी व्रण (नासूर) जिसमे तेल जा सकता हो बिलकुल दूर कर देता है। मूल्य १ शीशी ॥) डाक व्ययादि ४ शीशियों तक ॥~)

करामाती टिकिया

सब प्रकार के फोड़े, फुन्सियों को दूर करने मे जादू का काम करती है, केवल एक बार लगाने से ही फुन्सियां राख की तरह उड़ जाती है, कीमत २० टिकियों का पैकट ।) डाक व्ययादि ॥~)

सिद्ध उपदंश कुठार रसायन

(रजिस्टर्ड)

(आतशक की अक्सीर गोलियां)

इन गोलियों के सेवन से आतशक और उससे उत्पन्न हुए कुल उपद्रव अति शीघ्र जड से दूर होकर शरीर कुन्दन की भांति चमकने लगता है। इसके सेवन से मुह का आना, उल्टी, दस्त आदि नही होते। क्योंकि इसमे पारे और संखिये की मिलावट नही है। आप आवश्यकता पड़ने पर तुरन्त गोलियां मंगाकर सेवन कीजिये क्योंकि यह भयानक रोग एक से दूसरे को लग कर पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है। इसलिये इसकी चिकित्सा मे लापरवाही करना बड़ी नादानी है। मूल्य एक शीशी मय मरहम की डिबिया के ३)। डाक व्ययादि ॥~)

मरहम आतशक

यह मरहम आतशक के जख्मों पर लगाने से उसके जहर को नष्ट कर जल्दी अच्छा कर देता है। मूल्य १ शीशी ॥) डाक व्ययादि ४ शीशियां तक ॥~)

त्र्यम्बक

यह एक जादू असर खुशबूदार मरहम है। इसके लगाने से सब ही प्रकार के चर्म रोग दूर हो जाते हैं। जिल्द का किसी रगड़ या तेज़ गरम चीजों के असर से खराब होना, जिल्द की आपस में रगड़ खाकर ज़ख्मी हो जाना, फुन्सियां, सुर्ख, सफेद व स्याह चित्तियां या धब्बे, गरमी दाने, मुहासे, खुश्क व तर खुजली, छाजन, (एग्जिमा) चम्बल व अनेक प्रकार के दाद, जिल्द से छिलके से या भूसी सी उतरना, छीप, आतशकी ज़ख्म, गंज फोनों की खारिश, स्त्रियों के गुप्त स्थान की खाज, बिवाई फटना, आग या पानी से जलना, बच्चों के नाक का पकना व उनकी गुदा का सुर्ख होना, स्त्रियों की भिटनियों के ज़ख्म, बच्चों के जांघो या बग़लों का लग जाना, अनेक प्रकार की सूजन, मोच, जोड़ों के दर्द, बिच्छू, या ततैया का काटना, बवासीर के मस्से, पसली का दर्द, कण्ठमाला आदि अनेक रोगों मे काम आता है। मूल्य १ डिबिया ।।।) डाकव्यय ४ डिबिया ।।=)

कायाकल्पवटी

इसके फायदे इसके नाम से ही ज़ाहिर होते हैं। इसके सेवन से शरीर अति साफ चमकीला और नवजात शिशु की भांति कांतिवान बन जाता है। सर्व प्रकार के चर्म रोग, फोड़े, फुन्सी, दाद, खाज, स्याह व सफेद दाग़, मुँह की झांई, आतशक, सूज़ाक के विष से उत्पन्न हुये सारे उपद्रव और चम्बल आदि बड़े २ भयानक रोग दूर होकर शरीर कांतिमान हो जाता है।

अर्थात् यह गोलियां सर्व प्रकार के चर्म रोगों के लिये एक अद्भुत रामबाण दवा है। मूल्य १६ गोलियों का १) डाक व्ययादि ॥-)

समस्त चर्म रोग व रक्त सम्बन्धी रोगों की
एक मात्र दिव्य बूटी

हिमाद्रिजा

(रजिस्टर्ड)

(सुगंधित हरितहिमाद्रिजापर्णी)

यह हिमालय पर्वत की उत्पन्न हुई दिव्य गुण वाली एक बूटी है जो कि हमारे यहा संवत १८५२ से काम मे लाई जाती है। इसके प्रयोग से आतशक, कुष्ठ आदि का विष जो कि फूट कर शरीर को सड़ा देता है और कई कई पुश्तों तक बराबर चलता रहता है, शीघ्र ही १ सप्ताह मे जड़ से नष्ट होकर काया को कुन्दन की तरह चमका कर शरीर मे शुद्ध रक्त का प्रवाह कर देती है। अब तक लाखों रोगी रोग से मुक्त होकर मुक्त कण्ठ से इसकी प्रशंसा कर चुके है। यह उपदंश (आतशक) सूज़ाक (गनोरिया) अट्ठारह प्रकार के कुष्ठ, चम्बल, सूखी और गीली हर प्रकार की खारिश, बिसर्प, विस्फोट आदि को दूर करने मे रामबाण महौषधि साबित हो चुकी है। प्रार्थना है कि आप भी बतौर नमूने के कम से कम ७ मात्रा जिसका मूल्य सिर्फ १) है, मंगाकर आजमाइश कीजिये। हमे पूर्ण आशा है कि आप एक बार में ही इसके गुणों पर मुग्ध हो जायेंगे। इसको स्त्री पुरुष, बालक, वृद्ध सभी समान रूप से प्रयोग कर सकते है। वैद्यो के लिये खास भाव लिख कर मालूम करें। डाकव्ययादि ॥-)

दद्रुनाशक

नया पुराना कैसा ही दाद हो इस दवा के दो तीन बार ही लगाने से आराम हो जाता है, किसी तरह की जलन व तकलीफ नहीं होती। कीमत ।) शीशी। ४ शीशियों तक डाकव्ययादि ।।~)

महासुगन्धितउद्वर्तन

(निहायत खुशबूदार जिस्म पर मलने का उबटन)

यह उबटन मुहम्मदशाह बादशाह के लिये हुक्मा ने तैयार किया था, इसको जिस्म पर मल कर नहाने से जिस्म कुन्दन की तरह दमकने लगता है, और जिल्दी बीमारियां पास नहीं आती, खुशबू इतनी है कि आदमी मस्त हो जाता है। कीमत फी पैकट १) डाक व्ययादि ।।~)

चन्द्रवदन

चेहरे के मुहासों व झाई आदि को दूर कर सुन्दर बनाता है। मूल्य ।।) डाक व्ययादि ।।~)

सुन्दरशरीर

जिस्म को खुशबूदार, चमकीला व सुन्दर बनाने वाला उबटन। कीमत ।) डाक व्ययादि ८ शीशियों तक ।।~)

मुक्तावलेह

यह चटनी मोती आदि कई चीजों से मिलाकर तैयार की जाती है मस्तिष्क और हृदय को शक्ति देती है—दिल की धड़कन और घबराहट को दूर करती है। मोतीझारा, चेचक व खसरा में खास तौर से दी जाती है। इसके देने से रोगी बहुत से

उपद्रवों से बचा रहता है। मूल्य प्रति तोला ।≈) डाक व्ययादि १५ तो० तक ।।–)

दन्तमुक्ताकरमंजन

इस मंजन के सेवन से दांतों की सब प्रकार की तकलीफें दूर होती है, बत्तीसी मोती की तरह चमकने लगती है, दांत या मसूड़ों में कैसा ही सख्त दर्द हो, दांत हिलते हों, मसूढ़े फूल गये हों, पीप व खून आता हो, बदबू आती हो इत्यादि बीमारियों को यह मंजन लगाते ही फायदा करता है इसकी मजेदार खुशबू बड़ी ही उत्तम है। क़ीमत ।) डाक व्ययादि ६ शीशियों तक ।।–)

दन्तशूलनाशक

इसकी दो तीन बूंदें ही दांत में या डाढ़ मे लगाने से फ़ौरन आराम हो जाता है। क़ीमत फी शीशी ।) डाक व्ययादि १२ शीशियों तक ।।–)

कर्णशूलनाशक

कान मे चीस हो या फुन्सी, या पीप निकलती हो या सूजन हो दो कतरे डालने से आराम हो जाता है। और इसी तरह दो चार दिन डालने से बिलकुल आराम हो जाता है। फी शीशी ।) डाक व्ययादि १२ शीशियों तक ।।–)

प्रतिश्यायनाशक

नए और पुराने जुकाम के वास्ते अत्यन्त लाभदायक है कुछ ही दिनों के सेवन से मस्तिष्क शक्ति बढ़ कर बार बार

जुकाम होना बन्द हो जाता है। दिमाग़ को बड़ी ताकत देने वाली चीज़ है। २४ गोलियों का पैकट १) डाक व्ययादि ।।-)

लक्ष्मीविलासगोलियां

ये गोलिया सोना मोती इत्यादि बहुमूल्य द्रव्यों से बनती है, दिमागी काम करने वालों के लिये अमृत का काम करती है। जब कभी अधिक लिखने, पढ़ने और अनेक प्रकार के दीर्घ कालिक रोगों के कारण दिमाग़ कमज़ोर हो जावे, काम काज को दिल न चाहे, सिर में चक्कर, नेत्रों की ज्योती मे फर्क तथा शरीर के प्रधान २ अवयव कमज़ोर पड़ जावें ऐसी हालत मे चिकित्सा न कराने से बहुत से रोग पैदा हो जाते है। इस लिए शारीरिक व मस्तिष्क शक्ति बढ़ाने के लिये हमारी "लक्ष्मी विलास गोलियां" फौरन इस्तेमाल कीजिये। बेशुमार रोगी, भोगी, स्त्री, पुरुष, वृद्ध, युवा इन के अद्भुत गुणों पर मोहित हो चुके हैं। मूल्य १२ गोलियों की शीशी ३), ३ शीशियों के ८) डाक व्ययादि ।।-)

सुगन्धितबादामतैल

यह तैल बादाम की गिरियों को कुछ ख़ास सुगन्धित द्रव्यों में भावना देकर देशी तरीके पर तैयार किया गया है। इसको सिर पर मलने और कुछ बूंदें सूंघने से दिल व दिमाग़ को बड़ी प्रफुल्लता होती है, दिमाग़ी कमज़ोरी, सिर का दर्द, सिर का घूमना, नींद का न आना, कानों की भिनभिनाहट, आंखों के आगे तिरमिरे दिखाई देना, आंखों की कमज़ोरी,

रतौंधा, नाक की खुश्की, पुराना जुकाम, दांतों का ढीलापन, बेवक्त बालों का सफेद होना, चेहरे का फीकापन वगैरा २ दूर होते है। दो दो बूंदें कुछ अर्से तक कानों में डालने से कान की खुश्की और बहरापन दूर हो जाता है, जिस्म पर मलने से बदन की ताकत बढ़ जाती है, वबाई बीमारियों का असर नहीं होता। फालिज, लकवा, कम्पवायु, मिरगी, दीवानगी, और भूल की बीमारियों मे सिर पर मलना बहुत फायदेमन्द है।

मूल्य १ शीशी १।) डाक व्ययादि ।।-)

शेरनीकेदूधकासुर्मा

(रजिस्टर्ड)

यह हमारे औषधालय का तैयार किया हुआ अजीबोगरीब सुविख्यात सुर्मा है। इसमें शेरनी के दूध के लिये जो मुल्क आसाम के भीलों से मिलता है बड़ी महनत करनी पड़ती है। मोती, मूंगा, फीरोजा, लालबदखशानी, जमर्रुद याकूत अकीक यमनी लाजवर्द, सोनामक्खी, दहनाफरंग, जाफ्रान, मुश्क, अम्बर मामीरानचीनी, भीमसैनीकर्पूर संगबसरी, सुर्मा अस्फहानी वगैरा वगैरा ४० कीमती अदवियात से सब्ज हरड़ के पानी में ६ माह तक कांसे के सिलवट्टे पर पीसा जाता है, बाद अर्से दराज तक नीम की जड़ को खोखला करके उसमे रखते हैं, इसके बाद दोबारा पीस कर काम में लाया जाता है, इसके इस्तेमाल से बहुत दिनों का अन्धापन बशर्ते कि आँख की बनावट मे बिगाड़ न आया हो अच्छा हो सकता है। इस के सेवन करने वाले को आँख का कोई रोग नहीं हो सकता, दृष्टि

को साफ, तेज, और रोशन करता है, ऐनक लगाने की आदत छुड़ा देता है आँखों की कमज़ोरी शुरू मोतियाबिन्द, आंखों की धुन्ध, जाला, फूला, खारिश, ढलका, नाखूना वगैरा आँख की बीमारियों में मुजर्रब है। मूल्य फी तोला ४) नमूने की शीशी ।।) डाक व्ययादि १२ शीशियों तक ।।=)

मोतियोंकासफेदसुर्मा

यह सुर्मा हमने उन साहिबान के लिए तैयार किया है जो कि काला सुर्मा लगाना पसन्द नहीं करते, इसके तमाम गुण और मूल्य शेरनी के दूध वाले सुर्मे के मानिन्द ही है।

सिद्धत्रिफलादिघृत

गई हुई रोशनी को वापिस लाता है, मन्द दृष्टि, समीप दृष्टि, दूर दृष्टि आदि अनेक रोगों को दूर करता है, रोशनी को तेज करता है। बल, वर्ण, जठराग्नि को दीप्त करता है।

मूल्य १ शीशी एक पाव २।।) डाक व्ययादि १=)

सरसुगन्ध

यह सर धोने का निहायत खुशबूदार मसाला है जो कि झड़ते हुए बालों की जड़ों को मजबूत करके उनको मुलायम और भौंरे के समान काला बनाता है। मूल्य ।) पैकेट डाक व्ययादि ।।=)

मदनराजसुगन्ध

प्यारी, धीमी व मीठी २ मस्त करने वाली खुशबू का खज़ाना। मूल्य ।।) शीशी डाकव्ययादि ।।=)

प्लेगसंरक्षकमकरध्वजवटी

(ताऊन से बचने के लिये बेमिसाल दवा)

इस मर्ज का वर्णन करने की ज़रूरत नहीं तकरीबन सब ही मनुष्य इसे समझते हैं। यह एक ऐसी संहारक व्याधि है, व्याधि क्या बल्कि जान की दुश्मन है, कि जहां जब यह फैलने लगती है खानदान के खानदान और गॉव के गॉव तबाह कर देती है जहाँ इस व्याधि ने एक बार अपना बीज बो दिया, तकलीफ़ ही देती रहती है। हमारे दवाखाने मे इस व्याधि को रोकने के लिये "प्लेगसंरक्षकमकरध्वजवटी" नाम वाली गोलियाँ तैयार होती है। जिस सक्रामक व्याधि के दिनों मे एक एक सुबह शाम इस्तेमाल करते रहने से प्लेग का असर हरगिज़ नहीं होता। तजरुबे ने साबित कर दिया है कि इससे उत्तम दवा इस मर्ज को रोकने के लिये दूसरी नहीं होगी। अलावा इस के निहायत मुकव्वी दिल व दिमाग है। बड़ी २ असबी कमज़ोरियो को दूर करने मे रामवाण है। मूल्य १६ गोलियो का १) रु० डाक व्ययादि ।।=)

महासुगन्धितदशांगधूप

थोड़ी सी धूप लेकर धूपदान व अगरदान में डाल कर रख दीजिये बहुत जल्द तमाम कमरे में खुशबू फैल जायगी, तमाम किस्म के जहरीले माद्दों से हवा को शुद्ध कर देगी। जहां पर ताउन, हैज़ा, चेचक, मलेरिया बुखार वगैरा २ रोग फैल रहे हो वहां के निवासियों को इस धूप का सेवन करना बहुत ज़रूरी है। इसकी खुशबू निहायत दिललुभाने वाली है। क़ीमत फ़ी पैकेट ।) फ़ी सेर २) डाकव्ययादि अलग।

च्यवनप्राशावलेह

अस्य प्रयोगा च्च्यवन सुवृद्धो भूत्पुर्नयुवा ॥

यह परमौषध च्यवनप्राश नाम से इसलिये प्रसिद्ध है कि च्यवनऋषि ने इसके प्रसाद मे तरुणत्व प्राप्त किया था। वीर्यवर्धक औषधियो मे इसके समान दूसरी औषध नही है। यह रसायन स्त्री, पुरुष दोनो के रज वीर्य को शुद्ध करके सुन्दर और बलवान सन्तान पैदा करने योग्य बना देती है। यह दवा निर्बल पुरुषो, स्त्रियो, बालको एवं वृद्धो के लिये अत्यन्त शक्ति-वर्धक सुखदायक एव स्वादिष्ट मधुर पदार्थ है। इसको दूध के साथ सेवन करने से क्षय, क्षीणता, यक्ष्मा, उर क्षत, खांसी, गले का बैठना, दमा, हृदय रोग, रक्तपित्त, अम्लपित्त, प्यास, वमन, पाण्डु, पुराने दस्तो का रोग, मूत्रदोष, वीर्यदोष वातरक्त, दिमाग की कमजोरी, पुरुषत्व हानि, आदि अनेक बीमारिया नष्ट होती है। हमारी सहस्रों रोगियो पर आजमाई हुई शास्त्रीय दवा है। मूल्य प्रति सेर ४) रुपया।

स्वर्ण-चन्द्रोदय (मकरध्वज)

ऐसे बहुत कम मनुष्य होंगे जो इस प्रसिद्ध चमत्कारिक प्रभावोत्पादक परम औषधि को न जानते हो, यह औषध एक रसायन है, इसका सेवन करने से रस, रक्त, मांस, मेदा, मज्जादि धातुओ की वृद्धि होती है शरीर का बल और लावण्य बढ़ता है, मन मे फुर्ती पैदा होती है। बुद्धि और स्मरण शक्ति तेज होती हैं। मनुष्य मात्र की कोई बीमारी ऐसी नही कि इस रसायन के यथा-विधि सेवन करने से न जासकती हो, इसके

समान दूसरी बल बढ़ाने वाली कोई औषध नहीं। पृथक २ अनुपानो के साथ देने से नया पुराना ज्वर हैजा, ज्वरातिसार, गृहणी, अर्श, मन्दाग्नि, अम्लपित्त, पाण्डु कामला, रक्तपित्त, क्षय, खांसी, हिचकी, दमा, मूर्छा उन्माद अपस्मार, वातव्याधि, आमवात, हृदय रोग, प्रमेह, शुक्रदोष, नामर्दी धातु क्षीणता धातु दौर्बल्य आदि अनेक रोग जाते रहते हैं। बालक, तरुण, वृद्ध, स्त्री, पुरुष सब ही को उपयोगी है हरतरह की कमजोरी तथा ज़हरीले प्लेग आदि जनपदोपध्वंसनीय रोग नष्ट होते हैं। मूल्य ७ मात्रा १) एक तोला २४) रु० संस्कारित ७ मात्रा २॥) १ तोला ६०) रु० सेवन विधि पुस्तक मुफ्त मगाकर देखे।

द्राक्षासव

या

अंगूरों का शुद्ध रस"

यह शुद्ध साफ अच्छे से अच्छे अंगूरों के रस से बनाया जाता है। यह सुबह शाम पाखाना साफ लाकर अग्नि को दीप्त करता है, इसके बल से १-१। सेर दूध २॥-३ छटांक घी रोज सहज मे पच जाता है। रक्त बढ़ाने मे, चेहरे को सुर्ख कान्तिमान् व तेजस्वी बनाने मे अपूर्व है, यह सभी अंगूर सेवन करने वाले जानते है। कैमिकल जांच करने पर मालूम हुआ है कि इस मे कण रंजक (Haemoglobin) जो एक प्रकार की प्रोटीन है, जिसमें आकसीजन नाइट्रोजन, हाइड्रोजन, एवं लौह अंश पाये जाते हैं। जो जीवन और रक्त-वर्धन के लिए ज़रूरी हैं, यही प्रोटीन जब रक्त मे कम हो जाती है, द्राक्षासव

इस कमी को पूरा कर देता है। बलवर्द्धक हाने के कारण दिमाग़ को पुष्ट करता है, इसको बालक, वृद्ध स्त्री, पुरुष, युवा, सब ही समान रूप से सेवन कर सकते हैं। यक्ष्मा क्षय, खांसी श्वास तथा दुर्बलता की महौषधि है। देखने तथा खाने में, गन्ध, स्वाद में, आकर्षक, मन-मोहक, दिल पसंद है। कीमत १।।) फी बोतल (६० तोला) डाक व्ययादि पृथक

२।। सेर से अधिक पर खास भाव होगा।

मधु

आयुर्वेद में मधु को योगवाही अर्थात् जिस औषध के साथ मिलाया जाये उसी के गुण मे वृद्धि करदेने वाला माना गया है, रक्त को शुद्ध करता है, शरीर के प्रत्येक अवयव को शक्ति देता है, बलगम को खारिज करता है तथा पाचन क्रिया को तीव्र करता है एवं रोगों पर प्रभुत्व शक्ति पैदा करता है। आयुर्वेदिक तथा यूनानी बहुत सी औषधियो मे मधु का प्रयोग होता है। उत्तम प्रकार का विशुद्ध मधु तमाम गुणों से युक्त होता है। आजकल प्रत्येक वस्तु मे नकलीपन लादेने का धोखे बाज व्यापारियों में एक रिवाज सा होगया है। यह बात धर्म के तो विरुद्ध है ही वरन व्यापार को भी बहुत नुक्सान पहुँचाने वाली है। दवाइयों का व्यापार ऐसी ज़िम्मेदारी का व्यापार है कि जिस में गडबडी करने से कभी २ ग्राहक को अत्यधिक हानि हो सकती है। हमने इसी बात को देखकर अपने यहां विशुद्ध मधु का खास इन्तज़ाम किया हुआ है, पेशावर की तरफ से अपने ही आदमियों द्वारा मंगाया जाता है, छानकर बाकायदा रासायनिक रीति से परीक्षा कर पैक करके विक्रयार्थ रखा जाता है। नं० १ (१ बोतल) १ सेर २) नं० २ (१ बोतल) १ सेर १।।) नं० ३ बोतल १ सेर १)

श्वेतकुष्ठ (सफ़ेद कोढ़)

और

उसका इलाज

शारीरिक स्वास्थ्य व सौन्दर्य के सहज शत्रु इस श्वित्र कुष्ठ (सफ़ेद कोढ़) के इलाज को कराते कराते यदि आप निराश हो चुके है, तो आज ही हमारी **श्वित्र चिकित्सा** नाम वाली पुस्तक मुफ्त मंगाकर पढ़ें। यदि आपका सम्पूर्ण शरीर भी श्वेत हो गया है और बाल भी सफ़ेद होकर झड़ने लगे है तो भी आप चिन्ता न करें। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि आप हमारे इस वंश परम्परागत (खान्दानी) इलाज से अवश्य और शीघ्र ही छुटकारा पाकर आरोग्य होंगे।

हमने सर्वसाधारण के लाभ के लिये अपने यहाँ इस इलाज के लिये ३ तरीके रक्खे हैं—

(१) ग़रीब व असहाय लोगों की मुफ्त चिकित्सा की जाती है।

(२) बड़े २ रईस, धनवान लोगों का इलाज ठेके पर भी किया जाता है।

(३) औषधि की उचित कीमत लेकर चिकित्सा की जाती है।

खाने की दवा जो १ मास के लिये काफ़ी है मूल्य ४) रु०।

दाग़ों पर लगाने की दवा ४ गोलियों का ४) रु०।

यदि सारा शरीर श्वेत हो गया है तो उसके लिये तैल मालिश की शीशी २) रुपया डाक व्ययादि ।|--)

कूपीपक्वरसायन

ये रसायनें पारदादि कई औषधियों को मिश्रत कर आतशी शीशियों में भरकर बालुका यन्त्र द्वारा बड़े अनुभवी वैद्य की देख रेख में तय्यार कराई जाती है।

यज्जरा व्याधि नाशाय तद्रसायनं

ये रसायनें वृद्धावस्था को दूर कर युवावस्था देती है, रोगों को दूर कर शरीर को नीरोग करती है। रसों और कूपीपक्व रसायनों में और औषधियों के अतिरिक्त शुद्ध संस्कारित पारद सब में प्रधान वस्तु है। बहुधा वैद्य तथा फार्मेसियाँ कृत्रिम हिंगुल से निकाला हुआ पारद मिश्रित कर तय्यार कर लेते है, परन्तु ये इतनी लाभदायक नहीं होतीं जितनी संस्कारित पारद से बनी हुई रसायनें होती है। हमारे यहाँ शास्त्रीय रीति से संस्कारित पारद तय्यार किया जाता है और वही इनके बनाने में काम में लिया जाता है। जिससे ये अपना पूरा फल देती है और यही कारण है कि बहुत से वैद्य हमारे यहाँ से माल मगाते है और अपने रोगियों पर प्रयोग कर पूरी सफलता प्राप्त करते है। अनुपान सब रसायनों के साथ लिखे हुए हैं यदि वे न मिले तो निम्नलिखित में से किसी के साथ ले सकते है।

घी, मक्खन, मलाई, मधु, दुग्ध, आँवले का मुरब्बा च्यवनप्राशावलेह, खमीरा गावजुवां, अम्बरी, खमीरा मोती, खमीरा गावजुवां सादा।

———※———

अष्टमूर्तिरस [बृ० नि० र०] १ तोला, १०), मात्रा—½ से १ रत्ती

यह सोना चान्दी आदि कई औषधियों के मिश्रण से बनाया जाता है, सब प्रकार के नये व पुराने ज्वरों व वायु रोगों में अत्यन्त लाभदायक है। खांसी, दमा आदि में भी गुणकारी है।

अनुपान—तुलसी या अद्रक का स्वरस व शहद

अष्टावक्ररस [भै० र०] १ तोला २४), मात्रा—१ रत्ती

यह वलिपलित नाशक, बल वर्धक पौष्टिक, आरोग्य-रक्षक, बुद्धि, कान्ति तथा वीर्य वर्धक है।

अनुपान—मधु

चन्द्रोदयरस [र० रा० सु०] १ तोला २०), मात्रा—½ रत्ती

यह अनुपान भेद से प्रायः सभी रोगों में काम में लाया जाता है। काम शक्ति व मस्तिष्क शक्ति को बढ़ाने में अद्वितीय औषध है।

जौहरताल— १ तोला २) मात्रा —½ रत्ती से १ रत्ती

गलित कुष्ठ व रक्त विकार में लाभ दायक है।

अनुपान—घृत तथा मधु

जौहरसंखिया -१ तोला २), मात्रा—½ रत्ती

रक्त वर्धक, कामोत्तेजक, शक्तिदायक व रक्तशोधक है।

अनुपान—मुनक्का में बन्द करके दूध के साथ

तालसिन्दूर [ताल चन्द्रोदय] १ तोला ४), मात्रा—१ रत्ती

सर्व प्रकार के कुष्ठों को दूर करने में एक चमत्कारिक रसायन है। पुराना बुखार, निर्बलता, खाँसी व दमे में अत्यन्त लाभदायक है।

अनुपान—मधु व घृत

ताम्रसिंदूर [र० सा०] १ तोला ३) मात्रा—१ रत्ती

श्वास नाली व फुक्फुस रोगों के लिये अत्यन्त गुणकारी है, पेट के रोगो और हाज्मे की खराबी को दूर करता है, बलकारक है।

अनुपान—शहद व पीपल

नागसिन्दूर [र० सा०] १ तोला ३) मात्रा—१ रत्ती

गुण ताम्र सिंदूर सदृश ही हैं।

मल्लसिन्दूर [भा० भै०] १ तोला ३॥), मात्रा—½ रत्ती

गठिया, फालिज, निर्बलता, दमा, खाँसी व पुराने बुखार मे लाभ दायक है।

अनुपान—शहद व अदरक स्वरस

सिद्धमकरध्वज [षड़ गुणवलि जारित, स्वर्ण घटित, विषोप विष सस्कारित पारद द्वारा] १तोला ६०) मात्रा—¼ रत्ती से ½ रत्ती तक

यह आयुर्वेद शास्त्र की प्रसिद्ध और चमत्कारिक औषधि है, भिन्न२ अनुपानो मे प्राय सभी रोगो मे गुणदायक है, शरीर के प्रत्येक अवयव को शक्तिवान बना, वीर्य को पुष्टकर, नपुन्सकता को दूर कर, शरीर को गठीला, फुर्तीला, तेजस्वी बनाती है। बुढ़ापे की कमजोरियों को दूर कर युवावस्था का आनन्द देती है, शक्ति वर्धक, आयु वर्धक, अद्वितीय अमृत है।

अनुपान—के लिये छोटी पुस्तक पृथक मंगा कर देखे

मकरध्वज [त्रिगुणवलि जारित, स्वर्णघटित] १ तोला २४)

ये भी अनुपान भेद से सभी रोगों मे फल देने वाला है, पुरुषत्व शक्ति को बढ़ाता है. इसके गुण भी ऊपर वाले षड़ गुण वलि जारित से मिलते जुलते हैं।

मकरध्वज [हिंगुलोत्थ पारद द्वारा निर्मित, स्वर्ण घटित] १ तोला ८) मात्रा—½ रत्ती।

प्रमेह, धातुक्षीणता, मस्तिष्क की निर्बलता में लाभ प्रद है। नपुन्सकता को दूर व जठराग्नि को प्रबल करता है।

मकरध्वज [स्वर्ण सिन्दूर, द्विगुण बलि जारित] १ तोला ६) इसके गुण भी ऊपर वाले मकरध्वज से मिलते जुलते है।

रससिन्दूर [द्विगुण बलि जारित] १ तोला २) मात्रा-¼ से ½ रत्ती शारीरिक शक्ति बढ़ाता है, आतशक उपदंश में बड़ा लाभप्रद है, प्रमेह को दूर करता है।

रससिन्दूर [समबलि जारित] १ तोला २) मात्रा—¼ से ½ रत्ती इसके गुण भी ऊपर वाले के सदृश है।

रसकपूर—१ तोला १) मात्रा—¼ रत्ती

उपदंश, रक्त विकार आदि में अत्यन्त लाभदायक है।

शिलासिन्दूर—१ तोला ४) मात्रा—½ से १ रत्ती तक

खाँसी, दमा आदि फेफड़ों के रोगों में अत्यन्त लाभदायक है, पुराने ज्वर में भी गुण करता है।

अनुपान—मधु, पीपल, घृत च्यवनप्राशावलेह

स्वर्णवंग—१ तोला ३) मात्रा—१ से २ रत्ती तक

छाती, फेफड़े और आंतों के रोगों तथा प्रमेह में बड़ा लाभदायक है, वीर्य को पुष्ट करता है।

अनुपान—मधु, घृत

हरगौरीरस—१ तोला ४) मात्रा—½ से १ रत्ती तक

यह भी बड़ी पौष्टिक रसायन है, सूजाक या हस्त मैथुन आदि से जो इन्द्री में शिथिलता होगई तो उसको दूर करने में

एक ही औषध है। आंतो के रोग और दिल की कमजोरी को शीघ्र नष्ट करती है।

अनुपान—मलाई, मधु

हम्मीररस—१ तोला २॥) मात्रा १ रत्ती

रक्त दोषो को दूर करता है, सर्व प्रकार के त्वक् रोगो गलित कुष्ठ तक को दूर कर शरीर सुन्दर व बलवान बनाता है।

भस्में (Bhasmas)

धातु, उपधातु रत्न उपरत्नो की भस्मे बनाने की रीति आयुर्वेद शास्त्रो मे पूर्णतया लिखी गई है। हमारे यहां आयुर्वेद का काम २२ पुश्त से चला आता है। हमारी रसायन शाला मे शास्त्रीय रीति व अपने वंश परम्परागत अनुभव के अनुसार एक अनुभवी रसशास्त्र मे दक्ष वैद्य द्वारा, शोधन कराके भस्मे की जाती है और भिन्न २ औषधो मे आवश्यकतानुसार पुटें दी जाती है तथा परीक्षा करके विक्रयार्थ औषधालय मे रखी जाती है। पदार्थो की अच्छी शुद्धि न होने या भली प्रकार भस्म न होने से अनेक प्रकार की व्याधियाँ शरीर मे उत्पन्न हो जाती है। हम आपको पूर्ण विश्वास दिलाते है कि हमारे यहाँ की भस्मे किसी प्रकार का दोष शरीर मे पैदा नही कर सकती हम अपने चिकित्सालय मे छोटे छोटे बच्चो तक को भी बेफिक्री से देते है।

नीचे हर एक भस्म का मूल्य, मात्रा किन २ रोगो मे कार्यकारी है लिखे है। प्राय रस भस्मादि सायं प्रात: दिये जाते है, मात्रा जो लिखी गई है वह एक समय की है।

अक़ीक भस्म नं० १—१ तोला २०) मात्रा—१ रत्ती

यक्ष्मा, जीर्णज्वर, शारीरिक दुर्बलता, वीर्य दोष, पुरानी पेचिश, स्त्रियों के प्रदरादि अनेक रोगों की उत्तम औषध है।

अनुपान—मधु, घृत

अक़ीक भस्म नं० २—१ तोला ४) मात्रा—२ रत्ती

गुण उपरोक्त वाली अकीक भस्म नं० १ से मिलते जुलते हैं।

अभ्रक भस्म	[सहस्र पुटी]	मूल्य	१ तोला २०)
,,	[५०० पुटी]	,,	१ तोला १०)
,,	[१०० पुटी]	,,	१ तोला २)
,,	[६० पुटी]	,,	१ तोला १।)

यह भस्म अमृत समान है, अनुपान भेद से सब ही रोगों में आश्चर्य जनक गुणकारी है। यक्ष्मा, जीर्णज्वर, कास श्वास, रक्त की कमी, नपुन्सकता, स्त्रियों के मासिक धर्म की अनियमता व प्रदरादि रोग, हाज़्मे की कमी, भूख कम लगना आदि अनेक रोग दूर होते हैं। देर तक सेवन कराने से आयु की वृद्धि होती है। शरीर हृष्ट पुष्ट व सुन्दर बन जाता है।

अनुपान—मधु, घृत, मलाई, हलुआ

अभ्रक भस्म श्वेत—१ तोला।) मात्रा—१ रत्ती

कफ, श्वास, जुकाम, नज़ला आदि में गुण कारी है।

अनुपान—मधु

कांस्य भस्म—१ तोला १।।) मात्रा—२ रत्ती तक

,, नं० २ ,, १)

निर्बलता, प्रमेह, खांसी, श्वास में लाभ दायक है।

अनुपान—**मधु**

कपर्दिका भस्म—१ तोला ≈) मात्रा—४ रत्ती तक

अजीर्ण, अतीसार और पेट के रोगों में सेवन की जाती है

अनुपान—मधु, जीरे का पानी

कासीस भस्म कृष्ण } १ तोला ≈) मात्रा—२ रत्ती तक
,, **लाल** }

ल्पीहा, यकृत के दोष दूर होते हैं, रक्त को बन्द करती है, प्रदर व प्रमेह मे लाभ दायक है।

अनुपान—मधु, घृत

खर्पर भस्म—१ तोला ॥) मात्रा—२ रत्ती तक

यक्ष्मा, जीर्णज्वर, आंखो व मस्तिष्क की गरमी को दूर करती है।

अनुपान—मधु

गोमेद भस्म—१ तोला २५) मात्रा—२ रत्ती तक

त्रिदोष नाशक, फेफड़े और हृदय के रोगो मे गुणकारी, व रक्त वर्धक, चेहरे की चमक दमक व बुद्धि दायक है।

अनुपान—मधु तथा घृत

चतुरवंग भस्म—१ तोला २) मात्रा—२ रत्ती

८० प्रकार की वायु, गठिया आदि, वीर्य दोष, स्वप्न दोष, मस्तिष्क की निर्बलता में गुणदायक है।

अनुपान—मधु तथा मलाई, मक्खन।

ताम्र भस्म श्वेत १ तोला १०) मात्रा—१ रत्ती

,, कज्जली जारित ,, २) ,, ,,

,, गन्धक जारित ,, १) ,, ,,

श्वास, कास, यक्ष्मा, छाती की बीमारियाँ, खून की कमी, रक्त दोष, पेट का दर्द, जुकाम नजले में लाभदायक और बल-दाता है।

अनुपान—मधु, घृत, मक्खन मलाई दुग्ध।

तुत्थ भस्म—१ तोला =) मात्रा—१ रत्ती

आखों के जख्मों को भरती है, दस्तों को रोकती है कफ व पित्त का शमन करती है, कुष्ट, खाज आदि रक्तदोषों की नाशक, नेत्र रोग निवारक है।

अनुपान—मधु या छाछ

त्रिबंग भस्म—१ तोला १॥) मात्रा—२ रत्ती

बल, वीर्य व शक्ति को बढाती है, प्रमेह स्त्रियों के प्रदर व ऋतु दोष में लाभदायक है।

अनुपान—मधु व घृत।

नाग भस्म—१ तोला १) मात्रा—१ रत्ती

(यह सात रंग की बनती है गुण व मूल्य समान है) त्रिदोष नाशक है, दूषित वीर्य को शुद्ध कर शक्ति देती है, प्रदर को नष्ट करती है

अनुपान—मधु

नीलम भस्म—१ तोला १२४) मात्रा—१ रत्ती

" नं० २ ,, ६०)

आयु की वृद्धि करती है, बुद्धि, स्मृति व शक्ति को बढाती है, त्रिदोष नाशक, श्वास कास व यक्ष्मा में लाभ दायक है।

नीलाञ्जन भस्म—१ तोला ।=) मात्रा—१ रत्ती

हिचकी को दूर करती है, चयरोग नाशक और रक्तदोष निवारक है।

अनुपान—मधु, मक्खन या बालाई

पन्ना भस्म (ज़ुमुर्रुद)—१ तोला ८०) मात्रा—१ रत्ती

,, **नं० २** (,,)—१ तोला १२) मात्रा— १ रत्ती

राजयक्ष्मा, जीर्णज्वर, खाँसी, रक्तदोष, मस्तिष्करोग, और पागलपन को दूर करती है, बुद्धि को श्रेष्ठ करती है, बल वीर्य को बढ़ाकर चेहरे पर रौनक लाती है।

अनुपान—मक्खन, मधु, दूध घृत

पुष्पराज भस्म—१ तोला ७५) मात्रा—१ रत्ती से २ रत्ती तक

,, **नं० २**—१ तोला १५) मात्रा— ,, ,,

यक्ष्मा, दुबलापन व पुराने बुख़ार को दूर करती है। हृदय, मस्तिष्क व फेफड़ों को शक्ति देती है, बलवीर्य पैदाकर शरीर को निरोग हृष्ट पुष्ट व कान्तिमान बनाती है।

अनुपान—मधु मक्खन, मलाई, दूध

पारद भस्म (काली) १ तोला १) मात्रा ¼ से १ रत्ती तक

,, ,, (पीतवर्ण) ,, ,, ५)

,, ,, (श्वेत) ,, ,, ५)

,, ,, (रक्त) ,, ,, ५)

रक्तदोष, वायुदोष, उपदंश, गठिया, फ़ालिज, वीर्य दोष, स्त्रियोंके ऋतुदोष आदि अनेक रोगों में लाभदायक है, बलवान व पुष्ट बनाती है। प्रत्येक रोग में आश्चर्यजनक लाभ दिखाती है।

अनुपान— मलाई, मधु, घृत

प्रवाल भस्म [चन्द्र पुटी] १ तोला २) मात्रा --२ रत्ती

" " **नं० २** " " १॥)

" " **नं० ३** " " ।)

दमा, खाँसी, व छाती की जलन को दूर करती है, खून को बन्द करती है, बल व वीर्य को बढाती है।

अनुपान—दूध, मलाई मक्खन

पित्तल भस्म—१ तोला १॥), मात्रा—१ रत्ती

प्रमेह, बादी बवासीर, संग्रहणी, श्वास, काम कफ रक्त न्यूनता, कमलबाय और शूल को नाश करती है।

अनुपान—मधु, घृत व मक्खन

फ़ीरोजा भस्म—१तोला ४) मात्रा—२ रत्ती

" **नं० २**— " ॥)

हृदय, मस्तिष्क और आमाशय को शक्ति देती है, आँतो के जख्मों को दूर करती है, धडकन को हटाती है, गुरदे की पथरी को तोड़ती है।

अनुपान—मक्खन घृत मलाई

बंग भस्म [स्याम] १ तोला १।) मात्रा—½ रत्ती से २ रत्ती

बंग भस्म [हरिताल जारित] १ तोला ।।।)

बंग भस्म [श्वेत] १ तोला।=)

खांसी, कफ, प्रमेह, पाण्डु, श्वास को दूर करती है, जठराग्नि को तीव्र करती, बल, वीर्य व काम शक्ति को बढ़ाती है।

अनुपान—मधु, घृत, मक्खन, मलाई

बेरपत्थर भस्म (हजरुल यहूद) १ तोला १) मात्रा—१ रत्ती
,, ,, नं० २ ,, ,, ।≈)
गुर्दे व मसाने की पत्थरी को निकालती है।
अनुपान—गोक्षुरादि क्वाथ

माणिक्य भस्म—१ तोला २४) मात्रा—१ रत्ती
,, नं० २ ,, ,, १०)
मस्तिष्क और आंखों की गरमी को दूर करती है, बल, वीर्य मेधा बुद्धि कान्ति व स्मरण शक्ति को बढ़ाती है, अपस्मार व क्षय में लाभ दायक है।
अनुपान—च्यवनप्राश, कूष्माण्डावलेह

मण्डूर भस्म—१ तोला ।≈) मात्रा—२ रत्ती
बादी व खूनी बवासीर, पाण्डु रोग, शोथ, पेट का दर्द जिगर व तिल्ली की खराबियां, कमलबाय इत्यादि रोगों में लाभ दायक है।

अनुपान—पुनर्नवादि क्वाथ व मधु

मुक्ता भस्म (खास) १ तोला ४०) मात्रा—२ रत्ती
,, नं० १ ,, ,, ३५)
,, नं० २ ,, ,, २०)

हृदय, मस्तिष्क, यकृत को बलदायक, ज्योति वर्धक, गर्भाशय रोग नाशक, यक्ष्मा, श्वास, कास, अम्लपित्त, अंत्ररोग, खूनी बवासीर में लाभ दायक है, शरीर में स्फूर्ति व उत्साह बढ़ाती है।

अनुपान—मधु, दूध, मलाई मक्खन

मुक्ताशुक्ति भस्म—१ तोला ।।) मात्रा—२ रत्ती

कास, श्वास मंदाग्नि प्लीहा यकृत व उदर रोगों में लाभदायक है, क्षुधावर्धक व शक्तिदायक है।

अनुपान—मलाई मधु, च्यवनप्राशावलेह

मृगशृंग भस्म (अर्क दुग्ध से) १ तोला ।।।) मात्रा—३ रत्ती

,, **नं० २** ,, ,, ≡)

रक्तपित्त, श्वास, कास व छाती के दर्द में लाभदायक है।

अनुपान—कूष्माण्डखण्ड

यशद भस्म—१ तोला ।।।) मात्रा—२ रत्ती

,, **नं० २** ,, ।)

मस्तिष्क व आंखों की जलन, पेशाब की चीस चबक को मिटाती व बवासीर के खून को बन्द करती है।

अनुपान—मधु, मक्खन, मलाई

राजावर्त भस्म—१ तोला ६) मात्रा—१ रत्ती

,, **नं० २** ,, ,, २।।)

हिचकी, वमन व बहते हुए खून को बन्द करती है, हृदय का बलदायक है।

अनुपान—मधु व सितोपलादि चूर्ण

रौप्य भस्म (खास) १ तोला १०) मात्रा—१ रत्ती

,, **नं० १** ,, ४)

,, **नं० २** ,, ३।।)

बुद्धि, मेधा व वीर्यवर्धक, कामोत्तेजक, वृद्धावस्थानिवारक, जीर्ण ज्वर व छाती के रोगों को नष्ट करती है।

अनुपान—दूध, मलाई, मक्खन, च्यवनप्राश

रौप्य माक्षिक भस्म—१ तोला १) मात्रा—२ रत्ती

रक्त शोधक, यकृत् प्लीहा व आँतों के रोगों में गुणकारी, बलवीर्यवर्धक और शरीर पुष्टिकारक है।

अनुपान—मधु, मक्खन मलाई

लौह भस्म (सहस्रपुटि) १ तोला १०) मात्रा—१ रत्ती

,, (हिंगुल जारित) ,, १) मात्रा—१½ रत्ती

,, (बनौषध जारित) ,, ।≈) मात्रा—२ रत्ती

प्लीहा, यकृत् व आँतों के रोग, धातुक्षीणता, खून की कमी मदाग्नि अम्लपित्त, श्वास, कास, बवासीर व सर्व प्रकार के रक्तस्राव में गुणकारी है।

अनुपान—मक्खन, मलाई त्रिफलाक्वाथ

वैक्रान्त भस्म—१ तोला १०) मात्रा—१ रत्ती

,, नं० २ २॥) ,, ,,

श्वास, कास, खांसी, प्रमेह, जीर्ण ज्वर, पाण्डुरोग अर्श, उर क्षत, सोमरोग और अनेक रोगों को नष्ट करती है, बुद्धि, कान्ति और बलदायक है।

अनुपान—मधु, मलाई, मक्खन

शंख भस्म—१ तोला।) मात्रा—२ रत्ती

परिणाम शूल, अतिसार, अजीर्ण, श्वास, कास में लाभ दायक है।

अनुपान—मधु व अदरख स्वरस

संगयशब भस्म—१ तोला १।) मात्रा—२ रत्ती से ४ रत्ती

हृदय, आमाशय व मस्तिष्क को शक्ति देती है धड़कन वहम को दूर करती है, अपस्मार में लाभदायक है।

अनुपान—खमीरा गावजुबां, च्यवनप्राश, कुष्मांडावलेह

संगजराहत भस्म—१ तोला =) **मात्रा**—४ रत्ती

छाती के दर्द, खूनीदस्त और मुँह से खून आने को बन्द करती है।

अनुपान—बासावलेह

सीप भस्म—१ तोला =) मात्रा—४ रत्ती से ८ रत्ती

अतीसार व खून बहने को बन्द करती है।

अनुपान—मधु व बासा स्वरस

स्वर्ण भस्म—नं० १ १ तोला ८०) मात्रा १ रत्ती तक

,, ,, —नं० २ ,, ४०)

क्षय, संग्रहणी जीर्णज्वर, प्लीहादिरोगनाशक, स्मरण शक्ति, बल वृद्धि दायक और अनेक रोगों मे गुणकारी है। बूढ़े को जवान बनाती है और मस्तिष्क में एक प्रकार का आनन्द देती है। स्त्रियों के मासिक धर्म के दोषों को दूर करती है।

अनुपान—दूध, मक्खन, मलाई

स्वर्णमाक्षिक भस्म— १ तोला १।) मात्रा—३ रत्ती तक

,, ,, —नं० २ ,, ।।=)

रक्तविकार शोथ, प्रमेह, अर्श, अन्त्र रोग खाँसी और नेत्र रोगों को हितकारी है, स्त्रियों के गर्भाशय और प्रसूत रोग मे लाभदायक है।

संखिया भस्म—(मल्ल) १ तोला ४) मात्रा—¼ रत्ती

श्वास, हृदय शूल, दिल का धड़कना, मंदाग्नि, गठिया व कालिज को नष्ट करती है, रक्त उत्पन्न करती है, कामोत्तेजक और पौष्टिक है।

स्फटिकमणि भस्म—नं० १ १ तोला १०) मात्रा—१ रत्ती
,, ,, —नं० २ ,, ५)

पुराना बुखार, मुंह से खून आना खून की कमी, और निर्बलता को दूर करती है। सूजाक और आतशक को दूर करती और तन्दुरुस्ती व उम्र को बढाती है।

स्फटिका भस्म—(फिटकरी) १ तोला ≈) मात्रा—४ से ८ रत्ती

खुश्की लाती है, मिश्री और दुग्ध के साथ खाने से, गुर्दे और मसाने के जख्म अच्छे हो जाते है, खून को बन्द करती है।

सप्तरत्न भस्म—१ तोला १२०) मात्रा—¼ रत्ती

जीर्णज्वर मस्तिष्क के रोग खून की कमी, वीर्य की निर्बलता को दूर करती है, वृद्ध पुरुष को युवा बनाती है।

हरिताल भस्म—(स्याम) १ तोला ५) मात्रा—१ रत्ती
,, ,, —(सुर्ख) ,, २॥)
,, —(कृष्ण) ,, ।)

रक्तदोष उपदश, जीर्णज्वर व फालिज को दूर करती है वीर्य कान्ति और शक्ति को बढ़ाती है।

हरिताल गोदन्ती भस्म— १ तोला।≈)
,, ,, ,, —नं० २ ,, ≈)

श्वास, खांसी, और सर्व प्रकार के ज्वरो मे लाभदायक है।

हिंगुल भस्म—१ तोला ४) मात्रा—$\frac{1}{4}$ से $\frac{1}{2}$ रत्ती

कुष्ठ, श्वास व खॉसी को दूर करती है, वायु रोगों में उत्तम है, शरीर को शक्तिवान बनाती है, कामोत्तेजक है।

हीरा भस्म—१ रत्ती २०)

य भस्म अनुपान भेद से सभी रोगों मे दीजाती है, काम शक्ति बढ़ाने में अद्वितीय है, वृद्ध भी युवा सदृश बल वीर्य युक्त और पराक्रमी बन जाता है शरीर की गुलझटे मिट जाती है, स्त्रियो का बाझपन दूर हो जाता है। इसके गुण अनेक है।

अनुपान -मलाई, मक्खन, मधु

मणि पिष्टी

इनके गुण भी इनकी भस्मो से ही मिलते हुए है इसलिये इनके मूल्य ही यहाँ दिये गये है, गुण नहीं —

गोमेद पिष्टी—		१ तोला	२५)
नीलम पिष्टी—		,,	१२०)
पन्ना पिष्टी —		,,	८०)
	— नं० २	,,	२५)
पुखराज पिष्टी—		,,	७५)
,,	— नं० २	,,	१५)
प्रवाल पिष्टी—		,,	।।।)
माणिक पिष्टी—		,,	३५)
,,	— नं० २	,,	१०)
मुक्ता पिष्टी —		,,	४०)
,,	— नं० २	,,	२४)
वैक्रान्त पिष्टी—		,,	८)
,,	— नं० २		२।।)

रस व गुटिका

अभयनृसिंह रस—१ तोला १।) मात्रा—१ रत्ती
अतिसार और ग्रहणी मे लाभदायक है, चाहे ज्वर भी साथ हो।

अनुपान—जीरक चूर्ण और मधु

अचिन्त्यशक्ति रस [भै० र०] १ तोला ३) मात्रा—१ रत्ती
सन्निपात और प्रलाप में लाभदायक है।
अनुपान—जल

अर्जिकादि वटी [भै० र०] १ तोला ३) मात्रा—१ माशा
यह वटिका वीर्य स्तम्भन करती है और वृष्य है
अनुपान—अंगूरासव

आदित्य वटी [योग० र०] १ तोला ।।) मात्रा—१ रत्ती
यह अजीर्णनाशक और अग्निप्रदीपक है।
अनुपान—जल

अगस्त्यसूतराज रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—१ रत्ती
अतिसार और ग्रहणी मे अत्यन्त लाभदायक है।
अनुपान—जल

अग्निकुमार रस [भै० र०] १ तोला ।≈) मात्रा—१ रत्ती
अग्निमन्द, ग्रहणी, अतिसार मे लाभप्रद है।
अनुपान—जल

अग्निमुख लोह [भै० र०] १ तोला ।।।) मात्रा—२ माशे

बवासीर व अग्निमान्द्य में लाभदायक है।

अनुपान—मधु

अग्निमुख मण्डूर [भै० र०] १ तोला ।।।) मात्रा—५ रत्ती

शोथ और रक्त की कमी में लाभदायक है।

अनुपान—छाछ

अग्निसूनु रसेन्द्र [भै० र०] १ तोला ।।।) मात्रा—२ रत्ती

अग्निमान्द्य को नष्ट करता है, ग्रहणी, ज्वर, अरुचि, शूल, गुल्म, पाण्डु अर्श और उदर रोगों में लाभदायक है।

अनुपान—पिप्पली चूर्ण, घृत अथवा तक्र

अग्नितुण्डी रस [भै० र०] १ तोला ।) मात्रा—२ गोलियाँ

अग्निमान्द्य, पेट का दर्द व रक्त की कमी में लाभदायक है।

अनुपान—जल, भोजन के बाद

अजीर्णकण्टक रस [भै० र०] १ तोला ।।) मात्रा—३ रत्ती

अग्नि की वृद्धि, हैजा, अजीर्ण तथा वात रोगों को दूर करता है।

अनुपान—जल

अमृतार्णव रस [भै० र०] १ तोला ।।) मात्रा—४ रत्ती

सर्व प्रकार के अतीसार, शूल, ग्रहणी, बवासीर, कास, अम्लपित्त, गुल्म आदि रोग नष्ट होते हैं।

अनुपान—शीतल जल या बकरी का दूध

अमृतांकुर लोह— [भै० र०] १ तोला २॥) मात्रा—१ रत्ती

सर्व प्रकार के कुष्ठ, पाण्डु, प्रमेह, सन्धियों का शोथ, रक्तविकार, श्वास, कास, क्षय को दूर कर शुक्र, बल, बुद्धि, कान्ति व अग्नि को दीप्त करता है।

अनुपान—नारियल का पानी

आनन्दभैरव रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—१ रत्ती

सन्निपात में लाभदायक है।

अनुपान—आक की जड़ का क्वाथ

आनन्दभैरव रस [भै० र०] १ तोला ॥) मात्रा—½ रत्ती

सर्व प्रकार के अतीसार में लाभदायक है।

अनुपान—कुड़े की छाल व इन्द्र जौ चूर्ण—समान भाग

आनन्दोदय रस [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—२ रत्ती

मन्दाग्नि, ग्रहणी, अरुचि, पाण्डु आदि रोगों में अत्यन्त लाभप्रद है।

अनुपान—पान

आमवातारि रस [भै० र०] १ तोला ।) मात्रा—६ रत्ती

आमवात में लाभदायक है।

अनुपान—एरण्ड तैल वा त्रिफला जल

आमवातारि वटिका [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—४ रत्ती

गठिया, गुल्म, उदर रोग, अम्लपित्त, पाण्डु, रक्त न्यूनता, शोथ, सिरदर्द, कण्ठमाला, यकृत् व प्लीहा रोग आदि में लाभ दायक है, पाचक व भेदक है।

अनुपान—त्रिफला जल

आमवातेश्वर रस [भै० र०] १ तोला ॥) मात्रा—२ रत्ती

अग्निदीपक, आमवातनाशक, गुल्म अर्श, अतिसार शोथ, रक्तन्यूनता और उदर रोगों इत्यादि को नष्ट करता है।

अनुपान—जल

आरोग्यवर्धिनी वटी [रस० रा० सु०] १ तोला ॥) मात्रा-२ रत्ती

प्रसूतिज्वर तथा सर्व प्रकार के ज्वरों में लाभदायक, उदर रोगनाशक, दीपक, पाचक, क्षुधावर्धक व मल शोधक है।

अनुपान—जल

आरोग्यसागर रस [रस० रा० सु०] १ तोला ४) मात्रा—२ रत्ती

पाण्डु, अरुचि, शोथ, आध्मान, श्वास, अग्निमान्द्य, ज्वर और अनेक प्रकार के रोगों में लाभप्रद है।

अनुपान—जल

इच्छाभेदी रस [भै० र०] १ तोला ।=) मात्रा—२ रत्ती

उदर रोगों में लाभकारी व रेचक है।

अनुपान—मिश्री, मिश्रित जल

इन्द्र वटी [भै० र०] १ तोला १॥) मात्रा—२ रत्ती

सर्व प्रकार के प्रमेह और केवल मूत्र की अधिकता में भी लाभकारी है।

अनुपान—जल

इन्दु वटी [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—२ रत्ती

कान के सम्पूर्ण रोग, वायुरोग और प्रमेह में गुणकारी है।

अनुपान—आवला स्वरस

इन्दुशेखर रस [भै० र०] १ तोला १।।) मात्रा—२ रत्ती
गर्भिणी के ज्वर, श्वास, कास, शिरोवेदना, रक्तातिसार, वमन, मन्दाग्नि, आलस्य तथा निर्बलता आदि रोग नष्ट होते हैं।
अनुपान—मधु

उदरामयकुम्भकेसरी रस [रस० रा० सु०] १ तोला १)
मात्रा—१ माशा
यकृत्, प्लीहा, जलोदर, अग्निमान्द्य, गुल्म और अम्ल पित्त का नाश करता है।
अनुपान—देवदारु क्वाथ

उन्मादभञ्जन रस [र० सा० सं०] १ तोला १) मात्रा—१ रत्ती
उन्माद और मृगी में हितकारी है।
अनुपान—मधु

उन्मादगज केसरी [र० रा० सु०] १ तोला ।।।) मात्रा—१ रत्ती
उन्माद और मृगी में लाभदायक है।
अनुपान—मधु

उन्मादहर रस—१ तोला २) मात्रा—१ रत्ती .
उन्माद और मृगी में हितकर है।
अनुपान—घृत

उदयभास्कर रस [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—½ रत्ती
गलित कुष्ठ, मण्डल कुष्ठ, दाद, खाज आदि नष्ट होते हैं।
अनुपान—मधु

उदियादित्य रस [र० रा० सु०] १ तोला ५) मात्रा—२ रत्ती
श्वेत कुष्ठ में लाभदायक है।
अनुपान—मधु और बावची चूर्ण

उदरारि रस [भै० र०] १ तोला १।।) मात्रा—२ रत्ती

जलोदर की उत्तम दवा व रेचक है।

अनुपान—जल

ऊरुस्तम्भारि रस [भै० र०] १ तोला ३) मात्रा—१ रत्ती

कटि व उरु प्रदेश का भारी होना व क्रियानाश में लाभ करता है।

अनुपान—मधु, घृत

एकांगवीर रस [बृ० नि० र०] १ तोला २) मात्रा—१ रत्ती

अर्धांगवात, अर्दित, धनुर्वात, गठिया और वायु रोगों में लाभदायक है।

अनुपान—मधु, घृत

एलादि वटी [भै० र०] १ तोला।=) मात्रा—२ रत्ती

रक्तपित्त, श्वास, कास, वमन, पसली का दर्द आदि मे लाभदायक व वृष्य है।

अनुपान—पान स्वरस

कफकेतु रस [भै० र०] १ तोला ।।) मात्रा—½ रत्ती

कास, श्वास, प्रतिश्याय और कण्ठ रोगों मे लाभदायक है।

अनुपान—मधु व अदरख स्वरस

कस्तूरीभैरव रस [वृहत्] १ तोला १०) मात्रा—१ रत्ती

सन्निपात, ज्वर, आमातिसार, ज्वरातिसार, प्रमेह, सन्निपात का प्रलाप व पसीने आने मे बहुत गुणकारी व गिरती हुई नाड़ी को सम्भालता है।

अनुपान—अद्रक स्वरस

कस्तूरी भैरव [स्वल्प] १ तोला ८) मात्रा—१ रत्ती
सन्निपात मे लाभदायक व निर्बलता को दूर करता है।
अनुपान—अद्रक स्वरस

कनकसुन्दर रस [भै० र०] १ तोला ॥) मात्रा—२ रत्ती
ज्वर, अतिसार, ग्रहणी व मन्दाग्नि में लाभदायक है।
अनुपान—जल

कर्पूर रस [भै० र०] १ तोला ॥।) मात्रा—२ रत्ती
अतिसार, रक्तातिसार व ज्वर को नष्ट करता है।
अनुपान—जल

कटकादिलोह [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—१½ रत्ती
शोथ नाशक है।
अनुपान—दुग्ध

कणाद्य लोह [भै० र०] १ तोला ॥) मात्रा—२ रत्ती
रक्तातिसार में लाभदायक है।
अनुपान—मधु

कल्याणसुन्दराभ्र रस [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—१ रत्ती
श्वास काम, क्षय, वक्ष के रोग, फुप्फुसनिर्बलता, कण्ठ रोग व अन्य रोगों में लाभदायक है।
अनुपान—मधु

क्रव्याद रस वृहत् [भै० र०] १ तोला ॥।) मात्रा—२ रत्ती
अग्निमान्द्य, ग्रहणी, अतिसार व प्लीहा के रोगों को नष्ट करता है।
अनुपान—सैन्धव नमक युक्त तक्र

कांकायन गुटिका [भै० र०] १ तोला ≡) मात्रा—१ माशा

बवासीर मे लाभदायक है।

अनुपान—तक्र

कामलान्तक लोह [भै० र०] १ तोला १।।) मात्रा—४ रत्ती

पाण्डु रोग, रक्तन्यूनता, काम, श्वास, ज्वर, प्लीहारोग और अग्निमाद्य मे लाभदायक है।

अनुपान—मधु

कासलक्ष्मीविलास रस [र० रा० सु०] १ तोला ४) मात्रा—२ रत्ती

सर्व प्रकार की कास श्वास, ज्वर, रक्तन्यूनता, प्रमेह को दूर करता व बल बढ़ाता है।

अनुपान—शीतल जल

कांचनाभ्र रस [भै० र०] १ तोला १०) मात्रा—½ रत्ती

श्वास, कास, क्षय, प्रमेह आदि को नष्ट करता, बल व वीर्य वृद्धि करता है तथा इन्द्री को दृढ़ करता है।

अनुपान—मधु

कासमंहार भैरव रस [भै० र०] १ तोला ।।) मात्रा २ रत्ती

सर्व प्रकार के कास व श्वास को दूर कर, बल, वर्ण, कान्ति तथा जठराग्नि की वृद्धि होती है।

अनुपान—अडूसा, सोठ, छोटी कटेली काथ

कासकुठार रस [भै० र०] १ तोला ।।) मात्रा—२ रत्ती

कास और शिरोरोग नष्ट होते हैं।

अनुपान—अद्रक स्वरस

कालेश्वरस [र० रा० सु०] १ तोला १०) मात्रा—२ रत्ती
कास, श्वास, व कफरोगों में लाभदायक है।
अनुपान—मधु

कालविध्वंसक रस—१ तोला १०) मात्रा—१ रत्ती
पाण्डुरोग नाशक व रक्तवर्धक है।
अनुपान—गौ मूत्र व हरीतकी

कालारि रस [यो० चि०] १ तोला ॥) मात्रा—२ रत्ती
वात व्याधि व सन्निपात में लाभकारी है।
अनुपान—मधु

कालाग्निरुद्र रस [र० सा० सं०] १ तोला १॥) मात्रा—२ रत्ती
विसर्प नाशक है।
अनुपान—पीपल चूर्ण व शहद

कामिनीविद्रावण रस [भै० र०] १ तोला ३) मात्रा—२ रत्ती
स्तम्भक व रतिशक्ति वर्धक है।
अनुपान—दुग्ध

कामिनीदर्पघ्न रस [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—½ रत्ती
प्रमेह नाशक, वीर्यपुष्टिकर तथा रतिशक्तिवर्धक है।
अनुपान—दुग्ध

क्रिमिमुद्गर रस [भै० र०] १ तोला ।) मात्रा—२ रत्ती
क्रमि और क्रिमि से होने वाले रोगों को नष्ट कर अग्नि को प्रदीप्त करता है।
अनुपान—नागरमोथे का क्वाथ

क्रिमिकालानल रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—१ रत्ती
उदरक्रिमि, अर्श, उदर शूल आदि को दूर कर अग्नि दीप्त करता है।
अनुपान—धनिया तथा ज़ीरा

क्रिमिघातिनी वटिका [भै० र०] १ तोला ॥) मात्रा—४ रत्ती
उत्क्लेश, आलस्य, छींकें आना, वमन, दुर्बलता और सर्व प्रकार के क्रिमि रोगों को नष्ट करता है।
अनुपान—जल

क्रिमिकुठार रस [भै० र०] १ तोला ।≈) मात्रा—४ रत्ती
गुणक्रिमिघातिनी वटिका सदृश
अनुपान—जल

कुष्ठकुठार रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—२ रत्ती
सर्व प्रकार के कुष्ठ नष्ट होते हैं।
अनुपान—घृत व मधु

कुमारकल्याण रस [भै० र०] १ तोला ४०) मात्रा—$\frac{1}{2}$ रत्ती
बच्चों के ज्वर, कास, श्वास, वमन, रक्तन्यूनता, दुर्बलता, अजीर्ण आदि रोग नष्ट होते है।
अनुपान—दुग्ध

खदिरादि वटी [यो० चि० म०] १ तोला ।) मात्रा—४ रत्ती
कास, कफ, गले का बैठना आदि रोग नष्ट होते है।

गंगाधर रस [र० रा० सु०] १ तोला ॥) मात्रा—२ रत्ती
ग्रहणी व अतिसार में लाभदायक है।
अनुपान—तक्र

गर्भविलास रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—४ रत्ती

गर्भिणीशूल, कोष्ठबद्धता, ज्वर, अजीर्ण आदि रोग नष्ट होते हैं।

अनुपान—जल

गंधक वटी [र० रा० सु०] १ तोला ।) मात्रा—२ रत्ती

अग्नि को दीप्त करती है।

गलितकुष्ठारि रस [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—२ रत्ती

गलित कुष्ठ, श्वेत कुष्ठ, रक्तविकार, जलोदर आदि रोगों को नष्ट कर शरीर को कामदेव के समान बनाता है।

अनुपान—शहद व घृत

गगनसुन्दर रस [भै० र०] १ तोला ।।।) मात्रा—२ रत्ती

ज्वरातिसार, रक्तश्राव व उदर शूल को नष्ट करता है।

अनुपान—श्वेत राल व मधु

गर्भचिन्तामणि रस [भै० र०] १ तोला ५) मात्रा—२ रत्ती

स्त्रियों के सन्निपात ज्वर, गर्भा स्त्रियों का ज्वर, प्रदर और दाह में लाभदायक है।

ग्रहणीकपाट रस [भै० र०] १ तोला ।।) मात्रा—२ रत्ती

ग्रहणी, अतिसार, शोथ और ज्वर को नष्ट करता है।

अनुपान—बकरी का दुग्ध

ग्रहणी गजाङ्कुश रस [भै० र०] १ तोला ।।) मात्रा—१ रत्ती

ग्रहणी आदि रोगों में लाभदायक है।

ग्रहणीगजेन्द्र वटिका—१ तोला १) मात्रा—२ रत्ती

ग्रहणी, ज्वरातिसार, शूल, गुल्म, अजीर्ण और कृमि रोगो में लाभदायक है।

अनुपान—बकरी का दुग्ध

ग्रहणीगजकेसरी [र० रा० सु०] १ तोला २।।) मात्रा—३ रत्ती

अतिसार, आमातिसार को दूर कर बल देता है।

अनुपान—मधु

गांधार रस [अ० सा०] १ तोला ।।) मात्रा—२ रत्ती

अतिसार तथा रक्तातिसार मे लाभप्रद है।

अनुपान—श्वेत जीरा

गुल्मशार्दूल रस [भै० र०] १ तोला ।।।) मात्रा—२ रत्ती

गुल्म, कामला, उदर, प्लीहा, यकृत् रोगो मे लाभदायक है व रेचक है।

अनुपान—अदरक स्वरस या उष्ण जल

गुञ्जाभद्र रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—२ रत्ती

उरुस्तम्भ रोग नष्ट करता है।

अनुपान—हींग व सैधा नमक

गुल्मकालानलरस बृहत् [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—२ रत्ती

सर्व प्रकार के गुल्म रोगो मे उपयोगी है।

अनुपान—शहद व हरीतकी

गोपीजल रस—१ तोला ।।) मात्रा—२ रत्ती

उदर रोग, जलोदर, गुल्मरोग में लाभदायक व रेचक है।

अनुपान—मिश्री, मिश्रित जल

गोरख वटी [र० रा० सु०] १ तोला ३) मात्रा—१ रत्ती
स्वर भंग में लाभदायक है।

घोड़ाचोली रस [र० रा० सु०] १ तोला ॥) मात्रा—२ रत्ती
कोष्ठबद्धता, उदर शूल, आध्मान, ज्वर, वायुरोग, प्लीहा रोग व उदर रोगों में लाभकारी है।

चन्दनादि लोह [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—२ रत्ती
सर्व प्रकार के विषमज्वर दूर होते हैं।
अनुपान—नागरमोथा क्वाथ

चण्डेश्वर रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—½ रत्ती
सर्व प्रकार के ज्वरों को दूर करता है।
अनुपान—अद्रक स्वरस

चतुर्भुज रस [भै० र०] १ तोला २०) मात्रा—¼ रत्ती
उन्माद, अपस्मार, श्वास, कास, मन्दाग्नि, हाथ पैर व शरीर का कांपना आदि रोग नष्ट होते हैं।
अनुपान—मधु तथा त्रिफला

चन्द्रप्रभा वटी [भै० र०] १ तोला ॥।) मात्रा—४ रत्ती
अर्श, भगंदर, रक्तन्यूनता, पाण्डु, मन्दाग्नि, यक्ष्मा कृच्छ्र, प्रमेह, शुक्रदोष आदि रोगों को दूर कर बुद्धि की वृद्धि करती है व नेत्रों की ज्योति को तीव्र करती है।
अनुपान—जल अथवा दुग्ध

चन्द्रामृत रस [भै० र०] १ तोला ॥) मात्रा—४ रत्ती
कास, श्वास, दाह व भ्रम को नष्ट कर अग्नि दीप्त करता है।
अनुपाद—मधु

चतुर्मुख कृष्ण [भै० र०] १ तोला ७) मात्रा—१ रत्ती

शरीर की झुर्रियां, बालश्वेत होना यक्ष्मा, रक्तन्यूनता, प्रमेह, श्वास, मन्दाग्नि, अम्लपित्त, अपस्मार, उन्माद, रक्तविकार आदि रोगों को दूर कर पुष्टि करता है।

अनुपान—मधु, त्रिफला

चन्द्रकला रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—२ रत्ती

स्त्री को अति रक्तश्राव होना, मुख से रक्त आना, मूत्र कृच्छ, अग्निमान्द्य, बाह्य तथा अन्त्र दाह में लाभकारी है।

अनुपान—शीतल जल

चण्डभैरव रस [भै० र०] १ तोला ।।।) मात्रा—१ रत्ती

मृगी को नष्ट करता है।

अनुपान—हींग, काला नमक

चित्रकादि गुटिका [भै० र०] १ तोला ।।) मात्रा—४ रत्ती

आम रस का परिपाक तथा अग्नि दीप्त होती है।

अनुपान—जल

चिन्तामणि रस—१ तोला १।।) मात्रा—१ रत्ती

सर्व प्रकार के ज्वरों को नष्ट करता है।

अनुपान—जल

चिन्तामणि रस (सस्वर्ण) [भै० र०] १ तोला १०) मात्रा-१ रत्ती

अरुचि, दाह, वमन, भ्रम, शिरोवेदना, क्षय, सोमरोग, प्रदर रोग, सूतिका रोग, कास, आदि को नष्टकर बल व अग्नि को बढ़ाता है।

अनुपान—पीपल घृत

चित्रकादि लोह [भै० र०] १ तोला ।।) मात्रा—१ से १।। माशे

मंदाग्नि, ज्वर, रक्तन्यूनता. पाण्डुरोग, यकृत् तथा प्लीहा रोग आदि नष्ट होते हैं।

अनुपान—जल

चिन्तामणि चतुर्मुख रस [भै० र०] १ तोला २०) मात्रा–१ रत्ती

शरीर में झुर्रियाँ पड़ना, बाल सफेद होना, क्षय, रक्त-न्यूनता, अम्लपित्त, प्रमेह, कास, मंदाग्नि का नष्ट कर आयु को बढ़ाता है। स्त्रियों के लिये सन्तान दाता है।

अनुपान—मधु, त्रिफला

चित्रविभांडुको रस [भै० र०] १ तोला ४) मात्रा— ½ रत्ती

भंगदर को दूर करता है।

अनुपान—मधु या घृत

छर्द्यन्तक रस [स्वर्ण मुक्तामिश्रित] १ तोला १०) मात्रा—३ रत्ती

वमन, उत्क्लेश, अम्लपित्त, अरुचि, हृदय की निर्बलता. राजयक्ष्मा में लाभदायक है।

अनुपान—मधु

ज्वरकेसरी रस [भै० र०] १ तोला ।।।) मात्रा—१ रत्ती

सम्पूर्ण ज्वरों को नष्ट करता है।

अनुपान—मिश्री मिश्रित जल, अथवा पिप्पली और जीरक

ज्वरकुंजरपारीन्द्र रस [भै० र०] १ तोला ५) मात्रा—३ रत्ती

संतत, सतत. अन्येद्युष्क, तृतीयक, चतुर्थक आदि सम्पूर्ण ज्वरों को नष्ट करता है, कास, श्वास, प्रमेह, शोथ पाण्डु. कामला, ग्रहणी, क्षयादि रोगों में अत्यन्त हितकारी व अग्निदीपक है।

अनुपान—पान स्वरस

ज्वरारिअभ्र [भै० र०] १ तोला २।।) मात्रा—२ रत्ती

सर्व प्रकार के ज्वर, सन्निपात, यकृत्, प्लीहा, वायुगोला, मन्दाग्नि श्वास, कास, वमन, भ्रम को दूर करता है।

अनुपान—मधु या अद्रक स्वरस

ज्वरगजहरि [ज्वरगज केसरी] १ तोला १) मात्रा—२ रत्ती

ज्वर को नष्ट करता है।

अनुपान—अदरख का स्वरस

जलोदरारि रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—½ रत्ती

जलोदर को दूर करता है व पेट की तमाम खराबियों को नष्ट करता है।

अनुपान—जल

जयसुन्दर रस [र० रा० सु०] १ तोला १०) मात्रा—१ रत्ती

स्त्रियों के बांझपन को दूर करता है।

अनुपान—दुग्ध

ज्वरधूमकेतु रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—३ रत्ती

नवीन ज्वर नाशक है।

अनुपान—अद्रक स्वरस

ज्वरघ्न वटी [वृ० नि० र०] १ तोला ।।) मात्रा—२ रत्ती

विषमज्वर, त्रिदोषज्वर नष्ट करता है।

अनुपान—मधु तथा शीतल जल

ज्वरमुरारि वटी [भै० र०] १ तोला ।।) मात्रा—१ रत्ती

अजीर्ण ज्वर, सारे शरीर का जकड़ जाना, खांसी, क्षय, वायु रोग नष्ट होते हैं तथा अठारह प्रकार के कुष्ठों को दूर करता है।

अनुपान—मधु

जातिफलादि वटी [भै० र०] १ तोला ।।) मात्रा—२ रत्ती
सर्व प्रकार के अतिसार, ग्रहणी, अर्श, अम्लपित्त और खांसी का नष्ट करती है।
अनुपान—मधु

ज्वालानल रस [र० कामधेनु] १ तोला ।।।) मात्रा—४ रत्ती
अतिसार, अजीर्ण, ग्रहणी, अग्निमान्द्य, अरुचि, उत्क्लेश इत्यादि रोग नष्ट करता है।
अनुपान—मधु

जीर्णज्वरारि रस [र० रा० सु०] १ तोला १) मात्रा—२ रत्ती
जीर्णज्वर को नष्ट करता है।
अनुपान—मधु

जीर्णज्वराङ्कुश रस [वृ० नि० र०] १ तोला २।।) मात्रा-१ माशा
जीर्णज्वर, क्षय, अग्निमान्द्य, खांसी, खून की कमी, वायु-गोला, अर्श, अरुचि आदि नष्ट होते हैं। कान्ति, बुद्धि, वीर्य की वृद्धि होकर, शरीर सुन्दर हो जाता है।
अनुपान—मधु

जीर्णज्वरहरि रस—१ तोला १)
गुण जीर्णज्वरारि रस के सदृश हैं।

तरुणज्वरारि रस [र० रा० सु०] १ तोला ।।) मात्रा—२ रत्ती
मलेरिया ज्वर को दूर करता है।
अनुपान—जल व पान

तक्र वटी [भै० र०] १ तोला १।।) मात्रा—२ रत्ती
शोथ, ग्रहणी, मन्दाग्नि व पाण्डु रोग को शान्त करती है।
अनुपान—तक्र

तरुणानन्द रस [र० रा० सु०] १ तोला २) मात्रा—४ रत्ती
यक्ष्मा, श्वास, कास, स्वरभग, अरुचि, कामला, रक्त-न्यूनता, जीर्णज्वर, अतिसार, शोथ व क्षय में लाभदायक, वीर्य वर्धक, नेत्रों के लिये हितकर है।
अनुपान—च्यवनप्राशावलेह

तृष्णाछर्दिहरो रस—१ तोला १) मात्रा—३ रत्ती
तृष्णा व वमन को दूर करता है।
अनुपान—चन्दन जल

तालकेश्वर रस लघु [र० चि० म०] १ तोला १) मात्रा—१ रत्ती
सर्व प्रकार के कुष्ठों को नष्ट करता है।
अनुपान—मधु, बावची

तारकेश्वर रस [र० रा० सु०] १ तोला २।।) मात्रा—१ रत्ती
बहुमूत्र रोग नष्ट करता है।
अनुपान—गूलर के पक्के फलों का चूर्ण और शहद

त्रिफला मण्डूर [भै० र०] १ तोला ।।) मात्रा—४ रत्ती
अम्लपित्त व शूल को नष्ट करता है।
अनुपान—जल

त्रिविक्रम रस [र० रा० सु०] १ तोला १।।) मात्रा—२ रत्ती
वृक्क व मूत्राशय की अश्मरी को नष्ट करता है।
अनुपान—नीबू जल

त्रैलोक्यसुन्दर रस [र० रा० सु०] १ तोला १।।) मात्रा—२ रत्ती
पाण्डु, क्षय, वात व्याधि व उदर रोगों को शान्त करता है।
अनुपान—मधु

त्रैलोक्यचिन्तामणी रस [भै० र०] १ तोला २०) मात्रा—१ रत्ती

यह रस समस्त रोगों को नष्ट करता है, जठराग्नि, बल, वर्ण व वीर्य की वृद्धि करता है, कास, श्वास, क्षय, रक्तन्यूनता, यकृत्, प्लीहा, ज्वर अर्श व रक्त के अनेकों रोग नष्ट होते हैं।

अनुपान—शहद व पीपल

त्रिनेत्राख्य रस [भै० र०] १ तोला २॥) मात्रा—१ रत्ती

शोथ रोग नष्ट होते हैं।

अनुपान—एरण्ड या अपामार्ग स्वरस

त्र्यम्बकाभ्र रस [भै० र०] १ तोला २॥) मात्रा—१ रत्ती

स्वरभेद, यकृत्, प्लीहा, कास, श्वास, ज्वर आदि मे लाभदायक, वीर्यवर्धक तथा रसायन है।

अनुपान—मधु

त्र्यम्बकेश्वर रस [र० रा० सु०] १ तोला ५) मात्रा—२ रत्ती

अर्धाङ्ग व कम्प वात मे लाभदायक है।

अनुपान—मधु

दन्तोद्भेदगदान्तक [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—२ रत्ती

बालकों के दान्त सुगमता से निकल आते हैं, ज्वर व आक्षेप को दूर करता है।

अनुपान—मधु टंकण

दाहान्तक रस [भै० र०] १ तोला ४) मात्रा—½ रत्ती

दाह व पित्तज मूर्च्छा को दूर करता है।

अनुपान—आमला स्वरस

दिव्यामृत कल्प [र० रा० सु०] १ तोला १०) मात्रा—२ रत्ती

यह एक रसायन है, इसके सेवन से सर्व प्रकार के रोग दूर होते हैं व आयु की वृद्धि होती है। वृद्ध भी युवा सदृश शक्तिमान बन जाता है।

दुग्ध वटी [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—२ रत्ती

संग्रहणी, शोथ, ज्वर नाशक व अग्निप्रदीपक है।

अनुपान—गोदुग्ध वा जल

धात्री लोह [भै० र०] १ तोला ।।।) मात्रा—२ रत्ती

पाण्डु रोग में लाभदायक है।

अनुपान—मधु

धात्री लोह [भै० र०] १ तोला ।।।) मात्रा—३ से ६ रत्ती

भोजन के पूर्व खाने से पैत्तिक एवं वातिक रोग शान्त होते हैं, भोजन के मध्य में खाने से विष्टम्भ नष्ट होता है तथा भुक्त अन्न विदग्ध नहीं होता। भोजनान्तर सेवन करने से अन्न भी शीघ्र पच जाता है। इसके सेवन से शूल तथा अम्लपित्त सहसा नष्ट हो जाते हैं।

धात्री लोह [भै० र०] १ तोला १।) मात्रा –४ से ८ रत्ती

आठों प्रकार का शूल, परिणाम शूल, अम्लपित्त आदि रोग नष्ट होते हैं।

सेवनविधि—भोजन से पूर्व मध्य तथा अन्त में घृत के साथ

लक्ष्मीविलास [भै० र०] १ तोला १।।) मात्रा—१ रत्ती

कास, श्वास, यक्ष्मा, ज्वर, पाण्डु, प्रमेह आदि रोगो में लाभकारी है बल दाता व पुष्टिकारक है।

अनुपान—शीतल जल

नयनचन्द्र लोह [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—२ रत्ती
सम्पूर्ण नेत्र रोगों में लाभदायक है।
अनुपान—जल

नस्यपुष्पान्तक रस [भै० र०] १ तोला १।।) मात्रा—२ रत्ती
योनिशूल, योनिदाह, रजोलोप आदि रोगों को नष्ट करता है।
अनुपान—जल

नवज्वरहरि [भा० प्र०] १ तोला १।।) मात्रा—२ रत्ती
सर्व प्रकार के ज्वरों को दूर करता है।
अनुपान—जल

नवज्वरेभसिंह [भै० र०] १ तोला १।।) मात्रा—२ रत्ती
नवज्वर व संग्रहणी में लाभदायक है।
अनुपान—अद्रक स्वरस

नवायस लोह [भै० र०] १ तोला ।।) मात्रा—४ रत्ती
रक्तन्यूनता, हृदय की दुर्बलता, रक्तविकार, अर्श व पाण्डु रोग नष्ट होते हैं।
अनुपान—मधु तथा घृत

नयनामृत लोह—१ तोला २) मात्रा—२ रत्ती
नेत्र विकारों में लाभदायक है।

नाराच रस [भै० र०] १ तोला ।) मात्रा—१ रत्ती
प्लीहा व वायु रोग को नष्ट करता है।
अनुपान—जल

नागार्जुनाभ्र रस [भै० र०] १ तोला २१) मात्रा—१ रत्ती
हृद्रोग, फुफ्फुस, व्रण, मुख से रक्त आना, हाथ पैरों का शोथ, जीर्णज्वर और उदर रोग दूर होते है। बलकारक, वीर्यवर्धक व रसायन है।

अनुपान—मधु

नागार्जुनाभ्र रस नं० २—१ तोला १॥) मात्रा—१ रत्ती
गुण ऊपर वाले के समान

नारायण रस [भै० र०] १-तोला ४) मात्रा—२ रत्ती
नाड़ी व्रण, कण्ठ माला, दाद, शिरोवेदना, अंगमर्द व विशेष कर भगन्दर में लाभदायक है।

अनुपान—जल

नित्यानन्द रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—२ रत्ती
श्लीपद (पाव का हाथी जैसा मोटा होजाना) कण्ठ माला, अर्श व क्रिमि रोग मे लाभदायक है।

अनुपान—जल

प्रचन्ड रस [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—½ रत्ती
नवीनज्वर में लाभप्रद है।

अनुपान—अद्रक स्वरस

प्रतापमार्तण्ड [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—½ रत्ती
मलबन्ध युक्त नवज्वर मे लाभकारी है।

अनुपान—जल

पंचामृत लोह [भै० र०] १ तोला ॥) मात्रा—३ रत्ती
रक्तन्यूनता, पाण्डु, जीर्णज्वर, यकृत्, प्लीहा, श्वास,

कास, आदि रोग नष्ट होते है, अग्निप्रदीपक, पौष्टिक तथा कान्ति वर्ध है।

अनुपान—तालमखाना चूर्ण

पंचामृत वटी [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—४ रत्ती

सर्व प्रकार की खांसी, श्वास, तृष्णा, ज्वर, दाह, रक्त-न्यूनता को नष्ट करती है व अग्नि को प्रदीप्त करती है।

अनुपान—मधु व अद्रक स्वरस

पंचानन रस [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—२ रत्ती

प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, मूत्र दाह आदि में लाभदायक है।

अनुपान—शीतल जल

पंचामृत रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—१ रत्ती

जलदोष से उत्पन्न शोथ, जलोदर, शिरोवेदना और प्रतिश्याय में लाभदायक है।

अनुपान—अद्रक स्वरस

पंचवक्र रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—½ रत्ती

सन्निपात में लाभदायक है।

अनुपान—अद्रक स्वरस

प्रदरान्तक लोह [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—२ रत्ती

रक्त, पीत, नील वर्ण का प्रदर, योनि नलो व कमर दर्द, मन्दाग्नि, रक्तन्यूनता, हृदय की दुर्बलता आदि रोग नष्ट होकर शरीर पुष्ट हो जाता है, वर्ण स्वच्छ हो जाता है।

अनुपान—मधु, घृत अथवा मिश्री

प्रदररिपु [भै० र०] १ तोला ।।) मात्रा—२ रत्ती
कष्ट साध्य प्रदर रोग नष्ट होता है।
अनुपान—मधु

पाषाणभेदी रस [र० रा० सु०] १ तोला २) मात्रा—२ रत्ती
यह वृक्क व मूत्राशय की पथरी व कंकरियों को निकालता है।
अनुपान—पाषाण भेद के क्वाथ के साथ

पानीय वटिका [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—¼ रत्ती
तीव्र सन्निपात में लाभदायक है, मन्दाग्नि, कामला, ग्रहणी, श्वास, कास मे हितकर है।

प्राणवल्लभ रस [भै० र०] १ तोला ।।।) मात्रा—½ रत्ती
गुल्म, कामला, रक्तन्यूनता, प्रमेह, रक्तदोष, कण्ठमाला आदि राग नष्ट होते हैं।
अनुपान—जल या दुग्ध

पाण्डु पंचानन रस [भै० र०] १ तोला ।।=) मात्रा—२ रत्ती
प्लीहा, रक्तन्यूनता, यकृत इत्यादि सर्व रोग नष्ट होते हैं, बल वर्ण अग्नि की वृद्धि करता है।
अनुपान—ऊष्ण जल

पाशुपत रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—१ रत्ती
दीपन, पाचन है तथा विशूचिका को नष्ट करता है।
अनुपान—छाछ

प्राणदा गुटिका [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—१ रत्ती
रति शक्ति को बढ़ाता है, बल व पौरूष देता है।
अनुपान—मधु

प्लीहारि वटी [भै० र०] १ तोला १॥) मात्रा—२½ रत्ती

यकृत्, प्लीहा, मन्दाग्नि, श्वास, कास, वमन प्रभृति रोगों को नष्ट करती है।

अनुपान—जल

प्लीहारि रस [भै० र०] १ तोला ॥) मात्रा—१ रत्ती

यकृत्, प्लीहा, श्वास, कास, अर्श और आमवात रोगों मे लाभप्रद है।

अनुपान—अदरख स्वरस

पुष्पधन्वा रस [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—१ रत्ती

रतिशक्ति बढ़ाता, बल व पौरुष को देता है।

अनुपान—मधु

पुनर्नवादि मण्डूर [भै० र०] १ तोला ।≈) मात्रा—३ रत्ती

पाण्डु, शोथ, शूल, अर्श, प्रमेह तथा गुल्म रोग नष्ट करता है।

अनुपान—मधु

पूर्णचन्द्र रस [भै० र०] १ तोला ३) मात्रा—२ रत्ती

यह अत्यन्त शक्तिप्रद औषध है।

अनुपान—मधु, घृत

पूर्णचन्द्र रस [वृहत्] १ तोला ६) मात्रा—२ रत्ती

रति शक्ति बढ़ाता है, मस्तिष्क निर्बलता, स्नायुविक दुर्बलता व यक्ष्मा मे लाभदायक है। वृष्य और रसायन है, इसके सेवन करने वाला मनुष्य बहुत सी मदमस्त स्त्रियों के मान को भंग करसकता है।

अनुपान—मधु व घृत, ऊपर से पान खाना

फिरंगगजकेसरी—१ तोला ३) मात्रा—२ रत्ती
आतशक में लाभदायक है।
अनुपान—मधु

बडवानल रस [भै० र०] १ तोला ।।) मात्रा—४ रत्ती
मन्दाग्निनाशक है।
अनुपान—मधु

ब्रह्म वटी [र० रा० सु०] १ तोला १।।) मात्रा—१ रत्ती
घोर सन्निपात में लाभकारी है।
अनुपान—काली मिर्च, अदरक स्वरस

बालरोगान्तक रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—½ रत्ती
बच्चों के सन्निपात, ज्वर, आम और कास रोग में हित-कर है।
अनुपान—मधु

बालो रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—¼ रत्ती
त्रिदोष ज्वर, जीर्णज्वर, कास, शूल व बालकों के प्रत्येक रोग को दूर करता है।
अनुपान—पान स्वरस

भल्लातक लोह—१ तोला २) मात्रा—२ रत्ती

भगन्दरारि रस [र० रा० सु०] १ तोला १।।) मात्रा—१ रत्ती
भगन्दर व गुदा के पास के व्रणों के लिये लाभदायक है।
अनुपान—मधु

भूतभैरव रस [र० रा० सु०] १ तोला १।) मात्रा—२ रत्ती

सर्व प्रकार के कुष्ठ विशेषकर कफजन्य कुष्ठों में लाभ दायक है।

अनुपान—मधु

मृत्युञ्जय रस [भै० र०] १ तोला ।≈) मात्रा—१ रत्ती

वातज्वर, सन्निपातज्वर, विषमज्वर, जीर्णज्वर और वात-व्याधि मे लाभदायक है।

अनुपान—मधु, अदरख स्वरस

महामृत्युंजय रस [र० रा० सु०] १ तोला १) मात्रा—२ रत्ती

सर्व प्रकार के ज्वरो एव सन्निपात मे लाभदायक है।

अनुपान—मधु

महामृत्युंजय लोह [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—१ रत्ती

यकृत्व्रण, सर्व प्रकार के ज्वर, प्लीहा व यकृत् मे लाभ-दायक है।

अनुपान—मधु

महाज्वरांकुश रस [भै० र०] १ तोला ।।) मात्रा—२ रत्ती

आठो प्रकार के ज्वर नष्ट होते हैं।

अनुपान—मधु

महोदधि रस [भै० र०] १ तोला ।।) मात्रा—२ रत्ती

अग्नि प्रदीपक है।

अनुपान—जल

महाराजनृपतिवल्लभ रस [भै० र०] १ तोला २) मात्रा-४ रत्ती

ग्रहणी, मन्दाग्नि, क्रिमि, रक्तन्यूनता, वमन, प्लीहा, अर्श,

प्रमेह, हृदयनिर्बलता, मुंह मे खट्टा पानी आना आदि रोग नष्ट होते हैं।

अनुपान—मधु, अद्रक स्वरस

महागन्धक रस [भै० र०] १ तोला ॥) मात्रा—६ रत्ती

ज्वर, ग्रहणी, श्वास, कास आदि रोग नष्ट होते है। स्त्रियो व बच्चो की बीमारियो मे अत्यन्त प्रशस्त है, जठराग्निप्रदीपक है।

अनुपान—मधु

महाभ्र वटिका [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—१ रत्ती

ग्रहणी, ज्वर, अतिसार, श्वास, कास, क्षय, प्रतिश्याय, अजीर्ण आदि रोगो में लाभकारी है।

अनुपान—मधु

महाशंख वटी [भै० र०] १ तोला ।) मात्रा—२ रत्ती

अग्निप्रदीपक, अर्श और ग्रहणी मे लाभदायक है।

अनुपान—जल

महाश्वासारि लोह [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—२ रत्ती

श्वास, कास व फुफ्फुस रोगो मे लाभदायक है।

अनुपान—मधु

महालक्ष्मीविलास रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—२ रत्ती

शिरोरोग मे लाभदायक है।

अनुपान—मधु

मदनकामदेव रस [शा० ध०] १ तोला ३) मात्रा—२ रत्ती

वीर्यवर्धक, पुरुषत्व व शक्तिदायक है।

अनुपान—मधु

मन्मथाभ्र रस [भै० र०] १ तोला ३) मात्रा—२ रत्ती

विषय लोलुप मनुष्यों के काम की वस्तु है, वृद्ध पुरुष भी युवा बनजाता है, वाजीकरण व अग्निप्रदीपक है।

अनुपान—दुग्ध

महालक्ष्मीविलास [नारदीय] १ तोला ४) मात्रा—३ रत्ती

वृद्ध पुरुष को तरुण के सदृश बनाता है, इसके सेवन से कभी वीर्य क्षय नहीं होता, न कभी लिङ्गेन्द्रिय शिथिल होती है। अनेक स्त्रियों को सन्तुष्ट कर सकता है व अनेक रोगों में लाभदायक है।

अनुपान—मधु, दुग्ध

मूत्रकृच्छ्रान्तक रस [भै० र०] १ तोला १२) मात्रा—½ रत्ती

मूत्रकृच्छ्र में लाभदायक है।

अनुपान—शीतल जल अथवा चन्दनासव

मूत्रकृच्छ्रान्तक रस [र० रा० सु०] १ तोला ४) मात्रा—२ रत्ती

पेशाब की जलन को दूर करता है।

अनुपान—शीतलजल

मेहमुद्गर रस [भै० र०] १ तोला ४) मात्रा—४ रत्ती

प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, रक्तन्यूनता, ज्वर, मन्दाग्नि आदि रोग नष्ट होते हैं।

अनुपान—जल

मेहकुलान्तक रस [भै० र०] १ तोला ॥) मात्रा—६ रत्ती

प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, रक्तन्यूनता, मूत्राघात में लाभदायक है।

अनुपान—बकरी का दुग्ध

यकृदरि लोह [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—२ रत्ती

यकृत्, प्लीहा, ज्वर, रक्तन्यूनता, पाण्डु, मन्दाग्नि और उदर के अनेक रोगों में लाभदायक है।

अनुपान—जल

यकृत्प्लीहोदरारि लोह [सस्वर्ण] १ तोला ५) मात्रा—२ रत्ती

यकृत्, प्लीहा, कास, जीर्णज्वर, रक्तन्यूनता आदि रोगों में लाभदायक है।

अनुपान—पित्तपापड़ा काथ

यकृद्-प्लीहारि लोह [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—२ रत्ती

यकृत्, प्लीहा, रक्तन्यूनता व मन्दाग्नि मे लाभदायक है।

अनुपान—जल

यक्ष्मान्तक लोह [भै० र०] १ तोला ॥) मात्रा—२ रत्ती

यक्ष्मा, कास, स्वरभेद, क्षतक्षय आदि को नष्ट करता है, बलवर्धक, जठराग्निप्रदीपक एव पुष्टिकर है।

अनुपान—मधु

योगेन्द्र रस—१ तोला २४) मात्रा—१ रत्ती

मृगी, हिस्टीरिया, लकवा, फालिज, गठिया, दिल धड़कना, सुप्तवात आदि वात व्याधियों मे अत्यन्त लाभदायक है।

अनुपान—त्रिफलाक्वाथ

रसशेखर [भै० र०] १ तोला ३) मात्रा—२ रत्ती

गलित कुष्ठ व उपदंश में लाभदायक है।

अनुपान—त्रिफला जल

रत्नगिरि रस [भै० र०] १ तोला २०) मात्रा—१ रत्ती

यह नवज्वर के तीव्र वेग को दूर करता है व हृदय को शक्ति देता है।

अनुपान—पीपल

रसगन्धक कज्जली—१ तोला १) मात्रा—१ रत्ती

राभ्रमंडूरस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—२ माशे

सर्वांगशोथ, कास, श्वास, दाह, अम्लपित्त, कामला, ज्वर, प्लीहा, आमातिसार आदि रोगों को दूर करता है, अग्नि प्रदीपक व वृष्य है।

अनुपान—जल

रसेन्द्र गुटिका [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—४ रत्ती

क्षय, कास, अम्लपित्त, रक्तपित्त, अरुचि आदि रोग नष्ट होते हैं।

अनुपान—बकरी का दूध अथवा मधु

रक्तपित्तान्तक लोह [भै० र०] १ तोला १।।) मात्रा—२ रत्ती

रक्तपित्त तथा अम्लपित्त में लाभदायक है।

अनुपान—जल

रक्तपित्तकुलकुठार [भै० र०] १ तोला ।।) मात्रा—२ रत्ती

सर्व प्रकार के रक्तपित्त में लाभदायक है।

अनुपान—मधु तथा वासा स्वरस

रसराज रस [भै० र०] १ तोला १०) मात्रा—२ रत्ती

अर्धांग वात, अर्दित, कुब्ज, धनुस्तम्भ आदि रोग व वात-व्याधि में लाभदायक है।

अनुपान—दुग्ध

रसमाणिक्य [भै० र०] १ तोला १॥) मात्रा—१ रत्ती

कुष्ठरोग, भगन्दर, वातरक्त, नाडीव्रण, उपदंश, नासारोग व मुख रोगों मे लाभदायक है।

अनुपान—जल अथवा त्रिफला क्वाथ

रजःप्रवर्तिनी वटी [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—२ रत्ती

रजोरोध मे लाभदायक है। तथा रजो कष्ट दूर होता है।

अनुपान—उष्ण जल

रसराजेन्द्र रस [भै० र०] १ तोला ४) मात्रा—१ रत्ती

सर्व अन्त्र रोगों मे लाभदायक है।

अनुपान—जल

राजमृगांक रस [भै० र०] १ तोला ५) मात्रा—१ रत्ती

राजयक्ष्मा, जीर्णज्वर और छाती के रोगो मे अत्यन्त हितकर है।

अनुपान—मधु

रामवाण रस [भै० र०] १ तोला ॥) मात्रा—२ रत्ती

अग्निमान्द्य, वमन, अरुचि, हृल्लास मे गुणकारी है।

अनुपान—जल

लवंगादिवटी—१ तोला ≈) मात्रा—४ रत्ती

अग्निमान्द्य को दूर करती है।

अनुपान—जल

लीलाविलास रस—१ तोला २) मात्रा—१ रत्ती

अम्लपित्त, वमन, दर्द, छाती की जलन में हितकारी है।

अनुपान—दुग्ध, पेठे का स्वरस तथा आँवला

लोकनाथ रस [भै० र०] १ तोला १।।) मात्रा—१ रत्ती

यकृत्, प्लीहा, उदररोग, शोथ, जीर्णज्वर और अग्निमान्द्य मे लाभदायक है।

अनुपान—जल

वडवाग्नि रस [भै० र०] १ तोला ३) मात्रा—२ रत्ती

स्थूलता नष्ट करता है।

अनुपान—जल व मधु

वसन्ततिलक रस [भै० र०] १ तोला ३०) मात्रा—२ रत्ती

प्रमेह, सम्पूर्ण वातरोग, क्षय, उन्माद, अपस्मार प्रभृति रोग नष्ट होते हैं।

अनुपान—मधु

वसन्तमालती [सस्वर्ण] १ तोला १२) मात्रा—२ रत्ती

जीर्णज्वर, विषमज्वर, कास, अतिसार आदि में लाभदायक अग्निप्रदीपक तथा पौष्टिक है।

अनुपान—पिप्पली व शहद

वसन्तकुसुमाकर [भै० र०] १ तोला १५) मात्रा—२ रत्ती

मूत्रातिसार, सोमरोग, प्रमेह, मूत्राघात, अश्मरी, दाह, श्वास, कास, क्षय, निर्बलता प्रभृतिरोग नष्ट होते है, अत्यन्त बलदायक व रसायन है।

अनुपान—मधु

वंगेश्वर रस [स्वर्ण मुक्तायुक्त] १ तोला २।।) मात्रा—२ रत्ती

प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, मूत्रातिसार, राजयक्ष्मा, कास, श्वास, ज्वर, मन्दाग्नि, प्रभृति रोग नष्ट होते है, जठराग्नि, आयु तथा कान्ति की वृद्धि होती है।

अनुपान—मधु

वरुणाद्यलोह [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—१ माशा

मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी, प्रमेह, विषमज्वर में लाभ दायक, बल वर्धक वृष्य तथा आयुष्य है।

अनुपान—मधु

वातचिन्तामणि वृहत [भै० र०] १ तोला १०) मात्रा—२ रत्ती

वातज्वर, पित्तज्वर में लाभदायक है, वृद्ध भी पुनः युवा होकर कन्दर्प के समान होजाता है।

अनुपान—घृत

वातगजेन्द्र सिंह—१ तोला १) मात्रा—२ रत्ती

कृष मनुष्य को स्थूल करता है वृष्य तथा आयुवर्धक है, कुबड़े व लंगड़ेपन को दूर करता व अग्नि को प्रदीप्त करता है।

अनुपान—घृत

वातरक्तान्तक रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—$1\frac{1}{2}$ रत्ती

गम्भीर एव दारुण वात रोगो को नष्ट करता है।

अनुपान—घृत

वातकुलान्तक रस [भै० र०] १ तोला ४) मात्रा—$\frac{1}{2}$ रत्ती

अपस्मार, मूर्च्छा, वातव्याधि रोग नष्ट होते है।

अनुपान—त्रिफला क्वाथ

वातगजाङ्कुश रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—२ रत्ती

गृध्रसी, अपबाहुक, मन्यास्तम्भ, उरुस्तम्भ तथा अर्धांग वात रोग नष्ट होते है।

अनुपान—पिप्पली चूर्ण तथा मञ्जिष्ठादि क्वाथ

वातारि रस [भै० र०] १ तोला ॥) मात्रा—४ रत्ती

अन्त्र वृद्धि रोग नष्ट होता है।

अनुपान—तिल तैल तथा अद्रक स्वरस

विश्वेश्वर रस [सस्वर्ण] १ तोला १५) मात्रा—१ रत्ती

फुफ्फुस और हृदय की व्याधियों को दूर करता है तथा शक्तिदायक है।

अनुपान—च्यवनप्राश

विश्वेश्वर रस—१ तोला ॥) मात्रा—२ रत्ती

रात्रि ज्वर मे अत्यन्त हितकर है।

अनुपान—गोदुग्ध

विडंगादि लोह [भै० र०] १ तोला ॥≈) मात्रा—४ रत्ती

प्रमेह तथा साम रोग में लाभदायक, अग्निप्रदीपक, वाजीकरण तथा कान्ति, आयु व बल को देने वाला है।

अनुपान—दुग्ध

विषमज्वरान्तक लोह (पुटपक्व)—१ तोला १०) मात्रा—१ रत्ती

सर्व प्रकार के ज्वर, यकृत्, प्लीहा, पाण्डु, गुल्म, आमदोष, कास, श्वास आदि रोग नष्ट होते हैं, अग्निप्रदीपक तथा बलकारक है।

अनुपान—पिप्पली चूर्ण

विषमज्वरान्तक लोह [भै० र०] १ तोला ५) मात्रा—२ रत्ती

विषमज्वरनाशक, अग्निवर्धक, बृहण व वृष्य है, प्लीहा एवं गुल्म रोगों को नष्ट करता है।

अनुपान—मधु

विद्याधर रस [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—२ रत्ती

ज्वर, यकृत्, प्लीहा, अजीर्ण, क्रिमिरोग, मल बन्ध आदि

रोग दूर करता है।

अनुपान—जल

वेताल रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—२ रत्ती

सन्निपात ज्वर में जब जबाड़ा भिच जाय, इन्द्रियाँ अपना कार्य करना छोड़ दें, गले में कफ घिर जाय, मूर्च्छा होय, उस समय इसका प्रयोग करना चाहिये।

अनुपान—मधु

वैद्यनाथ वटी [भै० र०] १ तोला ४) मात्रा—१ रत्ती

सन्निपातज्वर, शोथयुक्त ग्रहणी, पाण्डु, मन्दाग्नि और धातुगतज्वर में लाभदायक है, कासरोगी को न दें।

अनुपान—पिप्पली चूर्ण

वैक्रान्त रसायन [र० रा० सु०] १ तोला १५) मात्रा—१ रत्ती

राजयक्ष्मा, रक्तन्यूनता, श्वास, कास और उदर रोगों में लाभदायक है।

अनुपान—मधु

श्लेष्मशैलेन्द्र रस [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—१ रत्ती

ज्वर, शिरोरोग, प्रमेह, पाण्डु, कण्डु आदि रोग नष्ट होते हैं।

अनुपान—अद्रक व गरम जल

श्लेष्मकालानल रस [भै० र०] १ तोला ३) मात्रा—२ रत्ती

वातश्लेष्म, पित्तश्लेष्म ज्वर को व कफोल्वण सन्निपात ज्वर में लाभदायक है।

अनुपान—मधु

श्वासकालेश्वर रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—१ रत्ती

श्वास, कास मे लाभदायक है।

अनुपान—मधु

श्वासकुठार रस [भै० र०] १ तोला ।।) मात्रा—२ रत्ती

श्वास, कास, प्रतिश्याय, यक्ष्मा आदि मे लाभदायक है।

अनुपान—पान व अद्रक स्वरस

श्वासचिन्तामणि रस [सस्वर्ण] १ तोला ८) मात्रा—२ रत्ती

श्वास, कास तथा यक्ष्मा मे लाभदायक व शक्तिदाता है।

अनुपान—मधु

श्वेतारि रस [भै० र०] १ तोला ३) मात्रा—४ रत्ती

श्वित्र (सफेद कोढ़) में लाभदायक है।

अनुपान—जल

श्लीपदगजकेसरी [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—१ रत्ती

श्लीपद व तिल्ली को नष्ट करता है।

अनुपान—गरम जल

शृंगाराभ्र रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—२ रत्ती

राजयक्ष्मा, कास, श्वास, ज्वर, प्रमेह शोथ, अम्लपित्त, रक्तपित्त, क्षय मे लाभदायक, वृष्य, बल्य व वाजीकरण है।

अनुपान—अदरक तथा पान

शंकर वटी [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—२ रत्ती

फुफ्फुस के रोग, जीर्णज्वर प्रमेह, श्वास, कास आदि में लाभदायक वृष्य और पुष्टिकारक है।

अनुपान—ऊष्ण जल

शशिशेखर रस [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—१ रत्ती

अन्त्र रोग दूर होता है।

अनुपान—गरम जल

शिलाजत्वादि वटी [स्वर्णयुक्त] १ तोला १५) मात्रा—२ रत्ती

शुक्रमेह मे अत्यन्त लाभदायक है।

अनुपान—दुग्ध

शिरःशूलादिवज्र रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—४ रत्ती

सर्व प्रकार के सिर दर्द मे लाभदायक है।

अनुपान—बकरी दुग्ध

शिरोवज्र रस [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—२ रत्ती

शिरोवेदना व सिरकी निर्बलता में लाभदायक है।

अनुपान—मधु

श्रीकामदेव रस [भै० र०] १ तोला ७) मात्रा—१ रत्ती

कामुक पुरुषो का काम प्रवृद्ध होना है, बल व सौन्दर्य लाता है।

अनुपान—मधु

श्रीजयमंगल रस [भै० र०] १ तोला १२) मात्रा—२ रत्ती

जीर्णज्वर, विषमज्वर, धातुगतज्वर आदि सम्पूर्ण ज्वर संज्ञक रोगो को हरता है, श्वास मे लाभदायक, बल व पुष्टि देता है।

अनुपान—जीरक चूर्ण व मधु

शीतमंजी रस—१ तोला १॥) मात्रा—२ रत्ती

विषमज्वर में हितकर है।

अनुपान—मधु

शुक्रवल्लभ रस [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—२ रत्ती

शक्तिदाता व स्तम्भक है।

अनुपान—दुग्ध

शूलवज्रिनी वटी [भै० र०] १ तोला १।।) मात्रा—४ रत्ती
पेट का दर्द, यकृत्, प्लीहा, आध्मान, अग्निमान्द्य आदि उदर रोगों में लाभदायक है।
अनुपान—बकरी का दुग्ध

शुक्रमातृका वटी [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—४ रत्ती
प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी व ज्वरादि को नष्ट करती है। बल वर्ण तथा जठराग्नि को बढ़ाती है।
अनुपान—बकरी दुग्ध तथा अनार का रस

शोथकालानल रस [भै० र०] १ तोला ۲) मात्रा—२ रत्ती
शोथ, श्वास, कास, आठों प्रकार के ज्वर, मन्दाग्नि, प्लीहा प्रभृति रोग शान्त होते हैं, शोथ की अद्वितीय औषध है।
अनुपान—तालमखाना क्वाथ

शोथारि मण्डूर [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—४ रत्ती
सन्निपात व सर्वांग शोथ को दूर करता है।
अनुपान—पुनर्नवादि क्वाथ

स्वच्छन्दभैरव रस [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—½ रत्ती
शीतज्वर, सन्निपात, विषमज्वर, प्रतिश्याय, मन्दाग्नि व शिरोवेदना में लाभदायक है।
अनुपान—अद्रक स्वरस

स्वयमग्नि रस—१ तोला १) मात्रा—१ रत्ती
यक्ष्मा, कास, श्वास, निर्बलता, रक्तन्यूनता, अजीर्ण, अतिसार आदि रोग में लाभदायक है।
अनुपान—मधु

स्वर्णभूपति रस [र० रा० सु०] १ तोला २) मात्रा—४ रत्ती

यक्ष्मा, सन्निपात, मन्दाग्नि, संग्रहणी, प्रमेह कास, श्वास, रक्तन्यूनता व कमर के दर्द में लाभदायक है।

अनुपान—पीपली चूर्ण

स्वरप्रसाद रस [र० रा० सु०] १ तोला १) मात्रा—२ रत्ती

स्वरभेद में लाभदायक है।

अनुपान—मधु व पान स्वरस

स्वर्णमृगांक रस [भै० र०] १ तोला ४०) मात्रा—४ रत्ती

क्षय, पाण्डु, उदावर्त और वात रोगों में लाभदायक है।

सर्वतोभद्र लोह [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—२ रत्ती

अम्लपित्त, अर्श, भगन्दर परिणाम शूल, पाण्डु, शोथ, गुल्म, श्वास, कास, क्षय में लाभदायक, वृष्य एवं रसायन है।

अनुपान—मधु

सहकारी वटी [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—२ रत्ती

कण्ठ, ओष्ठ, दन्त जिह्वा तथा तालु के रोग नष्ट होते हैं। मुख सुगन्ध युक्त तथा दान्त दृढ होते हैं।

अनुपान—मधु

सर्वज्वरहर लोह [भै० र०] १ तोला ।।।) मात्रा—२ रत्ती

ज्वर, यकृत्, प्लीहा आदि में लाभदायक है।

सर्वज्वरहरलोह वृहत [सस्वर्ण] १ तोला १४) मात्रा—२ रत्ती

सर्व प्रकार के ज्वर, यकृत्, प्लीहा, कास, रक्तन्यूनता, मन्दाग्नि आदि रोग नष्ट होते हैं।

अनुपान—गरम जल

सर्वेश्वर वटी [र० रा० सु०] १ तोला १) मात्रा—१ रत्ती
वातज्वर, कफज्वर, प्रसूतरोग, क्रिमिरोग, उदररोग में लाभदायक व रेचक है।
अनुपान—मिश्री मिश्रित जल

संजीविनी वटी (अमृत) १ तोला ।) मात्रा—२ रत्ती
अतिसार व विसूचिका में लाभदायक है।
अनुपान—प्याज का रस अथवा जल

समीरपन्नग [भै० र०] १ तोला १।।) मात्रा—२ रत्ती
घोरवात रोगों को दूर करता है, नस्य देने से बेहोशी को दूर करता है।
अनुपान—अद्रक स्वरस

सारिवादि वटी [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—३ रत्ती
सर्व प्रकार के कर्णगत रोग, प्रमेह, रक्तपित्त, क्षय, श्वास, प्लीहा, जीर्ण-ज्वर, अर्श, हृद्रोग आदि नष्ट होते है।
अनुपान—दुग्ध

सिद्धप्राणेश्वर रस [भै० र०] १ तोला ।।।) मात्रा—२ रत्ती
ज्वरातिसार, रक्तपित्त, शूल तथा परिणामशूल मे लाभदायक है।
अनुपान—पान स्वरस

सुधानिधि रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—१ रत्ती
रक्तपित्त को नष्ट करता है।
अनुपान—वासा स्वरस

सूतिकावल्लभ रस [भै० र०] १ तोला ३) मात्रा—१ रत्ती

सूतिका का अतिसार, आमातिसार, ज्वर व कफ रोग मे लाभदायक है ।

अनुपान—मधु

सूतिकारि रस [भै० र०] १ तोला २॥) मात्रा—½ रत्ती

सूतिका रोग, ज्वर, तृष्णा, अरूचि शोथ मे लाभदायक व अग्निप्रदीपक है ।

अनुपान—मधु

सूतिकान्तक रस [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—१ रत्ती

सूतिकारोग, ग्रहणी, मन्दाग्नि. दुस्साध्य अतिसार, कास. श्वास आदिरोग नष्ट होते है ।

अनुपान—मधु

सोमनाथ रस [भै० र०] १ तोला ॥) मात्रा—४ रत्ती

सोमरोग. प्रदर, योनिशूल. मेद्रशूलऔर जीर्ण बहुमूत्र रोग को निःसंशय नष्ट करता है ।

अनुपान—जल,

सौगति गुटिका [र० रा० सु०] १ तोला २) मात्रा—२ रत्ती

स्तम्भक व बलदायक है।

अनुपान—दुग्ध,

हंसपोटली रस [भै० र०] १ तोला ।॥) मात्रा—१ रत्ती

अतिसार, संग्रहणी और पेचिश मे लाभदायक है

अनुपान—अद्रक स्वरस

हृदयार्णव रस [भै० र०] १ तोला १) मात्रा—१ रत्ती

हृदरोगों मे लाभदायक है

अनुपान—मधु

हिरण्यगर्भ पोटली [भै० र०] १ तोला ४०) मात्रा—१ रत्ती

मन्दाग्नि, ग्रहणी, विषमज्वर, अर्श, श्वास, कास, अतिसार शोथ, पाण्डु, यकृत्, प्लीहा आदि रोगों में अत्यन्त लाभकारी है।

अनुपान—घृत, मधु व काली मिर्च

हिमांशु रस [र० र० समु०] १ तोला ५) मात्रा—१ रत्ती

पेशाब, हथेली व तलुवों की जलन को दूर करता है

अनुपान—जल

हिंगुलेश्वर रस [भै० र०] १ तोला ।) मात्रा -½रत्ती

वात ज्वर को नष्ट करता है।

अनुपान—मधु व अद्रक स्वरस

हुताशन रस [भै० र०] १ तोला ।।।) मात्रा—१ रत्ती

शूल, अरूचि, गुल्म, विसूचिका, मन्दाग्नि, अजीर्ण और शिरोरोग में लाभदायक है।

अनुपान—अद्रक स्वरस

हेमगर्भ पोटली [र० रा० सु०] १ तोला ३०) मात्रा—१ रत्ती

राजयक्ष्मा मे अत्यन्त लाभदायक है।

अनुपान—च्यवनप्राश

हेमवज्र रस—१तोला ५) मात्रा—१ रत्ती

क्षय, श्वास, व कास निर्बलता में बहुत ही गुणदायक है।

अनुपान—मधु

क्षयकेसरी रस [भै० र०] १ तो० १) मात्रा—२ रत्ती

क्षयरोग को नष्ट करता है।

अनुपान—मधु

क्षुधासागर रस [भै० र०] १ तोला १॥) मात्रा—१ रत्ती
अग्निमान्द्य को दूर करता व भूख बढ़ाता है।
अनुपान—लवंग जल

क्षुद्बोध रस [र० रा० सु०] १ तोला ।=) मात्रा—२ रत्ती
अग्निमान्द्य को दूर करता व भूख खूब लगाता है।
अनुपान—लवंग जल

क्षेत्रपाल रस [भै० र०] १ तोला २) मात्रा—½ रत्ती
शोथ, मन्दाग्नि, ग्रहणी, विषमज्वर, जीर्ण ज्वर आदि रोग नष्ट होते है।
अनुपान—मधु

पर्पटी

प्राय सभी पर्पटियाँ शुद्ध पारद, शुद्ध आमला सार गन्धक और भिन्न २ भस्मो के योग से अग्नि पर पकाकर गाय के गोबर पर रखे हुए केले के पत्ते पर डाल कर और ऊपर केले का पत्ता रखकर बनाई जाती हैं। यह कार्य एक अनुभवी रसशास्त्र में दक्ष वैद्य द्वारा किया जाता है क्योकि इसमें अग्नि के तेज व मन्दा होने का बडा ध्यान रखना पड़ता है. प्राय: पर्पटियां संग्रणी व अन्त्र रोगो मे सेवन कराई जाती हैं। इसके अतिरिक्त यक्ष्मा व रक्तन्यूनता में भी प्रयोग की जाती है।

अष्टामृत पर्पटी—१ तोला २॥) मात्रा—२ रत्ती
संग्रहणी, अन्त्र रोग, हृद्रोग व क्षय मे लाभकारी है।

ताम्र पर्पटी—१ तोला १॥) मात्रा—२ रत्ती

कास, श्वास, संग्रणी, उदर रोग, हृद्रोग व कफविकार में लाभदायक है।

पंचामृत पर्पटी—१ तोला ४) मात्रा—१ से २ रत्ती

पंचामृत पर्पटी नं० २—१ तोला १॥) मात्रा—१ से २ रत्ती

संग्रहणी, यक्ष्मा, आमातिसार, जीर्ण-ज्वर व अशक्ति में लाभ प्रद है।

बोल पर्पटी—१ तोला १) मात्रा—२ रत्ती

संग्रहणी, धातुक्षय, प्रदर, अजीर्ण और अम्लपित्त मे गुणकारी है।

रस पर्पटी—१ तोला १) मात्रा—२ रत्ती

संग्रहणी आमातिसार और अर्श मे उपयोगी है।

लोह पर्पटी—१ तोला १) मात्रा—१ से १० रत्ती

संग्रणी, पाण्डु, अतिसार, कामला व क्षय को नष्ट करती है।

विजय पर्पटी (वैक्रान्त) १ तोला २४) मात्रा—१ रत्ती

नवीन व जीर्ण संग्रणी, पाण्डु, जलोदर, हृद्रोग, परिणाम शूल, कफ, वात, पित्त रोगो मे लाभदायक, शरीर को पुष्ट सुन्दर व कान्तिमान करती है।

विजय पर्पटी नं० २—१ तोला १०) मात्रा—१ रत्ती

गुण उपर वाली सदृश

श्वेत पर्पटी—१ तोला ≈) मात्रा—४ रत्ती

मूत्र कृच्छ्र और उदर रोगो में लाभदायक है।

स्वर्ण पर्पटी—१ तोला १०) मात्रा—२ से १० रत्ती तक

संग्रहणी और क्षय मे उत्तम है, श्वास, कास दुर्बलता को दूर करती है।

गुग्गुल

अभया गुग्गुल—१ तोला ।।) मात्रा—४ रत्ती

हड्डी के उतरने व टूटने में बहुत गुणदायक है । स्नायु व मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों का नाश करता है ।

अमृतादि गुग्गुल—१ तोला ।) मात्रा— ४ से ८ रत्ती

अठारह प्रकार के कुष्ठ, वातरक्त, भगन्दर, आमवात, मन्दाग्नि, पीनस, व्रण, प्लीहा, प्रमेह आदि का नाश करता है ।

काँचनार गुग्गुल—१ तोला ।) मात्रा—४ से ८ रत्ती

कण्ठमाला, व्रण, वातदोष, रक्तदोष और भगन्दर का नाश करता है ।

कैशोर गुग्गुल—१ तोला ।) मात्रा—४ से ८ रत्ती

वातरक्त, कास, कुष्ठ, गुल्म, उदररोग, पाण्डु, प्रमेह अग्निमान्द्य, व्रण आदि में लाभदायक है। इसको लगातार कुछ समय तक सेवन करने से वृद्धावस्था दूर होकर युवास्था आती है ।

गोक्षुरादि गुग्गुल—१ तोला ।) मात्रा—४ से ८ रत्ती

प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, प्रदर, मूत्राघात, वातरक्त, वातव्याधि, शुक्र दोष और अश्मरी को दूर करता है ।

चन्द्रप्रभा गुग्गुल—१ तोला ।।।) मात्रा—३ से ६ रत्ती

शुक्र दोष, प्रमेह, शरीर पर झुर्रियां पड़ना, मूत्रकृच्छ्र, प्रदर व मस्तिष्क रोगों मे लाभदायक है, वृद्ध भी युवा के समान शक्तिमान बन जाता है ।

त्रयोदशांग गुग्गुल—१ तोला ।) मात्रा—४ से ८ रत्ती

कमर, हाथ, पांव, व जोड़ों के दर्द, योनि दोष, और कुष्ठ में लाभदायक है।

नवक गुग्गुल—१ तोला ।~) मात्रा—४ से ८ रत्ती

वसा को घटाकर मुटापे को दूर करता है। कफ रोग व आमवात में लाभदायक है।

पुनर्नवादि गुग्गुल—१ तोला ।≈) मात्रा—४ से ६ रत्ती

सर्व प्रकार के शोथ, उदर रोग व स्थूलता को नष्ट करता है।

महायोगराज गुग्गुल—१ तोला १) मात्रा—४ से ८ रत्ती

गठिया, अर्द्धांगवात, अर्दित, अपस्मार में अत्यन्त लाभदायक व गर्भाशय व रजः सम्बन्धी दोषों को दूर करता है।

योगराज गुग्गुल—१ तोला ≡) मात्रा—४ से ८ रत्ती

गठिया और अर्द्धांगवात में लाभदायक है।

रस गुग्गुल—१ तोला ।।।) मात्रा—४ से ६ रत्ती

उपदंश और रक्त विकार में अत्यन्त लाभदायक है।

सप्तांग गुग्गुल—१ तोला ।।।) मात्रा—४ से ६ रत्ती

नाड़ी व्रण व भगन्दर को दूर करता है।

वातारि गुग्गुल—१ तोला ।।।) मात्रा—४ से ८ रत्ती

कमर दर्द, जोड़ों की सूजन, टांगों का दुबलापन और आमवात में लाभदायक है।

शिवा गुग्गुल—१ तोला ।≈) मात्रा—४ से ८ रत्ती

आमवात, कटिशूल, गृध्रसी आदि रोगों में परमोत्तम है।

सप्तविंशति गुग्गुल—१ तोला ।≈) मात्रा—४ से ८ रत्ती

कास, श्वास, शोथ, अर्श, भगन्दर, मूत्रकृच्छ्र, क्षय व

उदर रोगों में लाभदायक व सर्व प्रकार के दर्दों को दूर करता है।

सिंहनाद गुग्गुल—१ तोला ।≈) मात्रा—४ से ८ रत्ती

गुण सप्तविंशति गुग्गुल सदृश।

चूर्ण

प्राय चूर्ण दो मास बाद हीन वीर्य हो जाते हैं। इस कारण विशेष काम में आने वाले चूर्ण हर समय तैय्यार रहते हैं-अन्य चूर्णों का आर्डर आते ही नवीन तैय्यार कराकर भेज दिये जाते हैं।

अभया लवण चूर्ण—५ तोला ।।)

यकृत्, प्लीहा, गुल्म, आध्मान, अर्श व प्रदर में लाभ दायक है।

अग्निमुख चूर्ण—५ तोला ।)

अग्निमान्द्य में लाभदायक व अग्निप्रदीपक है।

अर्कलवण चूर्ण—५ तोला ।।)

यकृत् प्लीहा, वायुगोला और पेट की बीमारी में लाभ प्रद है।

अश्वगन्धादि चूर्ण—५ तोला ।≈)

पौष्टिक, वाजीकरण और मैथुनशक्ति को अति प्रवल करता है।

अविपत्तिकर चूर्ण—५ तोला ।।)

खट्टी और कडुवी वमन, छाती का जलना, मन्दाग्नि, मूत्र व मलवन्ध, प्रमेह और अर्श में लाभदायक है।

अजमोदादि चूर्ण—५ तोला ।≈)

यह स्वर को शुद्ध करता है।

अष्टांग लवण चूर्ण—५ तोला ।≈)

मदात्य रोग को दूर करता है, आंतों की शुद्धि कर जठराग्नि को तीव्र करता है।

आमलक्यादि चूर्ण—५ तोला ।−)

सर्व प्रकार के ज्वरों में लाभदायक, दीपक पाचक, रोचक व श्लेष्म नाशक है।

एलादि चूर्ण—५ तोला ॥)

मूत्र व्याधि में अत्यन्त लाभदायक है, सूजाक को दूर कर मूत्र खोलकर लाता है।

करंजादि चूर्ण—५ तोला ॥)

रक्तार्श व वातार्श को नष्ट करता है।

कपित्थाष्टक चूर्ण—५ तोला ।)

अतिसार, ग्रहणी, श्वास, कास और हिक्का में लाभदायक है।

कामदेव चूर्ण—५ तोला ॥)

स्वप्नदोष, वीर्यदोष, मूत्र का रुक रुक कर आना, बन्द होना आदि विकार दूर होते हैं। वाजीकरण है।

गंगाधर चूर्ण—५ तोला ।≈)

अतिसार और प्रवाहिका में लाभदायक है।

गोखुरादि चूर्ण—५ तोला ।≈)

अत्यन्त कामोद्दीपक है वृद्ध पुरुष भी युवा के समान बन जाता है।

ग्रहणी शार्दूल चूर्ण—५ तोला २)

ग्रहणी, प्रवाहिका, ज्वर, अतिसार, शोथ को दूर करता व अग्नि को तीव्र करता है।

चन्दनादि चूर्ण—५ तोला ।=)

प्रमेह, अग्निमान्द्य, ज्वर, अरुचि, प्रदर व रक्तार्श में लाभप्रद है।

चव्यादि चूर्ण—५ तोला ।।-)

स्वरभेद, जीर्ण प्रतिश्याय, अरुचि और कफादि रोग नष्ट होते हैं।

ज्वरभैरव चूर्ण—५ तोला ।-)

सर्व प्रकार के ज्वरों में लाभदायक है।

जातिफलादि चूर्ण—५ तोला ।)

अतिसार, आमातिसार और रक्तातिसार में लाभदायक है।

जीरकादि चूर्ण—५ तोला ।।।)

ग्रहणी, अतिसार, कामला, पाण्डु, मन्दाग्नि आदि रोग नष्ट करता है।

तालीसादि चूर्ण—५ तोला ।=)

कफ, खांसी, अरुचि व जीर्ण-ज्वर में लाभकारी है।

त्रिफला चूर्ण—५ तोला ≡)

उदर व रक्त विकारों में लाभदायक, अर्श व नेत्र रोगों में लाभकारी है, मलबद्धता नष्ट कर उदर वायु को निकालता है।

दूशन संस्कार चूर्ण—५ तोला ।)

इस चूर्ण द्वारा प्रतिदिन मंजन करने से दान्त व मुख रोग दूर होते हैं ।

दाड़िमाष्टक चूर्ण—५ तोला ।)

श्वास, कास व अतिसार को दूर करता, रोचक व जठराग्नि प्रदीपक है ।

दुग्धवर्धन चर्ण—५ तोला ।=)

स्तनों में दुग्ध बढ़ाता है ।

दुग्धशोधन चूर्ण—५ तोला ।≡)

स्तनों के दुग्ध को शुद्ध करता है ।

नारसिंह चूर्ण—५ तोला ।≈)

बुढ़ापा, शरीर में झुर्रियां पड़ना, प्रमेह, अर्श रक्तन्यूनता आदि मे लाभदायक व रतिशक्ति को अत्यन्त बढ़ाता है ।

नारायण चूर्ण—५ तोला ।)

उदर रोगों में लाभदायक व कोष्ठबद्धता को दूर करता है ।

नायिका चूर्ण बृहत्—५ तोला ।।।)

ग्रहणी, अतिसार, अजीर्ण व उदरशूल को नष्ट करता है ।

नागवल्यादि चूर्ण—५ तोला ।।।)

स्तम्भक, वृष्य तथा रसायन है ।

प्रदरान्तक चूर्ण—५ तोला ।)

श्वेत प्रदर की उत्तम दवा है ।

पंचकोल चूर्ण—५ तोला ।≈)

अग्निदीपक है व वात कफ के रोगों को दूर करता है ।

पुष्यानुग चूर्ण—५ तोला ।≈)

सर्व प्रकार के प्रदर, योनिदोष, रजोदोष आदि दूर होते हैं।

मरिचादि चूर्ण—५ तोला ।)

खूनी व बादी बवासीर में लाभ दायक है।

यवानिकादि चूर्ण—५ तोला ।≈)

पेट के दर्द व आध्मान में लाभदायक है।

यवानिषांडव चूर्ण—५ तोला ॥)

रोचक, हृद्रोग, पार्श्वशूल, आध्मान, वमन, कास, श्वास व अर्श मे लाभदायक है।

यवक्षारादि चूर्ण—५ तोला ।)

बच्चो की खांसी व काली खांसी मे लाभदायक है।

रसकला चूर्ण—५ तोला ।≈)

अतिसार, रक्तातिसार, आमातिसार व ग्रहणी में लाभप्रद है।

लवणभास्कर चूर्ण—५ तोला ।)

आमाशय और आंतो के रोग, अजीर्ण, आध्मान और अतिसार में लाभदायक है।

लवणोत्तमादि चूर्ण—५ तोला ।≈)

सर्व प्रकार के अर्श मे उत्तम औषध है।

लोलिम्बराज चूर्ण—५ तोला ॥)

अर्श में लाभदायक है व कोष्ठबद्धता को दूर करता है।

बृहल्लाई चूर्ण—५ तोला ॥)

अतिसार व ग्रहणी की उत्तम औषध है।

बृहत् लवंगादि चूर्ण—५ तोला ।≈)

कास, श्वास, हिक्का, ग्रहणी, अतिसार और प्रमेह में गुणदायक है।

वडवानल चूर्ण—५ तोला ।)

क्षुधावर्धक व कोष्ठबद्धता नाशक है।

व्योषादि चूर्ण—५ तोला ॥)

ज्वरातिसार, अग्निमान्द्य, अरुचि, तृष्णा, ग्रहणी, गुल्म, पाण्डु तथा शोथ मे लाभदायक है।

भृंग्यादि चूर्ण—५ तोला ॥)

हिक्का, श्वास, कास, अरुचि और प्रतिश्याय मे लाभ दायक है।

समशर्कर चूर्ण—५ तोला ।≈)

अर्श, मन्दाग्नि, कास, श्वास, अरुचि, कण्ठरोग, निर्बलता आदि को दूर करता है।

सारस्वत चूर्ण—५ तोला ॥)

बुद्धि, मेघा, धृति, स्मृति तथा कविता शक्ति को बढ़ाता, मस्तिष्क की निर्बलता को दूर करता व उन्माद में हितकर है।

सामुद्रादि चूर्ण—५ तोला ॥)

अजीर्ण, नाभिशूल, यकृतशूल व वात कफ ज्वरों को दूर करता है।

सितोपलादि चूर्ण—नं० १—५ तोला ॥।)

,, ,, —नं० २—५ तोला ।≈)

कास, श्वास, क्षय, अरुचि, मन्दाग्नि, ज्वर, मुख से रक्त आना हाथ और पांव के दाह में गुणकारी है।

सुदर्शन चूर्ण बृहत्—५ तोला ।)

सर्व प्रकार के ज्वर, यकृत् व प्लीहा को दूर करता है ।

हिंग्वष्टक चूर्ण—५ तोला ।=)

अजीर्ण, आध्मान, उदर शूल, अरुचि, डकारो का आना प्रभृति रोग नष्ट होते है ।

तैल

अंगारक तैल—१० तोला ।।।)

सर्व प्रकार के ज्वरो में लाभदायक है ।

अर्क तैल—१० तोला ।।)

दाद, खाज आदि में लाभदायक है ।

इरिमेदादि तैल—१० तोला ।।।=)

मुख की दुर्गन्ध व बहुत सी बीमारियो को दूर करता है ।

कनक तैल—१० तोला ।।।)

शिरोवेदना, नेत्रो का दर्द और कफ ज्वरों को दूर करता है ।

कर्पूरादि तैल—१० तोला ।।।=)

सर्व प्रकार के दर्दों में लाभदायक है ।

कन्दर्पसार तैल—१० तोला १।।)

सर्व प्रकार के कुष्ठ, अस्थिगतकुष्ठ, गलितकुष्ठ, श्वेतकुष्ठ, वातरक्त, दाद, खाज, फुन्सी गण्ड माला, भगन्दर आदि में लाभदायक है ।

किरातादि तैल—१० तोला ।।।)

सर्व प्रकार के ज्वर, कामला, संग्रहणी, अतिसार, प्लीहा, पांडु और मूत्र कृच्छ्र को नाश करता है।

कासीसादि तैल बृहत्—१० तोला ॥=)

इसके प्रयोग से बवासीर के मस्से दूर हो जाते हैं।

कुब्जप्रसारिणी तैल—१० तोला ॥=)

अस्सी प्रकार के वायु रोग, कुब्जतर, गूंगापन, सारे बदन का जकड़ जाना और लकवा आदि रोगों में लाभदायक है।

गन्धक तैल--१० तोला २)

अर्धांगवात, अर्दित, हाथ पैरों का सूख जाना, कानों का दर्द, बधिरता आदि रोग दूर होते हैं, इसकी मालिश से कन्धे व छाती की वृद्धि होती है। यह तैल मलने व खाने में प्रयोग किया जाता है।

ग्रहणीमिहिर तैल बृहत्—१० तोला ॥)

ग्रहणी, अतिसार, ज्वर, कास, श्वास आदि में लाभदायक तथा शक्ति वर्धक है। इस तैल के प्रयोग से चलित गर्भ भी स्थित होजाता है। गर्भ की वृद्धि व पुष्टि करता है।

चन्दनादि तैल—[बृहत्] १० तोले १=)

रक्तपित्त, क्षय, ज्वर, दाह, अत्यन्त पसीना आना और शरीर की खाज व दुर्गन्धि को दूर करता है, शरीर को कामदेव के समान रूपवान बनाता है। बूढ़ा भी युवा सदृश शक्तिमान होजाता है।

चन्दनादि तैल—१० तोला ॥=)

ज्वर, उन्माद, अपस्मार, तथा वातव्याधियां दूर होती हैं।

जात्यादि तैल—१० तोला १।=)

व्रण में से पीप को निकालकर शुद्ध कर देता है, दुष्ट से दुष्ट व्रण को आराम कर देता है।

ताल तैल—१० तोला २)

पुरुष इन्द्री को दीर्घ व पुष्ट करता है।

दुर्गन्धिनाशक तैल—१० तोला १॥=)

योनि की दुर्गन्ध और खाज को दूर करता है।

नारायण तैल—१० तोला ॥।=)

" " [मध्यम] १० तोला १=)

" " [महा] १० तोला १॥=)

यह वायु रोगों को दूर करने का उत्तम तैल है।

गठिया, फालिज, लकवा, सिर हाथ व पैरों का हिलना, कमर का दर्द आदि में बहुत गुणदायक है।

नाड़ीव्रण तैल—१० तोला २=)

सर्व प्रकार के व्रणों और नाड़ी व्रण में उत्तम है।

पिप्पल्यादि तैल—१० तोला ॥।-)

यह अर्श व गुदभ्रंश, शूल, अफारा और क़ब्ज़ को दूर करता है।

प्रमेहमिहिर तैल—१० तोला ॥।=)

वातव्याधि, विषमज्वर और सर्व प्रकार के ज्वरों को नष्ट करता है। प्यास, दाह, वमन तथा सर्व प्रकार के प्रमेहों को दूर करता है।

व्रणराक्षस तैल—१० तोला ॥।)

व्रणों को शुद्ध करता और भरता है।

भृंगराज तैल—१० तोला ॥।)

इसके सूंघने व मलने से बालों का गिरना, शिरोरोग, कानो व आँखों की बीमारियां नष्ट होती हैं। गंज को दूर करता है। बाल खूब घने व स्याह निकलते हैं। शरीर शक्तिवान बनजाता है।

भल्लातक तैल— १० तोला १≈)

व्रण और नाड़ीव्रण में लाभ दायक है।

भल्लातक तैल नं० २— १० तोला २)

पुरुष इन्द्री को स्थूल करता है तथा उसमें मज़बूती व तेज़ी लाता है।

भग्नारोग्य तैल—१० तोला २)

हड्डी के चटखने व उतरने में लाभ दायक है।

मरिचादि तैल—१० तोला ।।।≈)

दाद, खाज, फुन्सी. फोड़ा और अनेक त्वक रोगों में लाभ-दायक है।

माष तैल—१० तोला ।।।≈)

गठिया और आमवात में लाभ दायक है।

मल्ल तैल— १ तोला ५) मात्रा—१ विन्दु

इसके खाने व लगाने से पुरुषत्व शक्ति बढ़ जाती है और लिङ्गेन्द्रिय दृढ़ होजाती है, इसकी तारीफ़ ज़बान से नहीं की जासक्ती।

लाक्षादि तैल— १० तोले ॥।)

„ „ (महा) „ १≈)

यह सर्व प्रकार के ज्वरो और दुबलेपन को दूर कर शक्ति लाता है।

वासाचन्दनादि तैल—१० तोला ॥।≈)

कास, ज्वर, रक्तपित्त, पाण्डु, क्षतक्षीण, राजयक्ष्मा में अत्यन्त लाभदायक है।

विषगर्भ तैल—१० तोला ॥।)

सर्व प्रकार की गठिया और लकवा मे लाभदायक है।

विष्णु तैल—१० तोला २≈)

शरीर के किसी भाग मे दर्द हो, दूर करता है। गठिया, लकवा, क्षय मे लाभ दायक है, इसतैल के पीने से पुरुषत्व हीन पुरुष भी पुरुषत्व युक्त होता है, बांझपन दूर करने मे लाभदायक है।

श्रीगोपाल तैल—१० तोला ७)

श्रीगोपाल तैल (कस्तूरी सहित)—१० तोला ४≈)

वात पित्त, कफ रोगो मे लाभदायक, स्मृति शक्ति, बुद्धि, मेधा व धृति बढती है। सर्व प्रकार के प्रमेह नष्ट होते है। अतीव वृद्ध पुरुष भी बलवान होजाता है, मैथुन शक्ति को तीव्र करता व लिंगेन्द्रिय की शिथिलता को दूर करता है।

श्वित्रकालानल तैल—१० तोला १≈)

सफेद कोढ़ व सर्व प्रकार के कुष्ठो मे लाभदायक है।

शुष्कमूलादि तैल (बृहत्)—१० तोला १≈)

शूल व शोथ को नष्ट करता है।

शोथशार्दूल तैल—१० तोला १≈)

सर्वांग शोथ, श्लीपद, नाड़ीव्रण, दुष्ट व्रण आदिरोगों में लाभदायक है।

षडविन्दु तैल—१० तोला ॥।=)

इसको नाक में टपकाने तथा सर पर मलने से बालो व दान्तो की जड़ें, दृष्टि शक्ति व शारीरिक शक्ति मजबूत होती हैं।

स्वर्जिकादि तैल—१० तोला ॥।=)

कान की भिनभिनाहट, कान का दर्द, कान से पीप बहना व बधिरता को दूर करता है।

सैन्धवादि तैल वृहत्--१० तोला ॥।=)

नाड़ी व्रण और भगन्दर मे लाभदायक है।

सोमराजी तैल—१० तोला १=)

दाद, खाज, मस्से, व्रण व अनेक त्वक रोगों मे लाभदायक है।

हिमसागर तैल—१० तोले १॥=)

चोट के दर्द, किसी अङ्ग का सूख जाना, वीर्यक्षय, राजयक्ष्मा मस्तिष्क की निर्बलता, बात, पित्त रोगों को शान्त करता है।

क्षार तैल—१० तोला १=)

कानके अनेक रोगों के लिये अति लाभदायक है।

घृत

अर्जुन घृत—१० तोला १=)

हृद्रोग में लाभदायक है।

कामदेव घृत—१० तोला २=)

यह घृत बल्य, हृद्य, वृष्य तथा रसायन है। बहु प्रमदासक्त

पुरुषो को, दुर्बल, क्लीव, क्षीणवीर्य तथा वृद्ध पुरुषो को यह घृत सेवन करना चाहिये। यह घृत सम्पूर्ण ऋतुओ मे सेवन करने योग्य है।

कासीसादि घृत—१० तोला १।=)

इस घृत के लगाने से दाद, खाज, फोडा फुन्सी दूर होते हैं।

चैतसघृत—१० तोला १=)

अपस्मार और पागलपन को दूर करता है।

जात्यादि घृत—१० तोला १।=)

व्रण मे से पीप को निकालकर शुद्ध कर देता है। दुष्ट से दुष्ट व्रण भी अच्छे हो जाते है।

त्रिफलादि घृत (महा)—१० तोला १।)

इस से सम्पूर्ण नेत्र रोग दूर होते है, बल, वर्ण, अग्नि तथा दृष्टि को बढ़ाता है।

पञ्चतिक्त घृत—१० तोला १=)

सम्पूर्ण कुष्ठ, दुष्ट व्रण अर्श, काम, वातज पित्तज, कफज रोग दूर होते हैं।

फलकल्याण घृत—१० तोला १=)

इस से पुरुष बल वीर्य युक्त होता है, जिन स्त्रियो को गर्भश्राव होता हो, गर्भ स्थित न होता हो, रोगी या मरा हुआ बच्चा होता हो या कन्याए ही कन्याएं होती हो, उन्हे यह घृत सेवन करना चाहिये।

ब्राह्मी घृत—१० तोला १=)

मस्तिष्क को शक्तिवान बनाकर आंखो के रोगो को दूर

करना है। बुद्धि और याददाश्त को बढ़ाता है। मिरगी और उन्माद में लाभदायक है।

विन्दु घृत—१० तोला ।।।=)

उदावर्त, शोथ, भगन्दर आदि पेट के सर्व रोग नष्ट होते हैं।

सारस्वत घृत—१० तोला १=)

इस मे ब्राह्मी घृत के समान गुण है।

मोम घृत—१० तोला १।=)

इसको गर्भ स्थित होने के दो मास बाद प्रारम्भ कर ६ मास तक प्रयोग करना चाहिये। इसके सेवन से बुद्धिमान, नीरोग तथा स्पष्ट उच्चारण करने वाला पुत्र उत्पन्न होता है इसके सेवन से गूंगापन नष्ट होकर बुद्धि तीव्र होजाती है।

आसवारिष्ट

बहुत प्राचीनकाल से आयुर्वेद शास्त्रानुकूल आसवारिष्ट बनाने की प्रणाली वैद्यों में चली आती है। रस रक्त मे तुरन्त मिलजाने के कारण ये शरीर मे पहुँचते ही अपना गुण करने लगते है और रोगो को शीघ्र नष्ट करदेते हैं। प्रशंसनीय बात यह है कि और वनस्पतियो के अर्क, रस इत्यादि की भान्ति ये बिगड़ते नही वरन जितने पुराने होते जाते हैं उतने ही अधिक गुण कारी बनते जाते हैं। स्वादिष्ट होने के कारण बच्चे तक भी आसानी से पीलेते हैं। नीचे मूल्य १½ पौन्ड (१ बोतल)के ही लिखेगये हैं विशेष लेने के लिये थोक भाव की लिस्ट मंगाए

अमृतारिष्ट—१ बोतल १।।) मात्रा १ से २ तोला तक

सर्व प्रकार के ज्वरों को नष्ट करता है।

अशोकारिष्ट—१ बोतल १॥) मात्रा—२ तोला तक

स्त्रियों के श्वेत, रक्त, काले, पीले सभी प्रदर, मासिक धर्म की अधिकता, कमर, पेडू के दर्द इत्यादि मे अत्यन्त गुणकारी है, रज को शुद्ध कर सन्तानोत्पत्ति के योग्य बनाता है तथा ज्वर बवासीर मन्दाग्नि, अरुचि और प्रमेह में लाभ कारी है।

अरविन्दासव—१ बोतल १॥) मात्रा—२ तोला तक

बालकों के सम्पूर्ण रोगों को नष्टकर बल, पुष्टि तथा जठराग्नि को प्रवल करता है, ग्रहदोष नाशक तथा आयुष्य है।

अभयारिष्ट—१ बोतल १॥) मात्रा—१ से २ तोला तक

बवासीर के लिये अति उत्तम है, पेट के रोग, कोष्ठ बद्धता, पेशाब रुकना व अग्निमान्द्य को दूर करता है।

अंगूरासव—१ बोतल ४) मात्रा—१। तोला तक

यह आसव बड़े अंगूरों के स्वरस से तैय्यार किया जाता है। जठराग्नि, क्षुधा, रक्त व वीर्य वर्धक है। रतिशक्ति को प्रवल करता है। बुद्धि, स्मृति व मस्तिष्क शक्ति को बढ़ाता व नेत्रों को ज्योति प्रदान करता है, दमा, खांसी व क्षय मे उत्तम है। मस्तिष्क सम्बन्धी कार्य करने से जब दिमाग़ थक जाता है इस की १ मात्रा पीते ही मनुष्य में नई शक्ति आकर हृदय आनन्द से भर जाता है।

अश्वगन्धारिष्ट—१ बोतल २) मात्रा—२॥ तोला तक

निर्बलता, दुर्बलता, मिरगी, मस्तिष्क निर्बलता, हिस्टीरिया (बाव गोला) बवासीर आदि रोगों में लाभदायक है। भूख को बढ़ाता व जोड़ों के दर्द को दूर करता है।

उशीरासव—१ बोतल १) मात्रा—२॥ तोला तक

सर्व प्रकार के रक्त प्रवाह को बन्द करता है, रक्तन्यूनता कुष्ठ, प्रमेह, अर्श तथा शोथ को दूर करता है। मूत्र कृच्छ्र व कृमि रोग का नष्ट कर सिर, आंखो व छाती की जलन को दूर करता है।

कुटजारिष्ट—१ बोतल १॥) मात्रा—२॥ तोला तक

ज्वर, आमातिसार, अतिसार व संग्रहणी में लाभदायक है

कुमार्यासव —१ बोतल १॥) मात्रा—२ तोला तक

दमा, खांसी, यकृत् व प्लीहा के रोग, पेट का दर्द व बदहज़मी में लाभदायक है।

कनकबिन्दु अरिष्ट—१ बोतल २) मात्रा—२ तोला तक

कुष्ठ व अर्श नाशक है। श्वास, कास, भगन्दर, शोथ व प्रमेह को दूरकरता है। शरीर को पुष्ट व कान्तिमान बनाता है।

कनकासव—१ बोतल १) मात्रा—२ तोला तक

दमा, खांसी और क्षय मे निहायत मुफ़ीद है। छाती के व्रण व रक्त प्रवाह को बन्द करता है।

कर्पूरासव—१ बोतल ६।) मात्रा—१ तोला तक

हैजे की बहुत अच्छी दवा है। आमाशय व आंतों के बहुत से रोग दूर होते हैं।

कूष्मांडासव—१ बोतल ३) मात्रा—२ तोला तक

धातुक्षय, मन्दाग्नि, प्रमेह, पाण्डु, बवासीर, संग्रहणी तिल्ली, उदररोग, भगन्दर, रक्त पित्त वातव्याधि व मेद वृद्धि को दूर करता है।

खदिरारिष्ट—१ बोतल १।।।) मात्रा—२ तोला तक

रक्त दोष और सर्व प्रकार के कुष्ठो में एक अद्भुत् औषध है। रक्त न्यूनता और उदर रोग व कंठमाला मे लाभ प्रद है।

चन्दनासव—१ बोतल १।।।) मात्रा—२।। तोला तक

सूजाक, अशक्ति. हृद्राग, और प्रमेह मे लाभकारी है।

तृणपंचमूलासव—१ बोतल २) मात्रा—२ तोला तक

मूत्रकृच्छ्र मे अति लाभकारी है।

दन्त्यरिष्ट—१ बोतल १।।) मात्रा—२ तोला तक

अर्श, ग्रहणी, पाण्डु, नष्ट होते है, दीपन और पाचन शक्ति तीव्र होती है।

द्राचासव—१ बोतल १।।) मात्रा—२।। तोला तक

यक्ष्मा, श्वास, कास, छाती व कण्ठरोगो मे लाभकारी है, शारीरिक शक्ति को बढ़ाता है, हाजिम व कब्ज कुशा है। शरीर मे रक्त व वीर्य की वृद्धि करता है, चेहरे पर रौनक लाता है, क्षुधा वर्धक है, बहुत सी पेट की बीमारियों और बवासीर मे गुण दायक है। कोष्ट बद्धता को नष्ट कर अग्नि प्रदीपक है। इसके प्रतिदिन पीने से सेर डेढ़ सेर दूध व २।।—३ छटांक घी प्रतिदिन आसानी से पच जाता है। रक्त बढाने मे, चेहरे को सुर्ख कान्तिमान बनाने व तेजस्वी बनाने मे अपूर्व है : यह सभी अंगूर सेवन करने वाले जानते है। रासायनिक जांच करने पर सिद्ध हुआ है कि इसमें कणरंजक द्रव्य जो एक प्रकार की प्रोटीन होती है (जिसमें औक्सीजन, नाइट्रोजन, हाइड्रोजन, एवं लोह अर्श पाये जाते हैं) बहुत अधिक मात्रा में विमान है। यह प्रोटीन जीवन और रक्त

वर्धन के लिये अति आवश्यक है। यही प्रोटीन रक्त में जब कम हो जाती है द्राक्षासव उसे पूरी करता है। द्राक्षासव रक्त वर्धक होने के कारण दिमाग को क़ुव्वत देता है। इसे बालक, वृद्ध, युवा, स्त्री, पुरुष सब ही समान रूप से प्रयोग में ला सकते हैं। देखने में, पीने में, गुण, गन्ध, स्वाद में आकर्षक, मन मोहक और दिलपसन्द है।

द्राक्षारिष्ट—१ बोतल १॥) मात्रा—२॥ तोला तक

इसके गुण भी द्राक्षासव के समान ही हैं।

दशमूलारिष्ट—१ बोतल १॥।) मात्रा—२ तोला तक

,, —[कस्तूरीसहित] १ बोतल ३॥)मात्रा—१ तोला तक

ग्रहणी, कामला, अरुचि, शूल, श्वास, कास, भगन्दर, वायुरोग, क्षय, पाण्डु रोग, कुष्ठ, अर्श, प्रमेह, मन्दाग्नि, उदर रोग मूत्रकृच्छ्र, धातुक्षय इत्यादि रोग नष्ट होते हैं। कृश पुरुषों को हृष्ट पुष्ट करता, बल एवं वीर्य को बढ़ाता है।

देवदार्वारिष्ट—१ बोतल २) मात्रा—२॥ तोला तक

प्रमेह, वातरोग, ग्रहणी, अर्श, मूत्रकृच्छ्र, दाद तथा कुष्ठ नाशक है।

धात्र्यरिष्ट—१ बोतल १) मात्रा—२॥ तोला तक

पाण्डु, कामला, हृद्रोग, कास, श्वास और विषमज्वर में हितकर है।

पत्रांगासव—१ बोतल १॥) मात्रा—२ तोला तक

बेदनायुक्त श्वेत व रक्त प्रदर, ज्वर, रक्तन्यूनता, शोथ,

मन्दाग्नि और अरुचि को नष्ट करता है।

पार्थाद्यरिष्ट [अर्जुनारिष्ट] १ बोतल १।।) मात्रा—२ तोला तक
हृद व फुप्फुस रोगों को नष्ट करता है, बल वीर्य वर्धक है।

पिप्पल्यासव—१ बोतल १) मात्रा—२ तोला तक
ग्रहणी उदररोग. अर्श, पाण्डु और क्षय में लाभदायक है। दुर्बलता को दूर करता है।

पुनर्नवाद्यरिष्ट—१ बोतल १) मात्रा—२ तोला तक
शोथ, पाण्डु, हृद्रोग, प्लीहा, अरुचि, उदररोग, भगन्दर, कुष्ठ, कोष्ठवद्धता, और गुल्म प्रभृति रोग नष्ट होते है।

बब्बूलाद्यरिष्ट—१ बोतल १) मात्रा—२ तोला तक
अतीसार, क्षय, कुष्ठ, प्रमेह, श्वास व कास में अत्यन्त लाभदायक है।

मृगमदासव—१ बोतल १८) मात्रा—३ माशे तक
शक्ति दायक व कामोत्तेजक है, सन्निपात, विशूचिका, वायु व कफ रोगो मे बडा लाभदायक है, प्रलाप को दूर करता है।

रोहितकारिष्ट—१ बोतल १।।) मात्रा—२ तोला तक
यकृत् व प्लीहा की उत्तम दवा है, रक्तशोधक है।

लोहासव—१ बोतल ।।।=) मात्रा—२ तोला तक
यकृत् व प्लीहा के दोष, रक्तन्यूनता, उदरशूल मे लाभदायक है। रक्त की शुद्धि करता है।

लोध्रासव—१ बोतल १।।) मात्रा—२ तोला तक
प्रमेह रक्तन्यूनता, अर्श व प्रदर मे गुणकरता है।

वासारिष्ट—१ बोतल १॥) मात्रा—२ तोला तक

श्वास, कास, फुप्फुसरक्त प्रवाह, क्षय, अजीर्ण में हितकर है।

विडंगारिष्ट—१ बोतल १॥) मात्रा—२ तोला तक

विद्रधि, उरुस्तम्भ, अश्मरी, प्रमेह, भगन्दर, गण्डमाला को दूर करता है, व्रण, मूत्रकृच्छ्र और रक्त दोष में गुण दायक है।

सारिवाद्यरिष्ट—१ बोतल १॥) मात्रा—२ तोला तक

प्रमेह, वीर्य दोष, फिरंग रोग, रक्त दोष और कुष्ठ में अत्यन्त लाभप्रद है।

सारस्वतारिष्ट—१ बोतल १॥) मात्रा—२ तोला तक

,, [स्वर्ण मिश्रित] १ बोतल १२) मात्रा—१ तोला तक

आयु, वीर्य, धारणाशक्ति, बुद्धि, बल एवं कान्ति वर्धक, स्वरभंग, हकलापन, तोतलापन, उन्माद, अपस्मार और मूर्च्छा में लाभदायक है।

खण्ड, मोदक, अवलेह, पाक

अश्वगन्ध पाक—१ पाव १॥) मात्रा—२ तोला तक

खांसी, श्वास, अजीर्ण, वातरक्त, प्लीहा, स्थूलता, गठिया उदर शूल, शोथ, बादी बवासीर, रक्त न्यूनता, ग्रहणी व गुल्म रोग नष्ट होते हैं। पौष्टिक, काम शक्ति वर्धक और अग्निदीपक है। स्त्रियों के स्तनों में दुग्ध बढ़ाता व बालकों को पुष्ट करता है।

अगस्त्यहरीतकी अवलेह—१ पाव ॥) मात्रा—१ तोला तक

कास, क्षय (दिक़) श्वास, हिक्का, विषम ज्वर, ग्रहणी, अर्श, अरुचि, पीनस और हृद्रोग में लाभदायक है। बुढ़ापे को

दूर कर जवानी का आनन्द देता है। वर्ण आयु बल की वृद्धि करता है।

अमृतभल्लातकावलेह—१ पाव १=) मात्रा—१ तोला तक

इसके सेवन से मनुष्य का शरीर स्वर्ण की तरह कान्तिमान होजाता है। मेधा, तेज, बुद्धि, इन्द्रिएं और मन निर्मल रहते हैं, श्वेत बाल फिर से काले होजाते हैं, आयु की वृद्धि होती है, गलित कुष्ठ तक को नष्ट करदेता है।

कंसहरीतकी—१ पाव ।॥=) मात्रा—१ तोला तक

दारुण शोथ, कास, ज्वर, अरोचक, प्रमेह, गुल्म, प्लीहा उदर रोग, पाण्डु, कृशता, आमवात, रक्तपित्त, अम्लपित्त, मूत्र विकार, वातविकार व शुक्र दोष दूर होते हैं।

कण्टकारी अवलेह—१ पाव ।॥) मात्रा—६ माशे तक

कफ, दमा खांसी, और अजीर्ण में हितकर है।

कुटजावलेह—१ पाव ॥=) मात्रा—६ माशे

सर्व प्रकार की बवासीर, अम्लपित्त, अतिसार, रक्तन्यूनता अरुचि, ग्रहणी, कृशता, शोथ आदि रोगों को नष्ट करता है।

कुशावलेह—१ पाव १।) मात्रा—६ माशे

प्रमेह, मूत्राघात, अश्मरी, अरुचि प्रभृति रोग नष्ट होते हैं।

कूष्मांड खण्ड—१ पाव १=) मात्रा—२ तोला तक

रक्त श्राव, क्षय ज्वर, चक्षु व शरीर की जलन, फुफ्फुस व्रण, कास, श्वास, रक्तार्श और वमन में लाभकारी है। शक्ति को बढाता है।

गोक्षुरादि अवलेह—१ पाव ।॥=) मात्रा—१ तोला तक

मूत्रावरोध, मूत्रपीड़ा, मूत्रनाली द्वारा रक्त का आना,

इत्यादि रोगों को दूर करता है, कामोद्दीपक व बाजीकरण है।

च्यवनप्राशावलेह—१ पाव १) मात्रा —१ तोला तक

यह परमौषध च्यवन नाम से इस लिये प्रसिद्ध है कि च्यवन ऋषिने इसके प्रसाद से तरुणत्व प्राप्त किया था। वीर्य वर्धक औषधियों में इसके समान दूसरी औषध नहीं है। यह रसायन स्त्री, पुरुष दोनों के रज वीर्य को शुद्ध करके उन्हे सुन्दर और बलवान संतान पैदा करने योग्य बना देती है। यह दवा निर्बल पुरुषों, स्त्रियो, बालकों एवं वृद्धोंके लिये अत्यन्त शक्ति वर्धक सुख दायक एक स्वादिष्ट मिष्ठ पदार्थ है। इसको दुग्ध के साथ सेवन करने से क्षय, क्षीणता, यक्ष्मा, उरःक्षत, खांसी, गले का बैठना, दमा, हृदय रोग, रक्तपित्त, अम्लपित्त, प्यास, वमन, पाण्डु, पुराने दस्तों का रोग, मूत्रदोष, वीर्य दोष, वातरक्त, दिमाग की, कमजोरी, पुरुषत्व हानि आदि अनेक बीमारियां नष्ट होती हैं। हमारी सहस्रो रोगियों पर आजमाई हुई शास्त्रीय दवा है।

चित्रकहरीतकी—१ पाव ॥ऽ) मात्रा—२ तोला तक

अग्नि प्रवर्धक तथा क्षय में हितकर है, कास, पीनस, कृमि, गुल्म, उदावर्त, अर्श तथा श्वास को नष्ट करती है।

तारामंडूर गुड़—५ तो १॥) मात्रा—३ से ६ रत्ती तक

परिणामशूल (भोजन के बाद होने वाला पेट दर्द) कामला, पाण्डु, शोथ, मन्दाग्नि, अर्श, ग्रहणी, प्रमेह, गुल्म, अम्लपित्त और स्थूलता को नष्ट करता है।

दन्तीहरीतकी अवलेह—१ पाव ॥ऽ) मात्रा—२ तोला तक

गुल्म, प्लीहा शोथ, अर्श, हृद्रोग, रक्तन्यूनता, ग्रहणी,

जी मिचलाना, विषम ज्वर, कुष्ठ तथा अरुचि प्रभृति रोग नष्ट होते हैं। दस्त बिना तकलीफ़ साफ़ होजाता है।

नारिकेल खण्ड—१ पाव २≈) मात्रा—१ तोला तक

अम्लपित्त, अरुचि, क्षय, रक्तपित्त, मुहसे रक्त आना, शूल तथा छर्दि रोगों को नष्ट करता है, वीर्य वर्धक है।

ब्राह्म अवलेह—१ पाव ॥।) मात्रा—१ तोला तक

इसके गुण च्यवनप्राश के सदृश हैं।

बादामपाक—१ पाव १॥≈) मात्रा—२ तोला तक

इसके सेवन से शरीर मोटा ताज़ा सुन्दर और पुष्ट हो जाता है, सिर दर्द पुरानी खांसी, दिल और दिमाग़ की कमज़ोरी दूर करता है, नेत्रों की ज्योति और मुख की कान्ति को बढ़ाता है वीर्य की वृद्धि और पुष्टि करता है इसके गुण अपार हैं खाने में बहुत ही स्वाद है।

बाहुशाल गुड़—१ पाव १≈) मात्रा—६ माशे तक

कोष्ठबद्धता नाशक है तथा सर्व प्रकार की बवासीर में अत्यन्त लाभदायक है। अग्नि प्रदीपक है एवं पांच प्रकार के गुल्म, रक्तन्यूनता. सर्वप्रकार के उदररोग नष्ट करता है, बुद्धि को तीव्र करता है।

भारंगी गुड़—१ पाव ॥≈) मात्रा—६ माशे

श्वास और सर्व प्रकार की खांसी में अत्यन्त लाभदायक है।

महाभल्लातक गुड़—१ पाव ४≈) मात्रा—६ माशे तक

यकृत्, प्लीहा, अर्श, दिल की कमज़ोरी आदि रोगों को नष्ट करता है।

मदनानन्द मोदक—१ पाव १=) मात्रा—६ माशे

वीर्यवर्धक व कामोद्दीपक है।

मूसलीपाक—१ पाव १=) मात्रा—४ तोला तक

वीर्य को गाढ़ा करता और बढ़ाता है शरीर को मोटा ताज़ा और बलवान बनाता है पुरुषत्व शक्ति अधिक पैदा करता है स्त्रियों की सफ़ेदे की बीमारी को दूर करता है गर्भ देता है, स्तनों में दूध बढ़ाता है और स्तनो के ढीलेपन को दूर करता है खाने में बड़ा स्वादु है।

वासाकूष्मांड खण्ड—१ पाव १॥) मात्रा—२ तोला तक

मुह से रक्त आना, खांसी दमा और प्रतिश्याय मे लाभदायक है।

वासावलेह—१ पाव ॥।) मात्रा—६ माशे

राजयक्ष्मा, पार्श्व शूल, दिलका दर्द, मुंह से रक्त आना तथा ज्वर को नष्ट करता है।

शूरण मोदक—१ पाव १।=) मात्रा—६ माशे

इसके गुण बाहुशाल गुड़के समान हैं।

सौभाग्यशुंठि पाक—१ पाव १=) मात्रा—२ तोला तक

प्रसूता के सम्पूर्ण रोगों के लिये रामबाण है। कमर का दर्द, पुराने तथा नए दस्तों की बीमारी, संग्रहणी, दमा, खांसी, मन्दाग्नि, स्वेत प्रदर, जचगी का बुख़ार आदि स्त्रियों के अनेक रोगों में अमृत के तुल्य है। बलदायक और स्वादिष्ट है। शरीर को सुन्दर बनाता है, योनि व स्तनों को कठोर करता है।

सिद्ध सुपारी पाक रसायन—१ पाव २) मात्रा—१। तोला तक

यह दिव्यौषध ४० बहु मूल्य दवाओं से तयार होती है। योनि रोगों के दूर करने में इस के समान दूसरी औषध नहीं है। सहस्रों स्त्रियां जो योनि रोगों की वेदना सहते २ लाचार हो गई थी जिन्हें गर्भ रहने की आशा ही न रही थी। जो स्त्री समाज में लज्जित और दु:खित होती थी जिन्हें अपनी जिन्दगी भार मालूम होती थी। जो सन्तान के लिये रात दिन कुढ़ती और तरसती थीं आज वेही सौभाग्यवती देवियां हमारे सिद्ध सुपारी पाक रसायन के गुण गान कर रही है। जिसके सेवन से वे श्वेतप्रदर, रक्त प्रदर मासिक धर्म की अनियमता, बार२ गर्भ का गिरना, बालक हो २ कर मरजाना तथा एक बार बालक होकर फिर न होना, दौरे की बीमारी (हिस्टीरिया) शारीरिक निर्बलता, दुर्बलता, सिर, कमर नलो का दर्द, सिर का घूमना, चेहरे का फीकापन आदि अनेक रोगों की यन्त्रणा से छूट कर स्वस्थ और पुष्ट हो कर कई २ बालकोंकी मातायें बन गई है इस के सिवाय जापे की बीमारी बुढ़ापे की कमजोरी मे बड़ा मुफीद है।

कसुपारीपा—१ पाव १≈) मात्रा—२ तोला तक

श्वेत प्रदर की उत्तम औषध है।

सिद्धसालव पाक रसायन (रजिस्टर्ड)१ पाव २) मात्रा—१। तो०

यह रसायन वीर्य सम्बन्धी सब दोषों को दूर कर के उसे शुद्ध पुष्ट एव संतानोत्पत्ति के योग्य अमोघ बना देती है। धातु दौर्बल्य रोग से आक्रान्त होकर जिन मनुष्यों के रस, रक्त, मांस शुक्रादि सम्पूर्ण धातु क्षीण होगये हैं। तथा वीर्य के पतला होने से स्वप्न दोष, त्वरित वीर्य पात, इन्द्रिय की शिथिलता पुरुषत्व हानि अधिक शुक्रपात तथा ध्वजभंगादि रोगों के कारण इन्द्रिय सुख रहित वंश लोप की आशंका से समय व्यतीत कर रहे

हैं। उन्हें इस रसायन का सेवन करना संसार सुख एवं संतानोत्पत्ति के लिये अतीव सुख कारी होगा। यह दैवी औषध वृद्ध पुरुष को भी युवा तुल्य शक्तिवान बना देती है। दिमाग़ को बड़ी ताक़त देती है। इस कारण उन लोगों के लिये जिनहें दिमाग़ी काम अधिक करना होता है जजों, बैरिस्टरों, वकीलों, मास्टरों, कवियों, विद्यार्थियों, कलर्कों, एवं पत्र सम्पादकों, व्याख्यान दाताओं आदि को बड़ी सुख कारी वस्तु है। हर तरह की निर्बलता को दूर करने वाली एक उत्तम स्वादिष्ट अनुपम ख़ूराक है।

सालव पाक—१ पाव १=) मात्रा—२ तोला

वीर्य को बढ़ाने और गाढ़ा करने में अनुपम है। कामशक्ति और मैथुनेच्छा को अत्यन्त प्रबल करता है। शरीर की पुष्टि और सौन्दर्य को बढ़ाता है। मस्तिष्क को अधिक बल देता है, बूढ़े को भी तरुण के समान शक्तिवान् बना देता है। अधिक क्या कहें इस में अनन्त गुण है।

हरिद्रा खण्ड—१ पाव १=) मात्रा—१। तोला तक

शीतपित्त (ददौड़े पड़ना) खाज, कितने ही पुराने हों इसके सेवन से जाते रहते हैं।

नोट— हर प्रकार के स्वादिष्ट और पौष्टिक पाकों के लिये हमारे यहां की पाक मंजरी पुस्तक मुफ्त मंगाकर देखिये।

लेप

अण्डवृद्धिहर लेप—१० तोला १)

फ़ोतों के बढ़ने में लाभदायक है।

अन्त्रवृद्धिहर लेप—१० तोला १)

फोतों मे आंत उतरने की बीमारी को दूर करता है।

गलगण्डहर लेप—१० तोला ।।।)

कण्ठ माला में लाभकारी है।

चन्द्रबदन—१० तोला ।।)

मुख को मुँहासे व झांई इत्यादि से रहित कर कान्तियुक्त बनाता है।

दशांग लेप—१० तोला ।।।)

विसर्प, कुष्ठ, शोथ व दाह को दूर करता है।

नासारक्तहर लेप—१० तोला ।।।)

नकसीर को बन्द करता है।

वीर्यस्तम्भक लेप—५ तोला २।।)

वीर्य का स्तम्भन करता है। आश्चर्यजनक गुणदायक है।

शीतपित्तहर लेप—१० तोला ।।।)

पित्ती को तत्काल बिठा देता है।

श्लीपदारि लेप—१० तोला ।।।)

पैर जो हाथी की तरह फूलकर मोटे होजाते है इसके लगाने से आराम आजाता है।

सिर सुगन्ध—१० तोला ।।।)

सर धोने का सुगन्धित मसाला है। सर की बहुतसी बीमारियों को दूर करके बालों की जड़ों को मजबूत बना देता है। निहायत सुगन्ध युक्त है।

संकोचनी—१० तोला २)

योनि को संकोचित कर दृढ़ करती है, नवीन के समान बनाती है। हरसमय का गीलापन व श्वेतप्रदर को दूर करती है। योनि की दुर्गन्ध दूर कर सुगन्ध फैलाती है।

स्त्रीद्रावण लेप—१० तोला १)

इससे भोग के समय स्त्री द्रवित होजाती है।

शोथनाशक लेप—२॥ तोला ॥)

शोथ व प्रदाह को दूर करता है।

वर्ति

योनिसंकोचक वर्ति—१ दर्जन १॥)

इस बत्ती को योनि में रखने से सकुचित होती है। हर समय का गीलापन दूर होजाता है।

योनिदुर्गन्ध नाशक वर्ति—१ दर्जन ।॥)

योनि की दुर्गन्ध दूर कर सुगन्ध फैलाती है।

फलवर्ति—१ दर्जन १॥)

इसको गुदा में लगाने से वायु निकल जाती है अफारा दूर होजाता है। कोष्ठवद्धता मे लाभकारी है।

अञ्जन व वर्ति

नेत्रोपयोगी

ये दवाएं नेत्रों के रोगों में काम आती हैं—विशेष प्रकार

की खरलों मे पीसकर तय्यार की जाती है।

सुखावर्ति—१ तोला १)

मोतिया, जाला, आंख की खाज व लाली में लाभदायक है।

चन्द्रोदयवर्ति—जाला, फूला नष्ट करती है, रात को न दिखाई देना, रोशनी की कमी व खाज मे लाभप्रद हैं।

चन्द्रप्रभावर्ति—१ तोला ।।)

गुण चन्द्रोदय वर्ति सदृश है।

दृष्टिप्रदावर्ति—१ तोला १)

मोतिया बिन्द मे लाभदायक है, आंख की रोशनी बढ़ाती है।

नागार्जुनाञ्जन वर्ति—१ तोला १)

आंख का दुखना, व्रण जाला, फूला और तिमिर रोग को नष्ट करती है।

नयनामृताँजन वर्ति—१ तोला ।।)

दृष्टि की कमज़ोरी, जाला, फूला और अनेक नेत्ररोगो में हितकारी है।

मुक्तादिमहाञ्जन—१ तोला ४)

जाला, फूला, मोतियाबिन्द, दृष्टि की निर्बलता और बहुत से नेत्र रोगो मे लाभदायक है।

शेरनी के दूध का सुर्मा (रजिस्टर्ड)—१ तोला ४)

आंखो के अनेक रोगो मे सर्वोत्तम सुर्मा है, यह हमारे औषधालय का तैयार किया हुआ अजीबोग़रीब सुविख्यात सुर्मा है। इसमें शेरनी के दूध के लिये जो मुल्क आसाम के भीलों से

मिलता है बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। मोती, मूंगा, फ़ीरोज़ा, लालबदख़शानी, ज़मर्रुद, याक़ूत, अक़ीक यमनी, लाजवर्द, सोना मक्खी, दहनाफ़रंग, जाफ़रान, मुश्क, अम्बर, मामीरान चीनी, भीमसैनीकपूर, संगवसरी, सुर्मा अस्फ़हानी वगैरा २, ४० क़ीमती अदवियात से सब्ज़ हरड़ के पानी में ६ माह तक कांमी के सिलबट्टे पर पीसा जाता है, बाद में अर्से दराज तक नीमकी जड़का खोखला करके उसमें रखते हैं, इसके बाद दो बार पीस कर काम में लाया जाता है, इसके इस्तेमाल से बहुत दिनों का अन्धापन बशर्ते कि आंख की बनावट मे बिगाड़ न आया हो अच्छा हो सकता है। इस के सेवन करने वाले को आंख का कोई रोग नहीं हो सकता, दृष्टि को साफ, तेज, और रोशन करता है, ऐनक लगाने की आदत छुड़ा देता है, आंखो की कमज़ोरी, शुरू मोतिया बिन्द, आखो की धुन्ध, जाला, फूला ख़ारिश, ढलका, नाखूना, वगैरा अनेक बीमारियों में मुजर्रब है। मूल्य फी तोला ४) नमूने की शीशी ।।) डाक व्ययादि १२ शीशियो तक ।।-)

मोतियों का सफेद सुर्मा—१ तोला ४) नमूने की शीशी ।।)

ये सुर्मा हमने उन सज्जनों के लिये तैयार किया है जो काला सुर्मा लगाना पसन्द नहीं करते, इसके तमाम गुण शेरनी के दूध वाले सुर्मे के मानिन्द ही हैं।

क्वाथ

अभयादि क्वाथ—१० तोला ।)

त्रिदोष ज्वर, प्यास, खांसी, दाह, बहक, तन्द्रा, कब्ज वमन, और अरुचि को नष्ट करता है।

अर्कादि क्वाथ—१० तोला ।)

नजला, जुकाम, श्लेष्म ज्वर, सन्निपात ज्वर, बहक में लाभदायक है ।

देवदार्वादि क्वाथ—१० तोला ।)

प्रसूत रोग, ज्वर, अतिसार, गर्भावस्था के रोग, पेट का दर्द, दमा, खांसी, प्रलाप, कमर व सर का दर्द प्रभृति रोगों में गुण दायक है ।

गोक्षुरादि क्वाथ—१० तोला ≡)

पेशाब का रुकना, पीप व खून आना व जलन होना इत्यादि में अत्यन्त लाभ देता है ।

द्राक्षादि क्वाथ—१० तोला ।)

प्रलाप, मूर्च्छा, भ्रम दाह, सूजन, प्यासयुक्त पित्तज्वर को नष्ट करता है ।

चित्रकादि क्वाथ— १० तोला ।)

अजीर्ण, मन्दाग्नि व पेट दर्द में लाभदायक है ।

महामंजिष्टादि क्वाथ—१० तोला ।)

रक्त दोष, कुष्ठ, श्वेतकुष्ठ, उपदंश, चम्बल, दाद खाज आदि सब ही त्वक रोगों के लिये अद्भुत गुणकारी है ।

महारास्नादि क्वाथ— १० तोला ।)

सन्धिगत एवं मज्जागत वातव्याधि, आनाह, सर्वांगकम्प, कुबड़ा पन, लकवा, फालिज, टांग का दर्द, जाघ का दर्द इत्यादि रोग शान्त होते हैं ।

निद्राप्रद क्वाथ—१० तोला ।)

नीन्द न आने के रोग को दूर करता है ।

शीतपित्तारि क्वाथ—१० तोला ।)

पित्ती (ददौड़े पड़ना) मे लाभदायक है ।

तिक्तादि क्वाथ—१० तोला ।)

विषैले ज्वरो मे लाभदायक है ।

बिषमज्वरारि क्वाथ—१० तोला ।)

अन्तर देकर आने वाले ज्वरो व मलेरिया मे लाभदायक है

दशमूल क्वाथ—१० तोला ।)

प्रसूत रोगो. ज्वर, प्रलाप आदि मे लाभदायक है ।

त्रिफलादि क्वाथ—१० तोला =)।।

उदररोग, अर्श व कोष्ठबद्धता मे उपकारी है ।

मरहम

बवासीर का मरहम—१ शीशी ।।)

बवासीर के मस्सो पर लगाने से चीस, चबक, सूजन, फौरन ही दूर होजाती है. चैन पड़जाता है । यदि व्रण भी होगये हो ठीक होजाते है ।

उपदंश का मरहम—१ शीशी ।।)

आतशक के जहर को निकालकर जख्मो को भरदेना है । सूजन बेचैनी बहुत जल्द दूर होजाती है । इस मरहम को भोग से पहले लिंगेन्द्री पर लगालेने से उपदंश वाली स्त्री का जहर नही चढ़ता ।

लिंगगजकरन मरहम—१ शीशी १)

पुरुषेन्द्रिय को स्थूल, दृढ़ और लम्बी करता है। विशेष गुण जवाबी पत्र द्वारा मालूम करें।

वातनाशक मरहम—१ शीशी ॥)

गठिया, आमवात, टांग का दर्द कमर का दर्द, मस्तक का दर्द व शारीरिक सबही प्रकार के दर्दों में लगाते ही आराम करता है।

अग्निदग्धका मरहम—१ शीशी ॥)

आग, पानी वगैरह से जलने पर जले स्थान पर लगादेने से छाले नहीं पडने, यदि पड़गये हों तो जलन इत्यादि को बहुत जल्द मिटा देता है और जख्म को भर देता है।

मस्तकशूलनाशक मरहम—१ शीशी ।)

माथे पर लगाने से दर्द दूर होजाता है।

गर्भरोधक मरहम—१ शीशी ॥)

विषय भाग से पहिले इस मरहम को लगाने से गर्भ स्थिति नहीं होती।

योनिकण्डूनाशक मरहम—१ शीशी ॥)

योनि की खाज को दूर करता है।

नस्य

अपस्मारहर नस्य—१ तोला ॥) २॥ तोला १)

मिरगी को दूर करती है, दौरे के समय सुंघाने से दौरा तुरन्त हट जाता है, होश आजाता है।

नासारक्तहर नस्य—१ तोला ॥) २॥ तोला १)

नकसीर को बन्द करती है।

नासारोगहर नस्य—१ तोला ।।) २।। तोला १)

पुराना प्रतिश्याय, नासाव्रण, नासा कृमि इत्यादि नाक की बीमारियों को दूर करती है।

पीनसहर नस्य—१ तोला ।।) २।। तोला १)

नाक बहना, नाक में कीड़े पड़जाना आदि नाक के रोगों को दूर करती है।

मोहान्धसूर्य नस्य—१ तोला ।।) २।। तोला १)

सन्निपात की बेहोशी व बहक को दूर करती है

क्षार, द्रवक्षार, शुष्कसत्व

गिलोयसत्व— १० तोले २)

शरीर में दाह, ज्वर निर्बलता में लाभदायक है।

शिलाजीतसत्व [सूर्यतापी]— १० तोला ८)

शिलाजीतसत्व [अग्नितापी]— १० तोला ४)

यह अनुपान भेद से बहुत रोगों में काम आता है, इससे शक्ति व बुद्धि बढ़ती है, खून को शुद्ध करता व बढ़ाता है, दमा, खांसी, बवासीर और पेशाब की सभी बीमारियों में लाभदायक है।

अपामार्गक्षार— १० तोले १।।)

दमा व खांसी में गुणदायक है।

अर्कक्षार—१० तोले १।।)

यकृत्, प्लीहा और गुल्म रोगों में हितकर है।

अभयालवणक्षार—१० तोले २।।)

यकृत्, प्लीहा, उदर का दर्द, अफारा, कब्ज़ और पेट की

सूजन मे लाभदायक है।

अष्टांगलवणक्षार—१० तोले ४।)

इमलीक्षार—१० तोले ।॥)

वायुगोला व प्लीहा मे लाभदायक है।

कटेरीक्षार—१० तोला १॥)

कफ, खांसी और दमा मे लाभदायक है।

भल्लातकक्षार—१० तोला ३)

अर्श और उदर रोगो मे लाभदायक है।

कदलीक्षार—१० तोले २॥)

पेशाब की बीमारियों मे लाभदायक है।

चनाक्षार—१० तोला ॥)

पेट की बीमारियों मे लाभदायक है। पेट के दर्द को दूर करता है।

तिलक्षार—१० तोले २॥)

मासिकधर्म को खोलकर लाता है।

तम्बाकूक्षार—१० तोले २॥)

खांसी, जुकाम, नजले मे गुणदायक है।

धतूराक्षार—१० तोला १॥)

दमा, खाँसी मे लाभदायक है।

मूलीक्षार—१० तोला १॥)

दर्द गुर्दा और मूत्रकृच्छ्र मे लाभदायक है पेशाब खोलकर लाता है।

पलाशक्षार—१० तोला १॥)

छाती के दर्द और यक्ष्मा में लाभदायक है

यवक्षार—१० तोला १)

अजीर्ण, प्रतिश्याय नजला, कास, गले का **शोथ** इत्यादि रोगों में लाभदायक है।

वज्रक्षार—१० तोला १)

अग्नि दीपक है।

बैश्वानरक्षार—१० तोला १)

अजीर्ण, पेट दर्द व अर्श में हितकारी है।

वासाक्षार—१० तोला १॥)

सर्व प्रकार की खांसी में लाभदायक है।

शरपुंखाक्षार—१० तोला १॥)

प्लीहा में लाभदायक है।

स्नुहिक्षार—१० तोला १॥)

तिल्ली, वायुगोला, पेट का दर्द, उदर रोगों में लाभदायक है।

करीरक्षार—१० तोला १)

अजीर्ण, हृदय की निर्बलता, मदात्य, उन्माद में लाभदायक है।

करंजक्षार—१० तोला १॥)

शोथ, ज्वर, पेट दर्द में लाभ करता है।

अमृताक्षार—१० तोला १)

नए व पुराने ज्वरों में गुणकारक है।

पुनर्नवाक्षार

शोथ, यकृत्, प्लीहा व ज्वरों में लाभदायक है।

नकछिकनीद्राव—१० तोला २)

हिक्का, प्रतिश्याय, गठिया व वायु रोगों में गुणकारी है।

शंखद्राव—१० तोला २।)

पेट का दर्द, दिल का दर्द, बवासीर, अजीर्ण अफारा और यकृत् के रोगों में लाभदायक है।

महाद्राव—१० तोला २॥)

यकृत व प्लीहा और आंत के दर्द में लाभदायक है।

अर्क

अर्क दशमूल—१ बोतल ॥) मात्रा ५ तोला तक

प्रसूत इत्यादि में लाभदायक है।

अर्क पुनर्नवाष्टक—१ बोतल ॥) मात्रा ५ तोला तक

यकृत प्लीहा, शोथ आदि रोगों में लाभकारी है।

अर्क महामञ्जिष्ठादि—१ बोतल ॥।) मात्रा ५ तोला तक

रक्त के सभी विकारों को दूर करता है।

अर्क महारास्नादि—१ बोतल ॥।) मात्रा ५ तोला तक

गठिया का दर्द, जोड़ों की निर्बलता, लकवा, फालिज आदि वायु रोगों में लाभदायक है।

अर्क सुदर्शन—१ बोतल ॥) मात्रा ५ तोला तक

सर्व प्रकार के ज्वरों में गुणदायक है।

अर्क तुलसी—१ बोतल ॥।) मात्रा २॥ तोला तक

खांसी, जुकाम, नज़ला व ज्वर में लाभकारी है। मोती

ज्वर के पीछे पिलाने से दुबारा ज्वर आने का भय नहीं रहता। क्षुधावर्धक व दीपन पाचन है।

अर्क हींग—१ बोतल ।।।) मात्रा २।। तोला तक

अफारा, अजीर्ण आदि अनेक पेट के रोगों में अत्यन्त लाभ प्रद है। अम्लपित्त, खांसी और दमे में भी बहुत गुण करता है।

अर्क गुलाब—१ बोतल अव्वल नं० १।।) १) ।।।) मात्रा ५ तोला तक

हृदय, मस्तिष्क, आमाशय को बलदायक, धड़कन तन्द्रा, मूर्छा, अजीर्ण को दूर करता है। प्यास बुझाता है। ❋

बहुमूल्य द्रव्य

यह द्रव्य साधारणतया बाजार में सच्चे और अच्छे नहीं मिलते। हमने इनका विशेष प्रबन्ध किया हुआ है और पूरी जांच पड़ताल के बाद विक्रयार्थ औषधालय में रखे जाते हैं—निस्सन्देह हमारे यहाँ के ये द्रव्य सर्वतः सच्चे और अच्छे होते हैं। मूल्य भी उचित रखे हुए हैं।

कस्तूरी (तिब्बत दाना)	१ तोला ६०)
कस्तूरी (नैपाली दाना)	१ तोला ४८)

❋इनके अतिरिक्त और बहुत से अर्क बेदमश्क, मकोह, गाजुबा आदि तैयार रहते हैं, इनका विवरण यूनानी औषध के सूचीपत्र में देखें।

कस्तूरी (नैपाली चूरा)	१ तोला ३२)
कस्तूरी (काश्मीरी)	१ तोला २४)
केशर (काश्मीरी मोटा मोगरा)	१ तोला २)
केशर (काश्मीरी मोगरो नं० २)	१ तोला १॥)
अम्बर अशहब (सतारा) (सफेद)	१ तोला ४०)
अम्बर अशहब (सतारा) (जर्द)	१ तोला ३०)
अम्बर अशहब	१ तोला २०)
मोती अनबिंध (बूका) बसरा	१ तोला ३०)
मोती नं० २ " "	१ तोला २४)
मोती नं० ३ " "	१ तोला २०)
गोरोचन	१ तोला १२)
भीमसैनी काफूर	१ तोला १)
भीमसैनीकाफूर (कस्तूरी, अगर इत्यादि वाला)	१ तोला १२)
स्वर्णपत्र (सोने के वर्क)	इसका मूल्य सोने के भाव से ३) प्रति तोला विशेष।

नोट—रत्न उपरत्न तथा उनकी खड़े एवं सर्व प्रकार की काष्ठादिक औषधियें भी उचित भावों पर मिलती हैं उनका भाव लिख कर मंगावें, भाव घटता बढ़ता रहता है।

शोधित द्रव्य

अच्छे प्रकार के पूर्ण रीति से सब द्रव्य शास्त्रानुकूल शुद्ध किये जाते हैं और परीक्षा के बाद औषधालय मे विक्रयार्थ रखे जाते है।

पारद (अष्टसंस्कारित)	१० तोला	६०)
पारद (हिंगुलोत्थ)	१० तोला	३।।।)
पारद	१० तोला	२।।)
हिगुल (शिंगरफ रूमी)	१० तोला	२)
गंधक (आमलासार)	१० तोला	।।)
कुचला (जौं)	१० तोला	१)
कुचला (द्विदल)	१० तोला	।।।)
कुचला (चूर्ण)	१० तोला	१।।)
जयपाल (जमालगोटा)	१० तोला	२।।)
कनकबीज (धतूरा) काला	१० तोला	७)
कनक बीज	१० तोला	।।=)
वत्सनाभ (विष काला)	१० तोला	१।।)
हरिताल (वर्की)	१० तोला	३=)
शिलाजतु (सूर्यतापी-मलाई)	१० तोला	८)
शिलाजतु (अग्नितापी)	१० तोला	४)
शिलाजतु (पत्थर)	१० सेर	६।)

गुग्गुल	१० तोला	।।।)
भल्लातक (भिलावां)	१० तोला	।=)
वंग	१० तोला	१।)
नाग (सीसा)	१० तोला	॥)
यशद (जस्ता)	१० तोला	।।)
ताम्र चूर्ण	१० तोला	।।)
पित्तलचूर्ण	१० तोला	॥)
लोहचूर्ण	१० तोला	१)
तीक्ष्णलोह	१० तोला	५)
स्वर्णमाक्षिक	१० तोला	।।।)
रौप्यमाक्षिक	१० तोला	।।।)
कांस्य (कांसी)	१० तोला	।।)
मंडूर	१० तोला	॥)
तुत्थ (नीलाथोता)	१० तोला	।)
मनःशिला	१० तोला	१)
खपर (पीत)	१० तोला	२॥)
संखिया	१० तोला	१)
रसकपूर	१० तोला	३)
रसाञ्जन (रसौत)	१० तोला	।।)
मधु (शहद)	१ सेर	२)

(विशेष रसायनिक विधि से शुद्ध किया हुआ)

विशुद्ध मधु नं० २	१ सेर	१।।)
विशुद्ध मधु नं० ३	१ सेर	१)
सुर्मा (काला)	१० तोला	।।।)
सुर्मा (सफेद)	१० तोला	२)
कज्जली (समभागगन्धक)	१० तोला	४)
कज्जली (द्विगुण गन्धक)	१० तोला	३)
टंकण	१० तोला	।।)
पीपल चौंसठपहरी	१ तोला	१)

जड़ी बूटियों के तरल सत्व

समय की आवश्यकता को देखते हुए, आवश्यकता के समय पर अच्छी जड़ी बूटियों के न मिलने की कठिनता, तथा वर्तमान समय के मनुष्यों की इच्छाओं को ध्यान में रखते हुए हमने बहुत सी उत्तम प्रकार की ताज़ा जड़ी बूटियों के तरल सत्व तय्यार किये हुए हैं। इन सत्वों में ताज़ा जड़ी बूटियों के सदृश ही गुण विद्यमान हैं। जो लाभ उत्तम प्रकार की बूटी करती है वही लाभ हमारा तय्यार किया हुआ उसका सत्व भी करता है। इनकी बावत प्राप्त हुए प्रशंसा पत्रों से हमें विश्वास होगया है कि ये सत्व औषध विक्रेताओं तथा सर्व साधारण जनता के लिये अत्यन्त लाभकारी हैं। चिकित्सक समुदाय इन्हें औषधों में मिश्रित कर अटूट धन सञ्चित कर रहा है, ये वर्षों रखे रहने पर भी नहीं बिगड़ते। वैद्यों को

इन्हे प्रयोग कर अवश्य परीक्षा करनी चाहिये, इन्हे दो ढाई तोला पानी या किसी अर्क मे मिश्रित कर दिन में ३ बार पिलाना चाहिये।

यहाँ १० तोले वाली शीशी के मूल्य दिये गये हैं।

अनन्तमूल—१ शीशी १।) मात्रा—३० से ६० बून्द तक

उपदंश, रक्तविकार त्वकविकार मूत्ररोगो मे अत्यन्त लाभकारी है।

अहिफेन—१ शीशी १।) मात्रा—१५ से ६० बून्द

अतिसार, आमातिसार, रक्तातिसार, ज्वरातिसार अन्त्र-शूल तथा उदर रोगों के लिये अत्यन्त हितकर है।

अपामार्ग—१ शीशी १) मात्रा—३॥ माशे से ७॥ माशे तक

जलोदर, शोथरोग, उदररोग मूत्ररोग, कफ, खाँसी इत्यादि में लाभदायक है।

अर्जुनत्वक—१ शीशी १) मात्रा—३० से ६० बून्द तक

हड्डी का टूट जाना, उरःक्षत जीर्णज्वर, हृद्रोग, क्षय मे लाभप्रद है।

अर्कमूल—१ शीशी १) मात्रा—५ से १० बून्द

वमनकारक—३० से ६० बून्द

रक्तविकार, कुष्ठ, वातरक्त उपदंश उदररोग, कफ, वमन इत्यादि मे लाभदायक है।

अश्वगंधा—१ शीशी १) मात्रा—३॥ माशे से ७॥ माशे तक

धातुक्षीणता, कृशता, क्षय सन्धिवात व निर्बलता में अत्यन्त लाभप्रद है।

अशोकत्वक—१ शीशी १) मात्रा—३।। माशे से ७।। माशे

प्रदर, गर्भाशय सम्बन्धी रोग, ऋतुदोष, अत्यार्तव, निर्बलता को दूर करता है।

अतिविषा—१ शीशी ३) मात्रा—२ से ४ बून्द तक

बच्चों के ज्वर, वमन, शूल, कृमि, अजीर्ण आदि व्याधियाँ दूर होती है।

अकरकरा—१ शीशी १।।) मात्रा—१० से ३० बून्द तक

इसके सेवन से काम तथा स्तम्भन शक्ति प्रबल होती है अल्प मात्रा में देने से अग्निमान्द्य और अरुचि में बहुत लाभ करता है, इसके लगाने से दन्तशूल में लाभ होता है।

कर्पूर—१ शीशी १।।) मात्रा—२ से ४ माशे तक

इसके सेवन में विशूचिका अग्निमान्द्य, अजीर्ण, अम्लपित्त, उदरशूल, अतिसार, आमातिसार रक्तातिसार और श्वास कासादि रोगों मे बड़ा लाभ होता है।

कचूर— १ शीशो १।।) मात्रा— ३।।। से ७।। माशे तक

रेचक औषधी के सेवन से उत्पन्न हुई अजीर्णता को नष्ट करने मे आश्चर्य जनक औषध है, गले तथा कलेजे की जलन को दूर करता है, श्वास नाली को स्वच्छ करदेता है प्रतिश्याय, ज्वर, खाँसी कफ इत्यादि मे भी बहुत फायदेमन्द सिद्ध हुआ है।

कंटकारिका—१ शीशी १।।।) मात्रा—३।।। से ७।। माशे तक

दमा, कफ, प्रतिश्याययुक्तज्वर, छाती का दर्द, क्षय, यकृत, प्लीहा, रक्तन्यूनता में बड़ा ही उपकार करता है यदि कुटज सत्त्व के साथ दिया जाय पेचिश और अफारा मे आश्चर्य जनक गुण करता है।

कपूरकचरी—१ शीशी १॥) मात्रा ३० से ६० बून्द तक
स्नायु को शक्ति देता है, अजीर्ण, उदररोग और कृमि में लाभकारी है, केशों को अधिक लम्बे तथा काले उत्पन्न करने के इच्छुकों को ये सत्व अवश्य सेवन करना चाहिये।

कस्तूरी—१ शीशी (१ औंस) १) मात्रा—१० से ३० बून्द
इसके सेवन से विशूचिका, अग्निमान्द्य, सन्निपातज्वर पार्श्वशूल, निमोनिया और हृद्रोग में बड़ा लाभ होता है।

कालमेघ—१ शीशी १) मात्रा—१० से ३० बून्द तक
सर्व प्रकार के ज्वर और ज्वर से उत्पन्न निर्बलता, जीर्णज्वर व भूख न लगने में बड़ा हितकारी है, मलेरिया व इन्फ्लूइंजा को रोकता है यदि इसके साथ सखिये का भी मिश्रण कर दिया जाय तो ये कुनीन से भी अधिक गुणकारी सिद्ध होगा, कुनीन की भान्ति दिमागी खुश्की उत्पन्न नहीं करता।

किरात (चिरायता)—१ शीशी १॥।) मात्रा—३० से ६० बून्द
चिरायते का कटु गुण ही अत्यन्त लाभकारी है। अजीर्ण और मन्दाग्नि के लिये निहायत गुणकारी वस्तु है। यह शक्ति-दाता, रक्त शोधक, कृमिनाशक व ज्वरनाशक है। यकृत व प्लीहा के रोगों में भी अत्यन्त हितकर है।

कुटज—१ शीशी १) मात्रा—३॥ से ७॥ माशे तक
आमातिसार ज्वरातिसार अतिसार प्रदर कृमि, रक्त-श्राव, विषमज्वर में हितकर है।

कुष्ठ (कूठ)—१ शीशी १) मात्रा—३॥ से ७॥ माशे तक
उन्माद, अपस्मार, पक्षाघात, वातव्याधि, दमा व कृमि में लाभप्रद है।

गुडूची—१ शीशी १) मात्रा—३।। से ७।। माशे तक

ज्वर, विषमज्वर, रक्तदोष, चर्म दोष व प्रमेह के लिये अत्यन्त हितकर है।

गोरखमुंडी—१ शीशी १) मात्रा—३।। से ७।। माशे तक

रक्तविकार, कृमि, वीर्य विकार मे लाभदायक है।

गोखरू—१ शीशी १) मात्रा—३० से ६० बून्द तक

वीर्य दोष, वीर्य विकार, मूत्ररोग, प्रमेह, अश्मरी व प्रदर रोग शीघ्र नष्ट होते हैं।

जामुन—१ शीशी १।) मात्रा—३० से ६० बून्द तक

अतिसार, रक्तातिसार, आमातिसार मे लाभकारी है मधुमेह के रोगियों के लिये यह सत्व अत्यन्त गुणकारी है, मूत्र में शर्करा के आने को कम करता है, और बार बार प्यास लगने को रोकता है।

तुलसी—१ शीशी १) मात्रा—३।। से ७।। माशे तक

खाँसी, कफ ज्वर, शूल, अजीर्ण वायु, तन्द्रा में अत्यन्त गुण करता है।

दशमूल—१ शीशी १।।) मात्रा—३० से ६० बून्द तक

आयुर्वेद ग्रन्थों मे दशमूल की बड़ी प्रशंसा की है। इसका सत्व, प्रसूत ज्वर, लगातार आने वाले ज्वर, छाती की जलन, मस्तिष्करोग, चोट लगने से उत्पन्न हुई बीमारियो में अत्यन्त लाभकारी है। प्रसव क्रिया के पश्चात स्त्रियों को इसे पिलाने से बहुत लाभ पहुंचते है।

धमासा—१ शीशी १।) मात्रा—३।। से ७।। माशे तक

मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, पित्तज्वर, तृषा, वमन में अत्यन्त गुण करता है। यह सत्व जल में मिश्रित कर मुख के व्रणों के लिये गरारा करने के काम भी आता है, त्वचा की जलन व शारीरिक व्रणों के लिये इसे जल में घोल कर स्नान करने में बहुत लाभ होता है।

निम्बछाल— १ शीशी १) मात्रा—३० से ६० बून्द तक

सर्व प्रकार के ज्वर, रक्तविकार, त्वक् दोष कृमि उपदंश में अत्यन्त लाभकारी है।

पित्तपापड़ा १ शीशी १।।) मात्रा ३० से ६० बून्द तक

यह सत्व उग्र ज्वरों में जिन में त्वचा हाथ और पैरों में जलन हो अत्यन्त हितकारी है।

पुनर्नवा (सांठी)—१ शीशी १) मात्रा—३।। से ४।। माशे तक

कामला, यकृत्, शोथ उदर रोग, कोष्ठ बद्धता त्वक् दोष रोग नष्ट होते हैं।

ब्रह्मडन्डी—१ शीशी १) मात्रा—३।। से ४।। माशे तक

सुगन्धित, शक्तिदाता, पेशाब लाने वाला, वाजीकरण है, शिशु कास, वीर्य की निर्बलता, पौरुष हीनता, बावगोला अजीर्ण, कण्ठमाला आतशक आदि रोगों के लिये हितकर है।

ब्राह्मी—१ शीशी १।) मात्रा—१० से ३० बून्द

मस्तिष्क विकार, उन्माद, अपस्मार, वात व्याधि, त्वक् रोगों के लिये अत्युत्तम वस्तु है।

बिल्व (बेलगिरी)--१ शीशी १) मात्रा ३॥ से ७॥ माशा

मरोड़, अतिसार, अर्श रक्तपित्त, आमातिसार, मन्दाग्नि रोग नष्ट होते हैं।

मधुयष्टि—१ शीशी १) मात्रा—३० से ६० बून्द तक

कफ, खाँसी, कोष्ठबद्धता, प्याम, ज्वर इत्यादि में हितकर है।

मंजिष्टा—१ शीशी १) मात्रा—३० से ६० बून्द तक

रक्त विकार, कुष्ठ, रक्तपित्त, प्रमेह, प्रदर व पित्त को शान्त करता है।

लोध्र—१ शीशी १) मात्रा—३० से ६० बून्द

अतिसार, रक्तश्राव, अत्यार्तव आमातिसार में अत्यन्त लाभकारी है।

वकुची (बावची)—१ शीशी २) मात्रा ३॥ से ७॥ माशे तक

निहायत सुगन्धित है, कोष्ठबद्धता और पित्त रोगों को नष्ट करता है, शक्ति देता है, चर्म रोग कुष्ठ, रक्तदोष इत्यादि के लिये बहुत ही उत्तम है। श्वेत कुष्ठ में विशेष लाभकारी है।

वायविडंग—१ शीशी १॥) मात्रा—३॥ माशे से १। तोला

वायुनाशक, आंत्रक्रुमिनाशक, बलकारक, रक्तशोधक है। अजीर्ण की बहुत अच्छी औषध है।

वासा—१ शीशी १।) मात्रा—३० से ६० बून्द तक

उरः क्षत, रक्तपित्त, यक्ष्मा, काम, श्वास और आमातिसार में इसके सेवन से बड़ा लाभ होता है।

विषतिन्दुक (कुचला) —१ शीशी १।) मात्रा—५ से १५ बून्द

अग्निमान्द्य, अजीर्ण, अरुचि, कोष्ठबद्ध और रोग जन्य दुर्बलता के लिये बडो लाभप्रद वस्तु है। निमोनिया, सूखी खांसी, अर्द्धांग मे भी इससे लाभ होता है। कामोत्तेजक होने के कारण नपुन्सकत्त्व मे भी अच्छा लाभ करता है, शारीरिक सर्व प्रकार के दर्दों को दूर करता है।

विजया— १ शीशी २) मात्रा—५ से १५ बून्द तक

अग्निमान्द्य, अजीर्ण, अर्श और ग्रहणी आदि उदर रोगों के लिये अत्यन्त लाभप्रद है, भूख लगाता है, वेदना, अनिद्रा, वहक, धनुर्वात, उन्माद, अपस्मार और हिस्टीरिया मे बडा लाभ करता है, शिरः शूल और बच्चों के मरोडों मे इसके सेवन से तत्काल लाभ होता है। कम मात्रा मे सेवन करने से कामोत्तेजक भी है।

शंतरा—१ शीशी १।) मात्रा—३॥ से ७॥ माशे तक

अग्निमान्द्य, अजीर्ण, अरुचि, अम्लपित्त मे लाभकारी है, मस्तिष्क का तरोताजा व प्रफुल्लित करता है, गर्मी को तसकीन देता है।

शतावरी—१ शीशी १।) मात्रा—३॥ से ७॥ माशे

ज्ञानतंतु और वीर्य के रोग, वीर्यस्राव, वातव्याधि, प्रदर और प्रमेह रोग नष्ट होते है।

शरपुंखा—१ शीशी १।) मात्रा—३० से ६० बून्द

इसे अजीर्ण प्रमेह, मूत्र कृच्छ्र, निर्बलता व उपदंश मे देते हैं।

यह सत्व पाचक है, ग्वाँसी और छाती के जकड़े रहने में फ़ायदे मन्द है। यकृत् व प्लीहा में विशेष गुणकारी है।

सप्तपर्ण—१ शीशी १।) मात्रा—३॥ से ७॥ माशे तक

यह सत्व बलकारक, वायुनाशक, पेट के दर्द को दूर करने वाला, आमाशय शक्ति वर्धक, ज्ञान तंतुओं तथा शारीरिक शिराओं को सकुचित करने वाला, पौरुष शक्ति वर्धक, कफ नाशक, ज्वरनाशक तथा बारी से होने वाले रोगों को नष्ट करने वाला है। इस सत्त्व मे अच्छे कुनीन सल्फेट के तमाम गुण होते हैं और कुनीन की भान्ति इसके सेवन के पश्चात होने वाले नुक़सानात इस के प्रयोग के बाद कभी नहीं होते। यह सत्व रक्त की कमी तथा बुखारों के बाद रह जाने वाली अशक्ति को नष्ट करने मे एव आमातिसार, रक्तातिसार, प्रतिश्याययुक्त ज्वर को दूर करने में अत्युत्तम है। कम मात्रा में देने से कभी कभी अच्छी दुग्ध वर्धक औषध का भी कार्य करता है।



कतिपय
यूनानी औषधियां

प्यारे मित्रो ! जैसा कि हमने अपनी भूमिका में लिखा है कि हमारे यहाँ सर्व प्रकार की यूनानी औषधियाँ भी तय्यार होती है यहाँ हम उन्हीं का वर्णन कर रहे है। इस सूचीपत्र मे कतिपय प्रसिद्ध २ औषधे ही लिखी गई है। इसके अतिरिक्त और भी बहुत सी मिश्रित औषधे तय्यार रहती है तथा आर्डर आने पर तय्यार कराकर भेजी जाती है। और प्राय: सब ही अमिश्रित दवाएँ भी मिलती हैं।

इतरीफ़लात

सर्व प्रकार के इतरीफलात में प्रधान अंश हड, बहेडा, आमला (त्रिफला) होता है। ये तीनों वस्तुएँ जितनी बड़ी, भारी व उत्तम प्रकार की होती हैं उतना ही इतरीफल मे गुण विशेष होता है। हमारे दवाखाने मे इस बात का खास इन्तज़ाम किया हुआ है, जितनी भी मुफरद दवाएँ हम काम मे लाते है, वे निहायत अच्छे प्रकार की होती हैं यही कारण है कि हमारे दवाखाने की औषधियाँ सेवन करने पर तत्काल गुण करती है।

इतरीफ़ल जमानी—१ तोला ।।। मात्रा—६ माशे से १½ तो०
शिरोवेदना, जुकाम नज़ला, उदर से दुर्गन्धित वाष्प का

उठना. पेट का दर्द इत्यादि मे लाभ दायक है वहम व मीराक को दूर करता है। कोष्ठवद्धत्ता को नष्ट करता है।

सेवनविधि—रात को सोते वक्त अर्क गावजुबाँ १२ तोले या जल के साथ खाये। खट्टी व बादी वस्तुएँ न खाये।

इतरीफल कश्नीज़ी—प्रति तोला)। मात्रा—१ तोला

मस्तिष्क को शक्तिदायक है तथा सर आँख व कान के दर्द को लाभदायक है। पेट से दुर्गन्धित वायु उठने को दूर करता है। नज़ला व जुकाम में लाभदायक है, आंख से पानी बहने को बन्द करता है।

सेवनविधि—जमानी के सदृश

इतरीफल मिकल—प्रति तो०)।। मात्रा—६ माशे से १ तो०

खूनी व बादी बवासीर व कोष्ठवद्धता मे लाभप्रद है। बवासीर के खून को बहुत जल्द बन्द करता है।

सेवनविधि—सुबह-शाम दोनो समय अर्क गावजुबाँ या जल के साथ खायें।

इतरीफ़ल मुलैय्यन—प्रति तोला)।। मात्रा—६ माशे

शिरोरोग व पुरानी शिरोवेदना मे लाभदायक है। आमाशय व आन्तो के दर्द तथा कोष्ठवद्धता को दूर करता है।

इतरीफ़ल शाहतरा—प्रति तोला)।। मात्रा ६ माशे से १ तोला

रक्त को शुद्ध करता है। खाज, फोड़ा फुन्सी आदि मे लाभदायक है। विशेषकर उपदंश तथा तद्जन्य मस्तिष्क की गरमी को दूर करने मे निहायत गुणकारी है।

सेवनविधि—अर्क शाहतरा या अर्क मुसफ्फीखून के साथ प्रात.काल खाये।

अनोशदारू लुलुवी—प्रति तोला ॥) मात्रा—४ माशे

हृदय, मस्तिष्क व यकृत को बल देती है, धड़कन को दूर करती है, आँखो की रोशनी को बढाती है वाजीकरण है और भी इस से अनेक लाभ होते हैं।

अलअहमर—प्रति तोला २०) मात्रा—½ से ¼ रत्ती तक

रक्त को पैदा करता है, स्नायु को शक्ति देता है, स्वाभाविक ऊष्मा की रक्षा करता है, पुरुषत्व शक्ति को अत्यन्त प्रबल करता है, पाचक व क्षुधा वर्धक है।

सेवनविधि—माजून जालीनूस लुलुवी ४ माशे या मक्खन व मलाई १ तोला मे मिलाकर सुबह-शाम खाएँ।

बरशाशा -प्रति तोला ≡) मात्रा—४ से ८ रत्ती तक

भूल की बीमारी, कम्पवायु स्नायिविक निर्बलता अर्द्धांगवात, आमाशय व अन्त्र शूल, प्रतिश्याय व नजले मे लाभकारी है।

सेवनविधि—सुबह या रात को सोते वक्त अर्क गावजुबाँ १० तोला के साथ।

बासलीकूनकबीर—प्रति तोला ॥)

आँखो की खाज व लाली को दूर करता व आँख की रोशनी को बढ़ाता है।

सेवनविधि—सुबह-शाम सलाई द्वारा आंखो मे डाले।

बरूद काफूरी—प्रति तोला ॥)

आँखो की गरमी दूर कर ठण्डक डालती है, आँखो की लाली को शीघ्र नष्ट करती है रोहों के लिये बहुत अच्छी दवा है।

सेवनविधि—दिन में २-३ बार सलाई द्वारा सुर्मे की भान्ति आँखो मे डालें।

तूतियाए कबीर—प्रति माशा ३) मात्रा—¼ रत्ती

आमाशय व अन्त्र को शक्ति देता है, संग्रहणी की अद्भुत औषध है। जरा सा खाने पीने पर फौरन दस्त की हाजत हो जाने में अत्यन्त लाभदायक है।

सेवनविधि—प्रातःकाल जवारिश जंजबील ६ माशे के साथ खाएं।

तिर्याक नजला—प्रति तोला)॥ मात्रा—१ तोला

नजले और खाँसी मे लाभदायक है।

सेवनविधि—१-१ तोला सुबह व रात को सोते वक्त खाएँ खट्टी व देरहजम चीजें न खाएँ।

जवारिशात

जवारिश आमला अम्बरी—१ तोला ।=) मात्रा—६ माशे

(व नुस्खे कलाँ)

हृदय, मस्तिष्क, आमाशय व यकृत को बल दायक तथा ज्वर को दूर करती है। अतिसार मे लाभ दायक है भूख बढ़ाती है।

सेवनविधि—सुबह अर्क गावजुवां १२ तोले के साथ खायें। गरम चीजों से परहेज करें।

जवारिश अनारैन— १ तोला ≈) मात्रा ६ माशे

क्षुधावर्धक, आमाशय व यकृत को बलकारक व पित्त को शान्त करती है।

सेवनविधि—सुबह और शाम खायें।

जवारिश बिसबासा—१ तोला ≈) मात्रा—६ माशे

बादी, बवासीर व बदहजमी मे लाभदायक है, अफारा को दूर कर पाचन शक्ति को बढाती है। वायु के दर्दो को शान्त करती है।

सेवनविधि—सुबह-शाम खायें। बादी चीजें न खायें।

जवारिश जालीनूस (जाफ़रान वाली)–१ तो०)॥ मात्रा–६ माशे

आमाशय व आंतो की निर्बलता, पेट व कमर के दर्द को रफा करती है, पाचक है, मुख को सुगन्धित करती है तथा वायु नाशक है। शिरोवेदना, श्लैष्मिक काम एवं बादी बवासीर, मूत्रातिसार जो सर्दी के कारण हो तथा गुर्दे व मसाने की पथरी को लाभदायक है। बालो की स्याही को स्थिर रखती है। शारीरिक व पुरुषत्व शक्ति को बढ़ाती है।

सेवनविधि—सुबह-शाम भोजन के पश्चात् खाये।

जवारिश जराऊनी सादा—प्रति तोला)॥। मात्रा—६ माशे

मूत्रातिसार प्रमेह, आमाशय और वृक्क की निर्बलता मे लाभदायक है तथा पुरुषत्व शक्ति को बढ़ाती है।

सेवनविधि—अर्क सौंफ १० तोले के साथ सेवन करें।

जवारिश जराऊनी अम्बरी—प्रति तोला ।≈) मात्रा—६ माशे

(बनुस्खे कलाॅ)

आमाशय, यकृत्, वृक्क, मस्तिष्क व कमर को शक्ति देती है शिरोवेदना, मूत्रातिसार, श्लैष्मिक कास, जोड़ो का दर्द और अर्श मे लाभदायक है। पुरुषत्व शक्ति को बढ़ाती है। बालों की स्याही को स्थिर करती तथा सन्तानोत्पत्ति के माद्दे को पैदा करती है।

सेवनविधि—सुबह गरम पानी से खायें।

जवारिश ज़ंजबील—प्रति तोला)॥ मात्रा—६ माशे

आमाशय और अन्त्र की निर्बलता को दूर करती तथा पाचक है। पेट के दर्द तथा अफारे को रफ़ा करती है, भूख खूब लगाती है। विशूचिका मे लाभदायक है।

सेवनविधि—प्रातःकाल या दर्द के समय अर्क सौंफ १० तोले के साथ खायें।

जवारिश ऊदशीरीं—प्रति तोला ~) मात्रा—६ माशे

आमाशय दोष व निर्बलता को दूर करती है। पाचक व क्षुधा वर्धक है।

सेवनविधि सुबह अर्क सौंफ के साथ खायें।

जवारिश ऊदतुर्श—प्रति तोला ~) मात्रा—६ माशे

पित्त के दोषों को दूर करती है आमाशय को शक्तिदायक क्षुधावर्धक व पाचक है।

सेवनविधि—जवारिश ऊद शीरीं के सदृश।

जवारिश कमूनी—प्रति तोला)॥ मात्रा—६ माशे से १ तो०

आमाशय की सर्दी, अजीर्ण व खट्टी डकारो को दूर करती

है। भूख लगाती, कोष्ठबद्धता, पेट के दर्द को दूर कर पेट की हवा को निकालती है।

सेवनविधी—प्रातःकाल अर्क सौंफ के साथ खाएँ।

जवारिश मस्तगी—प्रति तोला)॥ मात्रा ६ माशे से १ तोला

मुंह से राल बहने और मूत्र की अधिकता और दस्तों को रोकती तथा आमाशय और यकृत् की सर्दी व धड़कन को दूर करती है।

सेवनविधि—प्रातःकाल अर्क गावजुबाँ के साथ।

जवारिश मस्तगी—प्रति तोला ~) मात्रा ६ माशे

(बनुस्खे कलाँ)

उपरोक्त जवारिश मस्तगी से विशेष गुणदायक है।

जवाहर मोहरा

दिल, दिमाग़ व जिगर को बलदायक है, स्वभाविक ऊष्मा की रक्षा करता है, रोगों की कमजोरी को दूर कर शक्ति प्रदान करता है, तन्द्रा, धड़कन, हिस्टीरिया के दौरों में अत्यन्त लाभ दायक है। यूनानी तिब की मशहूर दवाओं में से एक है।

प्रति माशा ४) मात्रा—$\frac{1}{4}$ रत्ती

खमीरे गावजुबाँ या मुरवारीद या दवाउलमिस्क

मोतदिल जवाहर वाली में मिलाकर खाये।

जौहर मुनक्का—प्रति माशा ॥।) मात्रा—२ चावल

उपदंश, फिरंग रोग गठिया, गृध्रसी वायु के लिये परमोत्तम योग है। हृदय की कम्पन, घबराहट व दिमाग़ी बेचैनी में लाभदायक है।

सेवन विधि—मुनक्का में बन्द करके दुग्ध या पानी से निगल जायें, दवा दाँतों से न लगे, घी दूध खूब खाएं, खट्टी और बादी चीजों से परहेज करें।

जौहर सेन (जौहर संखिया) प्रति माशा ।।) मात्रा–२ चावल

कफज्वर व आमाशय को निर्बलता में लाभकारी है। उदर रोगों को दूर करता व पुरुषत्व शक्ति देता है।

सेवन विधि–उदर रोगों में माजून दबीदुलवर्द ७ माशा के साथ, ज्वर के रोकने में मुनक्का में बन्द करके, पुरुषत्व शक्ति के लिये माजून जालीनूस लूलुवी ५ माशे में खायें।

हब्ब

हब्बे अहमर–१० गोली १) मात्रा–आधी गोली से १ गोली

हर प्रकार की अशक्ति के लिये उत्तम दवा है, उत्तप्रकार की वाजीकरण औषधियों में अपना स्थान रखती है।

सेवन विधि—प्रात या सायँ गाय के दुग्ध के साथ।

हब्बे अजाराक़ी– १ तोला १)   मात्रा—१ रत्ती

कमर तथा अन्य स्नायविक दर्दों के लिये अच्छी औषध है, पट्ठों को शक्ति देती है।

सेवन विधि—एक गोली प्रातः, सायं दुग्ध या अर्क गावजुबां के साथ निगलें।

हब्बे अशखार–फी तोला ≈)   मात्रा—३ माशे से ५ माशे तक

प्लीहा के शोथ को दूर करने मे अति उत्तम औषध है।

सेवन विधि—प्रातः गरम पानी के साथ खायें।

हब्बे अयारज–प्रति तोला ≈) मात्रा–३ से ६ माशे तक

मस्तिष्क के दोषों को दूर करती है, मिरगी, सर का पुराना दर्द और नेत्र रोगों में लाभकारी है।

सेवन विधि—रात को सोते समय अर्क गावजुबां के साथ खायें।

हब्बे बवासीर खूनी–प्रति तोला ।) मात्रा–३ माशे

खूनी बवासीर के लिये अचूक औषध है।

सेवन विधि—प्रातः गरम जल के साथ खायें।

हब्बे पान–१२ गोली ॥) मात्रा–१ गोली

आतशक की अजीब दवा है।

सेवन विधि—प्रातः एक गोली मलाई में रख कर निगल जायें।

हब्बे पपीता–प्रति तोला ≈) मात्रा–१ से २ गोली तक

अजीर्ण, उदर शूल में लाभ दायक है, हैजे और ताऊन के दिनों में सेवन करने से जहरीले असर से बचाती है।

सेवन विधि–१–१ गोली प्रात. सायं भोजन के पश्चात जल से।

हब्बे पेचिश–प्रति गोली –) मात्रा–एक गोली

मरोड़ और हर प्रकार की पेचिश में अत्यन्त लाभ करती है

सेवन विधि—सोते वक्त पानी के साथ निगलें।

हब्बे तनकार–प्रति तोला –) मात्रा–दो गोली तक

पाचक, क्षुधा वर्धक, कोष्ठ बद्ध नाशक है, आमाशय को बल देती है।

सेवन विधि-रात को सोते समय पानी के साथ निगल लें।

हब्बे जदवार-प्रति तोला १) मात्रा-२ गोली तक।

दिल व दिमाग को शक्ति देती है, अत्यन्त वाजीकरण व स्तम्भक है, वीर्य को पुष्ट करती है, खांसी और नजले में उत्तम है। अफीम की आदत छुड़ाती है।

सेवन विधि—प्रातः या सायं गऊ दुग्ध के साथ निगलें।

हब्बे हलतीत- प्रति तोला ≈) मात्रा--२ गोली

पाचक, वायुनाशक व आमाशय को शक्ति देने वाली व वाजीकरण है।

सेवन विधि—भोजन के बाद सुबह शाम पानी के साथ।

हब्बे हमल—१६ गोली १) मात्रा-१ गोली

गर्भाशय के दोषों को दूर करके गर्भोत्पादक शक्ति देती है।

सेवन विधि—मासिक धर्म के पश्चात् १-१ गोली प्रातः सायं सिद्धसुपारीपाक रसायन ६-६ माशे के साथ ३ दिन तक खायें।

हब्बे हयात—१२ गोली।) मात्रा-२ माशे

वायुनाशक, पाचक, अग्निवर्धक है तथा अफारे को दूर करती है।

सेवन विधि-अर्क सौंफ १० तोले के साथ प्रातः सायं खायें।

हब्बे रसौत- १ तोला।) मात्रा-२ गोली

खूनी व बादी बवासीर में अत्यन्त लाभ दायक है बवासीरी दस्तों को बन्द करती है।

सेवन विधि- साँठी के चावलों के पानी के साथ प्रातः सायं दें।

हब्बे सुर्ख– १२ गोली ≈)

आंखों की जलन सुर्खी व दर्द को दूर करती है।

सेवन विधि—पानी मे घिसकर आंखो के पपोटो पर साधारण गरम करके दिन में २–३ बार लेप करे।

हब्बे सुर्फा–प्रति तोला ।) मात्रा–१ गोली

गले की खराश को दूर करती है। नजले को रोकती है खुश्क खाँसी में बहुत लाभदायक है।

सेवन विधि—१ गोली मुंह मे रख कर लुआब चूसते रहें।

हब्बे सुन्दरी मुन्दरी- १ दर्जन ≡) मात्रा–१ गोली

आमाशय के दर्द को दूर करती है, वायुनाशक व पाचक है

सेवन विधि—अर्क सौंफ १० तोले के साथ।

हब्बे सुरंजान–प्रति तोला ≈) मात्रा–३ माशा

गृध्रसी, गठिया वो जोड़ों के दर्द में लाभ दायक है।

सेवन विधि–जल के साथ प्रात सायं खायें।

हब्बे स्याह—१ दर्जन ≡) मात्रा–१ गोली

आंख की सुर्खी और दर्द को दूर करती है।

सेवन विधि–पानी में घिसकर पपोटो पर लेप करें।

हब्बे शबयार—प्रति तोला ≈) मात्रा–३ माशे से ७ माशे तक

मस्तिष्क के दोषों को दूर करती है, आमाशय के रोगों को दूर कर शक्ति प्रदान करती है, बहरापन, ज्वर, यकृत व प्लीहा शोथ, खांसी आदि में अति लाभदायक है, बवासीर को दूर करती है।

सेवन विधि—४ घड़ी रात रहने पर सौंफ के अर्क के साथ खायें।

हब्बे अम्बर मोमयाई—१६ गोली १।) मात्रा—२ गोली

मस्तिष्क, हृदय, और यकृत को बलदायक है, स्त्री संभोग के पश्चात की सुस्ती व कमजोरी को दूर करती है, अत्यन्त बाजीकरण है। इसके गुण इसके खाने से ही मालूम होते हैं, वृद्ध भी युवा समान शक्तिवान बन जाता है।

सेवन विधि—रात को सोते समय गऊ दुग्ध के साथ लें।

हब्बे कबद नौशादरी-१ दर्जन –) मात्रा-दो गोली

जिगर व मेदे की बीमारियों में अत्यन्त लाभ दायक है। जिगर के सुद्दों को खोलती है, पाचक व कोष्ठबद्ध नाशक है।

सेवन विधि—प्रातः सायं जल के साथ खावें।

हब्बे कत्था—१ दर्जन ≈) मात्रा—१ गोली।

गठिया और आतशक में लाभ दायक है

सेवन विधि—मुनक्का में बन्द कर के निगल जायें।

हब्बे करामत-प्रति टिकिया)।

सर्व प्रकार के फोड़ा, फुन्सी में लाभदायक है।

सेवन विधि-घी में घिस कर फुन्सियों पर लगायें।

हब्बे गुलेपिस्ता-प्रति तोला =) मात्रा—१ गोली

छाती व फेफड़े से बलगम निकालती है, श्लैष्मिक कास में लाभदायक है।

सेवन विधि—मुंह में रख कर लुआब चूसते रहें।

हब्बे लीमू-१ दर्जन ।=) मात्रा—१ गोली

आतशक व गठिया में लाभदाक है।

सेवन विधि—१-१ गोली प्रातः सायं ताजा पानी से निगल जायें।

हब्बे मुदिर—१ दर्जन ।≈) मात्रा—१ गोली

मासिकधर्म को खोलकर लाती है, गर्भाशय के दोषों को दूर करती है। अनियमित मासिकधर्म को नियमित रूप में लाती है।

सेवन विधि—मासिकधर्म से ३ दिन पूर्व प्रात., मध्यान्ह व सायं काल जल के साथ खायें।

हब्बे मुरवारीदी—१६ गोली १) मात्रा-१ गोली।

स्त्रियों के श्वेत प्रदर को रोकती है, जो स्त्रियां युवावस्था में ही वृद्धा सदृश हो जाती है इन गोलिया के सेवन से पुन: युवती बन जाती हैं।

सेवन विधि—प्रात. सायं अर्क अम्बर ५ तोला के साथ।

(नोट—इन्हे गर्भावस्था में सेवन न करें।)

हब्बे मुमसिक—प्रति गोली –) मात्रा-१ गोली

वाजीकरण है, शीघ्र पतन को दूर करती है व स्तम्भक है। सेवन विधि—सम्भोग से १ घन्टा पूर्व गाय के दुग्ध से निगले।

हब्बे याकूत—१६ गोली १) मात्रा-१ गोली

दिल दिमाग और जिगर को शक्ति देती है। वाजीकरण है, शारीरिक निर्बलता को दूर करती है, नजला और खांसी में भी लाभ दायक है।

सेवन विधि—प्रातः सायँ गो दुग्ध के साथ खायें। यदि

इसके साथ जवारिश जालीनूस लूलुई सेवन करें, अत्यन्त गुणदायक होगी।

हब्बे अम्बर–१ गोली ।।) मात्रा–१ गोली

ये गोली शाह अब्बास के लिये तय्यार की गई थीं, बहु मूल्यवान वस्तुओं से बड़ी मेहनत से तय्यार की जाती हैं, पुरुषत्व शक्ति को अत्यन्त प्रबल करती हैं, मस्तिष्क को अत्यन्त बल देती है, लिंगेन्द्रिय में अत्यन्त कठोरता व ताकत पैदा करती हैं।

सेवन विधि—सोते वक्त दुग्ध के साथ खायें।

नोट—खटाई बिल्कुल न खाये।

हब्बे याकूत–१२ गोली १।।) मात्रा–१ गोली

मस्तिष्क, हृदय यकृत, और आमाशय को बल देती है, स्तम्भक और वाजीकरण है, नजले और खांसी को दूर करती है।

सेवन विधि—जवारिश जालीनूस लूलुवी माशे ४।। के साथ

खमीरेजात

खमीरा आबरेशम सादा– प्रति तोला –) मात्रा–६ माशे

हृदय, मस्तिष्क और दृष्टि को शक्ति देता है, घबराहट बेचैनी और धड़कन को दूर करता है।

सेवन विधि—अर्क गावजुबाँ १० तोले के साथ प्रातः सायं खायें।

खमीराआबरेशम (हकीम अर्शद वाला) प्रति तोला।।।)
मात्रा–६ माशे तक

हृदय, मस्तिष्क और यकृत् को बल देता है, धड़कन को दूर करता है, अपवित्र विचारों और गरम नज़ले तथा सौदावी बीमारियों में निहायत फायदे मन्द है।

सेवन विधि—उपर्युक्त सदृश

ख़मीरा आबरेशम (शीरा उन्नाबवाला) प्रति तोला ।।) मात्रा—६ माशे

विषमज्वर और यक्ष्मा को दूर करता है, धड़कन और खुश्क खांसी में लाभदायक है, दृष्टि को तेज़ करता तथा आमाशय को बल देता व स्मरणशक्ति को बढ़ाता है।

सेवन विधि—अर्क़ गावज़ुबाँ १० तोले के साथ प्रातः-सायं

ख़मीरा बनफ़शा—प्रति तोला)। मात्रा—४ तोला

मस्तिष्क की खुश्की और कोष्ठबद्ध को दूर करता है, पित्त को निकालता है, निमोनिया और पसली के दर्द में निहायत फायदा करता है।

सेवन विधि—अर्क गावज़ुबां १२ तोले के साथ प्रातः सायं

ख़मीरा खशख़ाश—प्रति तोला)।। मात्रा—१ तोला

नज़ला व खांसी को दूर करता है, बलग़म में खून आने व मासिकधर्म की अधिकता को रोकता है।

सेवन विधि-अर्क़ गावज़ुबां १२ तोला के साथ प्रातः सायं

ख़मीरा जहरमोहरा—प्रति तोला ।।≈) मात्रा-४ माशा

धड़कन को दूर करता और हृदय को बल देता है प्यास को दूर करता हैं।

सेवन विधि—अर्क़ गुलाब ५ तोला के साथ

खमीरा जमर्रुद– प्रति तोला १) मात्रा–३ माशा

वायु की धड़कन में लाभदायक है हृदय को बलवान करने में अद्वितीय है।

सेवन विधि—अर्क़ गुलाब ५ तोला के साथ

खमीरा सन्दल सादा– प्रति तोला)॥ मात्रा–७ माशा

गरमी व प्यास की अधिकता, धड़कन व घबराहट को दूर करता है। हृदय को बल देता है।

सेवन विधि– अर्क़ गावज़ुबां १२ तोला या अर्क़ गज़र के साथ

खमीरा गावज़बाँ सादा– प्रति तोला)। मात्रा–१ तोला

दृष्टि, हृदय व मस्तिष्क को बल देता है। घबराहट, बेचैनी व प्यास को दूर करता है।

सेवन विधि—चाँदी के वरक़ में लपेट कर अर्क़ गावज़ुबां के साथ खाएं।

खमीरा गावज़ुबां अम्बरी– प्रति तोला ।) मात्रा–६ माशे

(जवाहर वाला)

स्मरणशक्ति, दृष्टि, हृदय और मस्तिष्क को बल देता है थकान को दूर करके हृदय को प्रफुल्लित करता है।

सेवन विधि–अर्क़ गावज़ुबां १२ तोला के साथ प्रातः सायं

खमीरा गावज़ुबां अम्बरी– प्रति तोला ।।≈) मात्रा—६ माशे

(जदवार, ऊदसलीब वाला)

मस्तिष्क और स्नायविक दुर्बलता को दूर करता है अर्द्धांगवात, अपस्मार, अर्दित (लक़वा) कम्पवायु और हिस्टीरिया में अत्यन्त लाभ करता है।

सेवन विधि-अर्क गावजुबाँ १२ तोला के साथ प्रात. सायं

खमीरा मुरवारीद— प्रति तोला ।≈) मात्रा-६ माशे

हृदय और मस्तिष्क को बल देता है, घबराहट व परेशानी को दूर करता है. मोतीझारा व चेचक में लाभदायक है।

सेवन विधि—अर्क गावजुबाँ के साथ प्रात: सायं खाये।

खमीरा मुरवारीद—(बजुम्बे कला) प्रति तोला ।||) मात्रा-३ माशे (सोने के वर्क वाला)

चेचक, मोतीझारा (मियादी बुखार) में अत्यन्त लाभकारी है. हृदय की गरमी और घबराहट को दूर करता है, दस्तो और शरीर में से रक्त के निकल जाने से जो निर्बलता होती है उसे दूर करने व हृदय और मस्तिष्क को बल देने में अद्वितीय है।

सेवन विधि— सायं-प्रात अर्क गजर के साथ खाये

खमीरा याकूत– प्रति तोला ।||) मात्रा-४ माशे

रंज, फिकर, परेशानी व घबराहट को दूर करता है, वायु की धड़कन और उन्माद में लाभदायक है।

सेवन विधि—अर्क गजर के साथ खाये।

दवाये सूजाक–(दवा कढ़ाई वाली) प्रति तोला ।।) मात्रा-१।। माशा

नये और पुराने सूजाक में अति गुणदायक है।

सेवन विधि—शर्बत बजूरी २ तोला के साथ खायें।

दवाउल-मिस्कें

दवा उलमिस्क बारिद सादा— प्रति तोला ≈) मात्रा-६ माशा

हृदय और मस्तिष्क को बल देती है. आमाशय की निर्बलता को दूर करती है, हृदयको प्रफुल्लित करती है।

दवाउलमिस्क बारिद– (जवाहर वाली) प्रति तोला ॥) मात्रा-६ मा०

गुण उपर्युक्त दवाउलमिस्क बारिद से अधिक शक्तिशाली होते हैं।

सेवन विधि—अर्क गज़र के साथ खाये

दवाउलमिस्क हार सादा—– प्रति तोला।) मात्रा-६ माशे

अर्द्धांगवात, अर्दित, कम्पवायु, धनुषवात, धड़कन में लाभ दायक है, हृदय और मस्तिष्क को बल देती है।

सेवन विधि—अर्क गज़र ७ तोला अर्क अम्बर २ तोला के साथ सायं प्रातः खिलाये।

दवा उलमिस्क हार–(जवाहर वाली) प्रति तोला ॥)

यह उपर्युक्त दवाउलमिस्क हारसादा से विशेष गुणदायक है।

दवाउलमिस्क मोतदिल– (जवाहर वाली) प्रति तोला ।≈)

मात्रा–७ माशे तक

हृदय, यकृत, और आमाशय को बल देती है, वातज धड़कन, उन्माद में अति लाभदायक है, पाचक है।

सेवन विधि–अर्क बादयान ४ तोला, अर्क गज़र ३ तोला, अर्क अम्बर २ तोला, मिश्री २ तोला के साथ खायें।

दयाकूज़ा– प्रति तोला)॥ मात्रा–१ तोला

सूखी खांसी और नज़ले में लाभदायक है, सीने को शुद्ध करता है।

रुब्बेजात

रुब्बे अनार शीरीं– प्रति सेर २।।) मात्रा–१ तोला तक

प्यास को बुझाता, दिल व दिमाग को बल देता तथा हृदय को प्रफुल्लित करता है।

सेवन विधि–हमराह अर्क गावजुबाँ या अर्क नीलोफर दें।

रुब्बे अनार तुर्श–प्रति सेर २।।) मात्रा–१ तोला

वमन, उबकाई को रोकता है, दस्तों को बन्द करता व हृदय को बल देता है।

सेवन विधि –प्रातःकाल अर्क गावजुबां १० तोला के साथ दें।

रुब्बे अंगूर शीरीं– प्रति सेर २।।) मात्रा–१ तोला।

वमन और अतिसार को दूर करता है, आमाशय और हृदय को बल देता है।

सेवन विधि–अर्क गावजुबाँ १२ तोला के साथ पीये।

रुब्बे अंगूर तुर्श– प्रति सेर २।।) मात्रा २ तोला

घबराहट और परेशानी को दूर करता है, यकृत और आमाशय को बल देता है।

सेवन विधि–अर्क गावजुबां के साथ पीयें

रुब्बे बीह शीरीं– प्रति सेर २।।) मात्रा–१ तोला

दस्त को और क़ै को रोकता है, यकृत, हृदय और आमाशय बल देता है।

सेवन विधि–अर्क गावजुबां, अर्क़ बादयान के साथ

रुब्बे जामन– प्रति सेर २) मात्रा–१ तोला

जिगर और मेदे की गरमी को दूर करता है, दस्तों को रोकता है, प्लीहा शोथ को दूर करता है।

सेवन विधि–अर्क़ बादयान के साथ पीयें।

रौग़नयात

रौगन अरँडी– प्रति तोला)॥। मात्रा–३ तोला

रेचक है, मेदे के तमाम शुद्दों को ख़ारिज करता है, आमातिसार मे लाभ दायक है, जोड़ों के दर्द में मालिश की जाती है

सेवन विधि–गरम दुग्ध मे मिला कर पीयें।

रौगन बाबूना– प्रति तोला)॥

कान, कमर और जोड़ों के दर्दों में लाभदायक है, शोथ को दूर करता है।

सेवन विधि–कुछ गरम करके मालिश करें।

रौग़न बादाम तलख़ (कड़वा)– प्रति तोला।)

सर और कान के दर्दों को दूर करता है।

सेवन विधि–गरम करके कान में डालें, सर पर ठंडे तेल की मालिश करें।

रौग़न बादाम शीरीं– प्रति तोला =)

सब ही अवयवों की शुष्कता को दूर करता है मस्तिष्क को बल देता है, नींद लाता है, कोष्ठ बद्धता में लाभदायक है।

सेवन विधि–कोष्ठ बद्धता यदि आंतों की शुष्कता से है तो १ तोला रोग़न थोड़े गरम दुग्ध में डाल कर पीयें। नींद और मस्तिष्क बल के लिये सर पर मलें।

रोगन बर्स–॥ तोला ।।)

सफ़ेद दागों को दूर करने के लिये बहुत अच्छी दवा है ।

सेवन विधि–सुबह-शाम दागों पर मले ।

रोगन बनफशा– प्रति तोला –)

दिमाग़ की खुश्की को तथा नीन्द न आने को दूर करता है

सेवन विधि–दिमाग़ पर मालिश करे ।

रोगन तुरब– प्रति तोला –)

कान के दर्द को दूर करता है, वायु नाशक है ।

सेवन विधि–कुछ गरम करके १-२ कतरा कान में डाले ।

रोगन हिना–प्रति तोला ≈)

जोड़ों के दर्द और गृध्रसी में लाभदायक है, बालों को स्याह करता है । मालिश करे ।

रोगन धतूरा– प्रति तोला ≈)

अर्द्धांग वायु, अर्दित, और कम्प वायु में लाभ दायक है ।

सेवन विधि–कुछ गरम करके मालिश करे ।

रोगन आमला–प्रति तोला –)

सर को ठण्डा रखता है, उपदंश में लाभदायक है ।

सेवन विधि–मालिश करे

रोगन सुर्ख– प्रति तोला ।)

अर्द्धांग वायु, अर्दित, स्नायविक निर्बलताओं में लाभदायक है, चोट के दर्द और शोथ को दूर करता है ।

सेवन विधि–मालिश करे ।

रोगन सुरंजान– प्रति तोला –)

कमर, पिण्डलियों और जोड़ों के दर्द मे लाभदायक है।

रौगन शफा–प्रति तोला =)

अर्द्धांग, अर्दित और जोड़ों के दर्द मे लाभदायक है, गर्भाशय के रोगों, कान के भारीपन में गुणकारक है।

सेवन विधि–दर्दों पर मालिश करें, गर्भाशय के रोगों में कपड़ा तर करके अन्दर रखें।

रौगन किस्त– प्रति तोला ।)

गुण रौगन शफा सदृश हैं।

रौगन काहू– प्रति तोला –)

नीन्द लाता है, सर के दर्द को दूर करता है, मस्तिष्क मे तरी पहुँचाता है।

रौगन कुचला– प्रति तोला ।)

जोड़ों के दर्द को दूर करता है, पट्ठों को बल देता है।

रौगन कदू– प्रति तोला –)

सर की खुश्की को दूर करता है, मस्तिष्क को बल देता है, नीन्द लाता है, सर के गरम दर्द को दूर करता है।

रौग़न गुल— प्रति तोला)॥

कान और सर के दर्द को दूर करता है, दिमाग़ी खुश्की मे लाभदायक है, सन्निपात में गुण करता है, सर पर लगाये।

रौगन लबूब सबआ— प्रति तोला =)

अनिद्रा को दूर करता है, मस्तिष्क की खुश्की तथा बाबज सन्निपात मे गुणकारी है।

रौग़न मस्तगी– प्रति तोला –)

आमाशय और पट्ठों को बल देता है, कमर के दर्द और जिगर की सख्ती को दूर करता है। मालिश करें

रौगन मोम– प्रति तोला ।)

सर्व प्रकार के दर्दों को दूर करता है, जले हुए में लाभदायक है।

रौग़न दारचीनी– प्रति तोला ।)

पेट के दर्द को दूर करता है, पेट की हवा को खारिज करता है, शक्ति प्रद है, जोड़ों के दर्द को दूर करता है।

सेवन विधि—जोड़ों के दर्द में हलका २ मलना चाहिये, पेट की तकलीफों में २—३ बून्दें जरा सी बूरा पर टपका कर ठंडे पानी के साथ लें।

रौग़न सोया— प्रति तोला)॥

पट्ठों की एंठन और गुरदे के दर्द को दूर करता है।

रौगन मालकंगनी— प्रति तोला –)

पसलियों, कमर, व गठिया के दर्दों मे लाभदायक है, प्रायः मस्तिष्क व पट्ठों के रोगों, अर्द्धांग व अर्दित में बहुत गुण करता है। स्मरण व पुरुषत्व शक्ति को बढाता है दृष्टि को तेज़ करता है

सेवन विधि—दर्दों पर मालिश करें, सर पर लगायें दृष्टि के लिये हथेली और तलवों पर मलें

रौगन कश्नीज— प्रति तोला)॥

हृदय और मस्तिष्क की गरमी को दूर करता है, मन को प्रफुल्लित करता है, नींद लाता है।

सेवन विधि—सर पर लगायें और बार बार सूंघें,

रौग़न बादयान– प्रति तोला –)

कोष्ठवद्धता व पेट के दर्द को दूर करता है। जिगर तिल्ली, गुर्दे व मसाने के रोगों में लाभदायक है।

सेवन विधि— १ तोला गरम दुग्ध में डालकर पीवे जिगर, तिल्ली, गुर्दे व मसाने पर मलें।

रोगन इलायची— प्रति तोला =)

सुगन्धित है चित्त को प्रसन्न व दर्दों को दूर करता है।

सेवन विधि—मलना चाहिये।

रौगन जायफल— प्रति तोला –)॥

इस के गुण रौगन मालकंगनी के सदृश हैं

सेवन विधि—मालिश करनी चाहिये।

रौगन लौंग— प्रति तोला –)॥

इसके गुण रौगन जायफल से मिलते जुलते हैं

सेवन विधि—मलना चाहिये।

सफ़ूफ़

सफ़ूफ़ आब इयात— प्रति तोला)॥ मात्रा–१ तोला तक

पाचक व कोष्ठ बद्धता नाशक है।

सेवन विधि—अर्क सौंफ १० तोला या पानी के साथ सेवन करें।

सफ़ूफ़ अनार दाना— प्रति तोला)॥ मात्रा–६ माशा।

कोष्ठबद्धता व पेट के दर्द को दूर करता है।

सेवन विधि—अर्क सौंफ या गरम पानी से फांकना।

सफ़ूफ़ इन्द्री जुल्लाब— प्रति तोला –) मात्रा—६ माशा

सूज़ाक में लाभ दायक है। पेशाब खोल कर लाता है

ज़ख्मों को माफ़ करता है।

सेवन विधि—दूध की लस्सी के साथ ।

सफ़ूफ़ मासिकउलबोल — प्रति तोला ।) मात्रा—६ माशा

मूत्र का टपकते रहना व रात को बिस्तर में निकल जाने में अत्यन्त लाभदायक है।

सेवन विधि—जल के साथ ।

सफ़ूफ़ बीजबन्द— प्रति तोला)।। मात्रा ६ माशा

वीर्य के पतलेपन व बहने को बन्द करता है शीघ्र पतन को दूर करता है ।

सेवन विधि—गो दुग्ध के साथ सायं प्रात: लें।

सफ़ूफ़ चुटकी— प्रति तोला)।। मात्रा–३ रत्ती से २ माशा तक

बच्चों के अजीर्ण को दूर करता है ।

सेवन विधि—मां के दुग्ध में घोल कर दें ।

सफ़ूफ़ चोबचीनी— प्रति तोला =) मात्रा–६ माशा

जोड़ों के दर्द व उपदंश में लाभदायक है ।

सेवन विधि—सायं प्रात: पानी के साथ ।

सफ़ूफ़ हवाली— प्रति तोला –) मात्रा– ६ माशा

गर्भा स्त्रियों को भूक लगाता है, मट्टी आदि खाने की इच्छा को दूर करता है ।

सेवन विधि— गरम पानी से ।

सफ़ूफ़ ज़ियाबीतस— प्रति तोला –) मात्रा–६ माशा ।

पेशाब की अधिकता को दूर करता है । गुर्दे और मसाने को शक्ति देता है ।

सेवन विधि—छाछ के साथ

सफ़ूफ़ ज़हरमोहरा— प्रति तोला =) मात्रा–३ माशा

धड़कन को दूर करता व हृदय को बल देता है।

सेवन विधि—अर्क़ गुलाब ६ तोले श० गुड़हल १ तो० के साथ।

सफ़ूफ़ उलअमलाह— प्रति तोला ।।।) मात्रा–४ रत्ती

क्षुधा वर्द्धक है व कोष्ठ बद्धता को दूर करता है, आमाशय को शक्ति देता है।

सेवन विधि—जवारिश कमूनी ६ माशे के साथ।

सफ़ूफ़ शीरीं (सफ़ूफ़ लौंगा)— प्रति तोला –) मात्रा–५ माशा

अजीर्ण नाशक, पाचक, क्षुधा वर्द्धक और आमाशय को शक्ति देने वाला है।

सेवन विधि— ताजा पानी के साथ।

सफ़ूफ़ तीएन– प्रति तोला –) मात्रा–६ माशा

रक्तातिसार, व आमातिसार में लाभदायक है।

सेवन विधि—घी से चिकना करके पानी से फांके।

सफ़ूफ़ क़लई– प्रति तोला =) मात्रा–६ माशा

सूज़ाक नया व पुराने व वीर्य के बहने में लाभ दायक है।

सेवन विधि—गाय के दुग्ध से।

सफ़ूफ़ कमलगट्टा– प्रति तोला –) मात्रा–६ माशा

शीघ्र पतन व वीर्य के पतले पन को दूर करता है वाजीकरण है।

सेवन विधि—प्रातः गो दुग्ध के साथ।

सफ़ूफ़ गोन्दकतीरा– प्रति तोला –) मात्रा–१ तोला

शीघ्र पतन, बीर्य का पतलापन दूर होता है। स्तम्भक व वाजीकरण है।

सेवन विधि—गो दुग्ध के साथ।

सफूफ मुशतही– प्रति तोला =) मात्रा–३ से ४ माशे तक।

भूक लगाता है, पाचक है।

सेवन विधि—भोजन के पीछे पानी से लें।

सफूफ महजल– प्रति तोला =) मात्रा–६ माशे

बदन को दुबला करता है।

सेवन विधि—सुबह पानी के साथ सेवन करें।

सफूफ हिन्दी– प्रति तोला ।) मात्रा–२ माशा

पाचक व क्षुधा वर्द्धक है, अफारे को दूर करता है।

सेवन विधि—भोजन से पहले खाएँ।

सफूफ नमक सुलेमानी– प्रति तोला –) मात्रा–३ माशे

पाचक व क्षुधा वर्धक है और आमाशय की बहुत-सी बीमारियों को दूर करता है।

सेवन विधि— खाने के बाद खायें।

सफूफ नमक शेखउलरईस– प्रति तोला)॥ मात्रा–३ माशे

यकृत और आमाशय को शक्ति देता है, पाचक व वायु नाशक है, जोड़ों के दर्द को दूर करता है।

सेवन विधि–आवश्यकता होने पर अर्क सौंफ १२ तोले के साथ लें।

सफूफ नमक हाजिम– प्रति तोला –) मात्रा–३ माशे

पाचक, क्षुधा वर्धक, वायुनाशक और आमाशय को बलदायक है

सनूनजात

सनून तम्बाकू– प्रति तोला –)

दांतों के दर्द को दूर करता है, मसूढ़ों को मजबूत करता है सेवन विधि—प्रातः सायं दान्तों पर मलें।

सनून पोस्त मुर्गीलान– प्रति तोला –)

हिलते हुए दान्तों को जमाता है और साफ करता है।

सनून चौबचीनी– प्रति तोला –)

मुख की गन्दगी को दूर करता है, मसूढ़ों से खून बहने को रोकता है

सनून मुजल्ली– प्रति तोला –)

दान्तों को चमकाता है, मसूढ़ों को मजबूत करता और खून बहने को रोकता है।

शर्बत

शर्बत आलूबालू— प्रति बोतल १) मात्रा–२ तोला

मसाने और गुर्दे के मवाद को निकालता है, सूजाक को दूर करता है।

सेवन विधि—अर्क कासनी १२ तोला मे मिलाकर लें

शर्बत अहमदशाही– प्रति बोतल १।) मात्रा–२ तोला

सौदावी बीमारियों और मालीख़ूलिया को दूर करता है, कब्ज को रफ़ा करता है।

शर्बत एजाज– प्रति बोतल १) मात्रा–२ तोला

पुराना बुखार, खुश्क खांसी, यक्ष्मा को दूर करता है फुफ्फुस को बल दायक है।

शर्बत अनार तुर्श– १ बोतल १) मात्रा–४ तोला

वमन और जी मिचलाने को दूर करता है, पित्त के दस्तों को बन्द करता है, भूख बढ़ाता है, छाती की जलन, आमाशय और यकृत की गरमी को दूर करता व प्यास को बुझाता है, गरमी की धड़कन को दूर करता है।

शर्बत अनार शीरीं– १ बोतल १) मात्रा–४ तोला

प्यास को बुझाता है, हृदय, यकृत और आमाशय को शक्ति देता है, खून पैदा करता है, धड़कन को बन्द करता व गरमी की खांसी में लाभदायक है।

शर्बत अँजबार– १ बोतल १) मात्रा–२ तोला

खून आने को बन्द करता है, यकृत को बल देता है, गरमी को दूर करता है।

शर्बत अंजीर– १ बोतल १) मात्रा–४ तोला

तिल्ली की सूजन और नये तथा पुराने कब्ज को दूर करता है

शर्बत अंगूर तुर्श– १ बोतल १) मात्रा–४ तोला

वमन, जी मिचलाना, गर्भा स्त्रियों की कै को बन्द करने में अत्यन्त लाभदायक है, हृदय को शक्ति देता है, पित्त के ज्वर को दूर करता है, प्यास बुझाता है।

शर्बत अंगूर मीठा– १ बोतल १) मात्रा–४ तोला

ताजा खून पैदा करता है, शरीर को पुष्ट करता है, खून को शुद्ध करता है, हृदय मस्तिष्क और आमाशय को बल देता है और प्यास को बुझाता है।

शर्बत अननास– १ बोतल १=) मात्रा–४ तोला

हृदय, मस्तिष्क और यकृत को बल देता है, मन को प्रसन्न करता व मसाने की खराबियों को दूर करता है, पेशाब खोल कर लाता है, धड़कन को दूर करता है।

शर्बत बज़ूरी बारिद– १ बोतल ।।।) मात्रा–४ तोला

जिगर की सूजन, पेशाब की जलन, मसाने और गुर्दे की तमाम बीमारियों में लाभदायक है।

शर्बत बज़ूरी हार— १ बोतल ।।।) मात्रा–४ तोला

मसाने और गुर्दे की बीमारियों में लाभदायक है।

शर्बत बज़ूरी मोतदिल— १ बोतल ।।।) मात्रा–४ तोला

पेशाब खोल कर लाता है, गुर्दे और मसाने को मवाद से साफ करता है, सूजाक को दूर करता है।

शर्बत बनफ़शा– १ बोतल ।।≈) मात्रा–४ तोला

खाँसी,जुकाम, नजला और बुखार में लाभदायक है, प्यास को बुझाता है।

शर्बत बीह– १ बोतल १) मात्रा–४ तोला

हृदय, मस्तिष्क और आमाशय को ताक़त देता है, पेशाब खोल कर लाता है दस्त और क़ै को बन्द करता है, प्यास और जिगर की गरमी को बुझाता है।

शर्बत तमरहिन्दी– १ बोतल ।।।≈) मात्रा–४ तोला

जी मिचलाना और वमन को रोकता है, कोष्ठबद्ध को दूर करता है, प्यास को बुझाता है, पित्त तथा खून की गर्मी को दूर करता है।

शर्बत तूतस्याह– १ बोतल ।।।) मात्रा–२ तोला

गले और हलक़ की सूजन व दर्द में लाभदायक है, गरम नजले को दूर करता है, प्यास को बुझाता है।

शर्बत खशखाश– १ बोतल १) मात्रा–२ तोला

खाँसी और नजले में लाभदायक है।

शर्बत दीनार– १ बोतल १) मात्रा–४ तोला

जिगर के सुद्दे खोलने, कब्ज को तोड़ने, पसली के दर्द, मसाने व रहम की खराबियों को दूर करने में लाभदायक है।

शर्बत रंगतरा– १ बोतल १) मात्रा–४ तोला

प्यास बुझाता है, मन को प्रसन्न करता है, कै व जी मिचलाने को दूर करता है, गर्मी और घबराहट में लाभदायक है।

शर्बत ज़ूफ़ा मुरक्कब— १ बोतल १।) मात्रा–४ तोला

बलगम को निकालता है, खांसी व दमा को दूर करता है

शर्बत सेब शीरीं– १ बोतल १) मात्रा–४ तोला

धड़कन को दूर करता है, दिल को ताकत देता है, मन को प्रसन्न करता है, दस्त व कै को बन्द करता है. भूख बढ़ाता व खून पैदा करता है।

शर्बत सन्दल— १ बोतल १) मात्रा–४ तोला

मन को प्रसन्न करता है, हृदय को बल देता है, गर्मी के सिर दर्द को तसकीन देता है।

शर्बत उन्नाब– १ बोतल ।।।) मात्रा—४ तोला

खून को साफ करता है, खांसी और सीने के दर्द, हलक़ की गरमी और प्यास को दूर करता है।

शर्बत फ़ाल्सा– १ बोतल १) मात्रा—४ तोला

हरारत व प्यास को बुझाता है, दिल, जिगर और मेदे की गरमी को दूर करता है, पेशाब की जलन व सूज़ाक में लाभदायक है, धड़कन को दूर करता है।

शर्बत फ़र्यादरस– १ बोतल १) मात्रा—२ तोल

खांसी, जुकाम वग़ैरा में गुणदायक है।

शर्बत केवड़ा– १ बोतल ।।।≈) मात्रा—४ तोला

दिल, दिमाग़ और तमाम इन्द्रियों को प्रफुल्लित करता है। धड़कन, दिलकी गरमी, ग़शी को दूर करता है। खून को साफ़ करता है। पसीने को सुगन्धित करता है। काहिली और सुस्ती को दूर करता है।

शर्बत गावज़ुबां– १ बोतल १।) मात्रा—४ तोला

दिल और दिमाग़ को शक्ति देता है, बुखार व खांसी में लाभदायक है।

शर्बत गुड़हल– १ बोतल १) मात्रा-४ तोला

धड़कन के लिये खास दवा है। दिल, दिमाग़ व मेदे को ताक़त देता है, घबराहट और हरारत को दूर करता है, हैज़ खोल कर लाता है।

शर्बत मुसफ़्फ़ी खून– १ बोतल १) मात्रा—४ तोला

खून को साफ़ करता है, आतशक मे लाभदायक है।

शर्बत मवीज़– १ बोतल १।) मात्रा—४ तोला

मोटापा लाता है। ताज़ा सुर्ख खून पैदा करता है, चेहरे का रंग निखारता है। वाजीकरण है।

शर्बत नीलोफ़र– १ बोतल ।।≈) मात्रा—४ तोला

हरारत व प्यास को दूर करता है, पित्त के दर्द में लाभदायक है, दिल व दिमाग को ताक़त देता है। खांसी, नज़ला, हलक़ का खुरखुराना, सीने की खुश्की में लाभकारी है। नीन्द लाता है। पित्त के बुखार में बहुत गुण करता है।

शर्बत मुलैयन– १ बोतल १) मात्रा—४ तोला

आंतों की खुश्की व कब्ज़ को दूर करता है।

शर्बत वर्द मुफ़र्रर– १ बोतल १) मात्रा—४ तोला

पेशाब की जलन और गुर्दे व मसाने की हरारत को दूर करता है। फासिद मवाद को दस्तों की राह निकालता है।

शर्बत बादाम– १ बोतल १।) मात्रा—४ तोला

यह शर्बत मीठे बादामों से तयार किया जाता है। दिल, दिमाग, फेफड़े और सीने को ताकत देता व तरावट पहुंचाता है। सर का दर्द, चक्कर की बीमारी, आँखों के आगे अन्धेरा आना व आंखों की रोशनी को लाभदायक है, कब्जकुशा है, मसाने की जलन, ज़ख्म और सूज़ाक मे लाभदायक है। और अनेक गुण हैं। गरमी के मौसम की उमदा ठण्डाई है।

शर्बत जौहर उश्बा (रक्तशोधक) १ बोतल पौंड वाली १।)

मात्रा—२ तोला

यह शर्बत उश्बा, अनन्तमूल आदि बहुत सी रक्तशोधक दवाओं से तयार किया जाता हैं, फिसाद खून की तमाम बीमारीयों को जड़ से दूर करने वाला है। फोड़े, फुन्सी, स्याह व सफ़ेद दाग़, खाज, पित्ती वग़ैरा को दूर करने में अकसीर है। उपदंश के

जहरीले माद्दे को खून व रग व पट्ठों में से निकालने में एक ही है। गठिया, भगन्दर, पुराने जख्म, बवासीर, नासूर, व रहम की बीमारियों में बहुत ही लाभदायक है। हर मौसम में सेवन कर सकते हैं।

शर्बत गुलाब— १ बोतल १) मात्रा—४ तोला

बदहज़मी, कै व जी मिचलाना को दूर करता है। दिल, दिमाग व मेदे को ताकत देता है। गरमी से धड़कन को लाभदायक है, कब्ज कुशा है। बेहोशी व ग़शी को दूर करता है। पेशाब की जलन व चीस चबक को हटाता है।

शर्बत मुसहिल— आधी बोतल १) मात्रा—४ तोला

यह शर्बत तुरंजबीन, शीरखिश्त वगैरा दस्तावर दवाओं से तयार किया जाता है जो मनुष्य जुल्लाब की दवाएं पीने से घबराते हैं उन नाजुक मिजाजों के लिये तयार किया गया है। वात पित्त, कफ, के दोषों को दस्तों के रास्ते बड़ी आसानी से निकालता है। बुखारों में भी दिया जाता है सुद्दों को निकालता है। जिगर की गरमी को दूर करता है। भूक लगाता है। खून को साफ़ करता है।

नोट—शर्बतों के भाव में चीनी के भावादि के अनुसार घट बढ भी सकते हैं।

शयाफ़

[वर्ति]

शयाफ़ अबियज़— १दर्जन –)

आंख की सुर्खी व जलन को दूर करती है।

शयाफ़ आबार– १ दर्जन ≈)

आंख की जलन, दर्द चबक को दूर करता है।

शयाफ वर्दी— १ दर्जन ≈)

आंख की तीव्र वेदना में लाभदायक है फौरन आराम करता है।

ज़मादात

[लेप]

जमाद उश्क़– ५ तोला ।–)

तिल्ली की सख्ती और सूजन को दूर करता है।

सेवन विधि–पुराने सिरके में मिला कर तिल्ली पर कुछ गरम लेप करें।

जमाद बवासीर– ४ तोला ।–)

बवासीर के मस्से को तहलील करता है, कब्ज को तोड़ता है

सेवन विधि–मस्सों पर लेप कर भंग की टिकिया बांधे।

जमाद जालीनूस— ५ तोला ।–)

मेदे की सख्ती को दूर करता है और पेट के अवयवों को नरम करता है।

सेवन विधि–हरी मकोह के पानी, सिरका व गुलरौग़न मे मिला कर लेप करें।

जमाद जरब— ५ तोला ।–)

खुजली में लाभदायक है।

सेवन विधि–घी में मिला कर लेप करें ।

जमाद खनाजीर— ५ तोला ।।)

कण्ठमाला की गिलटियों को तहलील करता है ।

सेवन विधि - गिलोय के पानी मे मिला कर गिलटियों पर लगावें ।

जमाद मुनव्वम-- २।। तोला ।।)

नीन्द लाता है । कनपटी और पेशानी पर लेप करें ।

तिला

अजीबोगरीब तिला— मूल्य छोटी शीशी १।)

देखो पन्ना ४ (पेटेन्ट लिस्ट)

सिद्धकस्तूरीरसायन तिला-- १ शीशी २।।)

देखा पन्ना ४ (पेटेन्ट लिस्ट)

आनन्दवर्धक तिला– १ शीशी ५)

देखो पन्ना ५ (पेटेन्ट लिस्ट)

नमदीलीकी पोटलियां– १४ पोटलियां ३)

देखो पन्ना ५ (पेटेन्ट लिस्ट)

अर्कयात

अर्क इलायची — १ बोतल ।।) मात्रा–५ तोला

क़ै व दस्तों को रोकता है दिल को ताक़त देता व मन को प्रसन्न करता है ।

अर्क अननास– १ बोतल ।।।) मात्रा–६ तोला

पेशाब खोल कर लाता है, मसाने की पत्थरी को तोड़ता है

अर्क बादियान– १ बोतल ≋) मात्रा–५ तोला

बदहज़मी और मेदे व जिगर की बीमारियों में लाभदायक है

अर्क बिरंजासुफ़– १ बोतल ।) मात्रा–१२ तोला

जिगर की सूजन व कमज़ोरी को दूर करता है, मेदे को ताक़त देता है बलग़मी बुखारों मे गुण दायक है।

अर्क बेदसादा– १ बोतल ।–) मात्रा–१२ तोला

दिक व गरम बीमारियों में लाभदायक है।

अर्क बेदमुश्क– १ बोतल १), ।।।)

दिल, दिमाग़ व मेदे को ताक़त देता है, गर्मी के दर्द सर में लाभदायक है, गरमी को दूर करता व बाह को बढ़ाता है।

अर्क पान– १ बोतल ।।≈) मात्रा–७ तोला

आँतों के दर्द को दूर करता है, मेदे व दिल को ताक़त देता व मन को प्रसन्न करता है।

अर्क पौदीना– १ बोतल ।) मात्रा—७ तोला

बदहज़मी, हैज़ा और क़ै व उबकाई मे लाभदायक है

अर्क चोबचीनी अम्बरी– १ बोतल ३) मात्रा—५ तोला

दिमाग़ को ताक़त देता है, हवास को तेज करता है दिल को ख़ुश करता है, हाज़िम है, भूक लगाता है फोड़े फुन्सी वग़ैरा को दूर करता व ख़ून को साफ़ करता है।

अर्क ख़स– १ बोतल ।) मात्रा—५ तोला

तपेदिक में लाभदायक है

अर्क शाहतरा– १ बोतल ≋) मात्रा—१० तोला

खून की खराबी और त्वक् रोगों में लाभ करता है।

अर्क शीरी मुरक्कब— १ बोतल ।।≈) मात्रा—७ तोला

नीन्द न आना, धड़कन, मादा सौदावी, तपेदिक्, सिल व हरारत में लाभदायक है।

अर्क उश्बा— १ बोतल ।।) मात्रा—७ तोला

आतशक, सूज़ाक और खून व त्वक् रोगों में गुणकरता है

अर्क उन्नाब— १ बोतल ।।≈) मात्रा ५ तोला

खून को साफ़ करता है, दिल को ताक़त देता है प्यास को बुझाता है।

अर्क़ अम्बर— १ बोतल २) मात्रा—५ तोला

दिल, दिमाग़, जिगर व मेदे को ताक़त देता है, बवासीर या हैज़ के खून के जियादह निकल जाने से जो कमजोरी व ग़शी हो जाती है बहुत जल्द दूर करता है। वाजीकरण है।

अर्क फ़रााका— १ बोतल १) मात्रा— ७ तोला

धड़कन, वहशत और मालीखूलिया को दूर करता है, ऊँचे ख़याल पैदा करता है, दिल, दिमाग़ व जिगर को ताकत देता है।

अर्क केवड़ा— १ बोतल १।) मात्रा—१ से ४ तोला तक

दिल को खुश करता है, बदन में आराम लाता है। सब प्रकार की गरमी को दूर करता है। खून को साफ़ करता है। घबराहट को दूर करता है।

अर्क गावज़बां— १ बोतल ≡) मात्रा—१० तोला

दिल, दिमाग़, जिगर को ताकत देता है, प्यास को दूर करता व बुखारों मे गुणकारी है।

अर्क गजर सादा—१ बोतल ।) मात्रा—१० तोला

दिल की गरमी व प्यास को दूर करता है, दिल को ताक़त देता है।

अर्क गजर खास—१ बोतल १) मात्रा—७ तोला

अर्क गजरसादा से विशेष गुण करता है।

अर्क गजर अम्बरी (नुस्खे कलाँ) १ बोतल २) मात्रा—५ तोला

दिल व दिमाग़ को ताक़त देता है, रंग निखारता है चेहरे को लाल करता है। वाजीकरण है।

अर्क गुलाब—१ बोतल नं० १ १), नं० २ ।॥)

दिल, दिमाग़, मेदे को ताक़त देता है। गरमी की धड़कन को दूर करता है। दर्द मेदा और कै को बन्द करता है। ग़शी व बेहोशी को दूर करता है।

अर्क मुसफ़्फ़ीख़ून—१ बोतल ।) मात्रा—२० तोला

फोड़े, फुन्सी, खाज और त्वक रोगों में लाभ दायक है।

अर्क मतबूख़हफ़्तरोज़ा—१ बोतल ॥) मात्रा—८ तोला

आतशक व जोड़ों के दर्द और सौदावी रोगों में लाभ दायक है।

अर्क मकोय—१ बोतल ≡) मात्रा—१० तोला

प्यास को दूर करता है, असली हरारत, दिल, जिगर व दिमाग़ को ताक़त देता है, धड़कन को दूर करता है।

अर्क मुण्डी—१ बोतल ≡) मात्रा—७ तोला

रोशनी को तेज़ करता है, ख़ून को साफ करता है, दिल, दिमाग़ व जिगर को ताक़त देता है।

अर्क नानख्वाह—१ बोतल ।।) मात्रा—३ तोला

रियाह को तहलील करता है, मेदे के दर्द को दूर करता है।

अर्क नीलोफ़र—१ बोतल ।) मात्रा—१० तोला

सर के दर्द को दूर करता है. अन्दुरुनी हरारत को तसकीन देता तथा दिल व दिमाग़ को ताक़त देता है।

अर्क हराभरा—१ बोतल १) मात्रा—६ तोला

जिगर व फेफड़ों को ताक़त देता है, धड़कन और सूजाक मे लाभदायक है दिक़ के बीमारो के लिये खास तौहफ़ा है, दुबलेपन को दूर करता है।

कोहल

(सुर्मा)

कोहल ब्याज—प्रति तोला ।।)

आंखों के जाला. फूला, नाख़ूने को काटता है, धुन्ध व तारीकी को दूर करता है। साय प्रात आंखो में डालें।

कोहल रोशनाई—प्रति तोला ।।)

नाख़ूना, आँख की खारिश व कमजोरी में लाभदायक है।

कुश्तेजात

कुश्ता मिर्जान जवाहरवाला—प्रति तोला १०) मात्रा–२ चावल

नजला, जुकाम, खाँसी, भूलकी बीमारी और दिमाग़ की कमजोरी में लाभदायक है।

नोट—बाकी कुश्तेजात के लिये इसी लिस्ट के पेज ५ से १६ पर देखें।

गुलक़न्द

गुलक़न्द सेवती—१ सेर १) मात्रा—२ तोला
धड़कन और घबराहट को दूर करता है, दिल को ताक़त देता है।

गुलक़न्द गुलाब—१ सेर १) मात्रा—४ तोला
मेदे और जिगर को ताक़त देता है, क़ब्ज़ को तोड़ता है, हाजिम है।

गुलक़न्द माहताबी—१ सेर १) मात्रा—२ तोला
दिल की धड़कन में लाभदायक है।

लऊक़

लऊक़ आब तरबूज़—प्रति तोला ―) मात्रा—१ तोला
खाँसी, नज़ला, फेफड़ों के व्रण व पुराने बुख़ार में लाभदायक है।

लऊक़ आबनेशकर—प्रति तोला ―) मात्रा—१ तोला
यक्ष्मा और कास में लाभदायक है।

लऊक़ बादाम—प्रति तोला ―) मात्रा—१ तोला
सूखी खाँसी और सूखे ठसके में लाभदायक है, सीने की ख़ुश्की को दूर करता है, दिमाग़ को ताक़त देता है।

लऊक़ ख़शख़ाश—प्रति तोला ―) मात्रा—६ माशा
खाँसी, नज़ला, बलग़म व ख़ून आने में लाभदायक है।

लऊक सपिस्तां—प्रति तोला)। मात्रा—१ तोला

गाढ़े व लेसदार बलगम को छांटता है। खांसी व नजले को दूर करता है।

मुरब्बजात

मुरब्बा आमला—१ सेर २) १) ।।।) मात्रा—१ अदद

दिल व दिमाग, मेदा व जिगर को ताकत देता है। बवासीर को दूर करता है।

मुरब्बा अननास—१ सेर १।।) मात्रा—२ तोला

धडकन, घबराहट व बेचैनी को दूर करता है। मन को प्रसन्न करता है।

मुरब्बा बीह—१ सेर १।) मात्रा—२ तोला

दिल, दिमाग व मेदे को ताकत देता है। धड़कन घबराहट व बेचैनी को दूर करता है।

मुरब्बा बेलगिरी—१ सेर १) मात्रा—३ तोला

पेचिश व सबप्रकार के दस्तो मे लाभदायक है।

मुरब्बा पेठा—१ सेर ।।।) मात्रा—२ तोला

दिल को ताकत देता है। बवासीर में लाभदायक है, अन्दर की हरारत को दूर करता है।

मुरब्बा जंजबील—१ सेर १) मात्रा—२ तोला

पाचक है। कमर को शक्ति देता है। गुर्दों की सरदी को दूर करके गरम करता है। रियाह को तहलील करता है।

मुरब्बा सेब—१ सेर १।) मात्रा—४ तोला तक

दिल व दिमाग़ को ताक़त देता है। घबराहट, धड़कन और बेहोशी में बहुत लाभदायक है।

मुरब्बा गज़र—१ सेर ।॥) मात्रा—४ तोला तक

दिल, दिमाग़ व मेदे को ताक़त देता है।

मुरब्बा हलेलासब्ज़—१ सेर ~) १॥) १) मात्रा—१ अदद

कब्ज को तोड़ता है, भूक लगाता है, पाचक है मेदे व दिमाग़ को ताकत देता है।

मरहम

मरहम उश्क़—१ तोला ~)

सख्त सूजन खासकर कंठमाला की गिलटियों को बिठाता है।

मरहम जदवार—१ तोला =)

जख्मो को भरता है सख्त सूजन को बिठाता है चोट के दर्दों को दूर करता है।

मरहम दाखलयून—१ तोला =)

रहम की गिलटियो, सूजन व जख्मों मे लाभदायक है।

माजूनात

माजून आरदखुरमा—१ तोला)॥ मात्रा—१ तोला

मनी के पतलेपन, शीघ्रपतन, मनी के बहने को दूर करती है वाजीकनरण है।

सेवनविधि—कुश्ता कलई (बंग) २ चावल मिलाकर खावे

माजून इज़ाराक़ी—१ तोला =) मात्रा—३ माशा

मिरगी, कम्पन वाय, अर्द्धांग वग़ैरा वायु रोगों में लाभदायक है। पट्ठों को मजबूत करती है।

माजून इस्पन्दसोख़तनी—१ तोला -) मात्रा—६ माशा

कामोत्तेजक व स्तम्भक है।

माजून पेठा (पेठा पाक)—१ तोला -) मात्रा—२ तोला

दिल, जिगर, फेफड़े तथा मेदे को ताकत देती है, दिमाग़ को पुष्ट करती है। शरीर की कमजोरी और दुबलेपन को दूर करती है। पुरानी खांसी, यक्ष्मा, अम्लपित्त, जीर्णज्वर मनी बहना शीघ्रपतन और दमे में लाभदायक है।

सेवनविधि—गोदुग्ध के साथ

माजून सालब (सालब पाक) १ तोला -) मात्रा—२ तोला

देखो पृष्ठ ८६

सेवनविधि—गोदुग्ध के साथ

माजून जालीनूस लुलुवी—१ तोला ।।) मात्रा—६ माशा

(१) कुवते बाह और ख्वाहिश को बढ़ाती है। (२) ग़लतकारी और अधिक मैथुन से, गुर्दे, मसाने इत्यादि में कमज़ोरी आकर दौरान खून में जो दुर्बलता आजाती है उसको असली हालत में ले आती है। (३) लिंगेन्द्रिय में सख़्ती और ताक़त पैदा करती है। (४) जोश को देर तक क़ायम रखती है। (५) मर्द की अज़मत क़ायम रखती है। (६) चेहरे का रंग निखारती है। (७) खून खूब पैदा करती व गई हुई शक्ति को फिर वापिस लाती है।

सेवनविधि—जाड़े में २ चावल सोने की भस्म मिलाकर खांय और अर्क गज़र अम्बरी ५ तोला ऊपर से पियें, गरमियों मे अर्क बेदमुश्क ७ तोला के साथ लें।

माजून चोबचीनीअम्बरी—१ तोला ।) मात्रा—६ माशा

खून को साफ करती व ताजा खून पैदा करती है। कूवत बाह को बढ़ाती है। जोडों के दर्द को दूर करती है। मेदे को ताक़त देती है।

माजून हजरउलयहूद—१ तोला ~) मात्रा—७ माशा

गुर्दे और मसाने को ताक़त देती है। पत्थरी व रेत को निकालती है।

सेवनविधि—अर्क सौंफ तोला ६ अर्क अन्नास तोला ६ शर्बत बजूरी तोला २ के साथ सेवन करें।

माजून हमलअम्बरीउलवीखां—१ तोला ।।) मात्रा—५ माशा

(माजून हाफ़िज़उलजनीन)

जिन स्त्रियो का गर्भ बार बार गिर जाता है या बच्चा पैदा होने के बाद परछांवे या कमेड़े की बीमारी से मर जाता हो, उन्हें गर्भ के दिनों में इसका सेवन करना चाहिये। इस से गर्भ नहीं गिरेगा और बच्चा पूरा और स्वस्थ पैदा होगा। स्त्री की शक्ति पूर्णतया कायम रहेगी। प्रायः इसके सेवन से पुत्र उत्पन्न होता है। जियादह से जियादह तीसरे महीने के प्रारम्भ से ही खिलाना शुरू करदेना चाहिये।

सेवनविधि—प्रातःकाल अर्क गुलाब के साथ या केवल पानी के साथ।

माजून दबीदउलवर्द—१ तोला ~) मात्रा—७ माशा

इसतस्का (जलोदर) और जिगर व मेदे की कमजोरी मे लाभदायक है। जिगर की सूजन को दूर करता है।

सेवनविधि—अर्क सौंफ, अर्क बिरंजासुफ ६–६ तोला शर्बत दीनार ४ तोला के साथ सेवन करें।

माजून ज़बीब—१ तोला ~) मात्रा—७ माशा

मिरगी में बहुत मुफीद है।

सेवनविधि—अर्क बादयान १२ तोला के साथ

माजून .जंजबील—१ तोला ~) मात्रा—६ माशा

गर्भाशयके बहुत से रोगो को दूर करती है स्मरण शक्ति को बढ़ाती है।

सेवनविधि—अर्क सौंफ व गाजुवां ६–६ तोला के साथ लें

माजून सुपारीपाक—१ तोला ~) मात्रा—१ तोला

स्त्रियो के सफेद की बीमारी के लिये अक्सीर है। शक्ति लाती है।

सेवनविधि—१-१ तोला सुबह-शाम गो-दुग्ध से लें।

माजून सना—१ तोला)॥ मात्रा—१ तोला

क़ब्ज़ और सर के दर्द मे बहुत गुण करती है।

माजून सुरंजान—१ तोला)॥ मात्रा—१ तोला

गठिया, नुकरिस, लंगडी का दर्द मे लाभदायक है। क़ब्ज़ कुशा है।

माजून सन्दल--१ तोला ~) मात्रा—६ माशा

दिल की धड़कन और परेशानी को दूर करती है, दिल को ताकत और ख़ुशी देती है।

सेवनविधि—अर्क गाजुबां व अर्क गजर ६-६ तोला मिश्री २ तोला के साथ लें।

माजून तिला—१ तोला २) मात्रा—३ माशा

दिल और दिमाग़ को बेइन्तहा ताक़त देती है। चेहरे की रंगत को सुर्ख़ करती है। शीघ्र पतन (सुरअत इन्ज़ाल) को दूर करती है। वाजीकरण है। धड़कन और वायु रोगों का नाश करती है।

सेवनविधि—गो दुग्ध के साथ

माजून उश्बा—१ तोला)॥ मात्रा—६ माशा

ख़ून की ख़राबी, जोड़ों के दर्द, आतशक और कोढ़ में बहुत ही लाभदायक है।

सेवनविधि—अर्क शाहतरा व अर्क उश्बा ६-६ तोला के साथ लें।

माजून फ़लासफ़ा—१ तोला)॥ मात्रा—६ माशा

गुरदे व कमर को ताक़त देती है। कुवत बाह को बढ़ाती है, पेशाब की तमाम बीमारियों को दूर करती है, भूक लगाती है, गठिया के दर्द में लाभदायक है।

सेवनविधि—अर्क सौंफ १२ तोला के साथ

माजून कुन्दर—१ तोला)॥ मात्रा—६ माशा

बार बार पेशाब आने में लाभ देती है। गुरदे व मसाने को ताक़त देती ।

सेवनविधि—पानी के साथ खाए।

माजून घीकवार (कुमारी पाक) १ तोला ≈) मात्रा—१ तोला

काम शक्ति को बढ़ाती है। कब्ज तथा सर के दर्द में लाभदायक है। गठिया में बहुत मुफ़ीद है। हाज़्मा शक्ति को तेज़ करती है। भूक बढ़ाती है। औरतो की ऐयाम माहवारी की ख़राबियों व कमर के दर्द को दूर करती है।

सेवनविधि—गो दुग्ध के साथ।

माजून मासिकउलबौल—१ तोला ≈) मात्रा—७ माशा

मनी बहने, बार बार पेशाब आने व औरतो की सफेद की बीमारी में बहुत मुफ़ीद है।

सेवनविधि—अर्क गाज़ुबां १२ तोला के साथ लें।

माजून मसीही मुश्कवाली—१ तोला ।।) मात्रा—६ माशा

बेहद कामोत्तेजक है, कमर को ताक़तवर बनाती है। भोजन को हज़म करती है।

सेवनविधि—अर्क अम्बर ५ तोला के साथ

माजून मूसली (मूसली पाक)—१ तोला ≈) मात्रा—१ तोला

देखो पन्ना ८७

इनके अलावा और माजूनात के लिये पन्ना ८३ से ८६ तक पर देखें।

मुफ़र्रहात

मुफ़र्रह आज़म—१ तोला ।≈) मात्रा—६ माशा

ताज़ा ख़ून पैदा करती है, धड़कन और परेशानी को दूर करती है, दिल को ख़ुश करती है, मेदे को ताक़त देती

है, भोजन हज़्म करती है, दिल, दिमाग़ व जिगर को ताक़त देती है, कामोत्तेजक है।

सेवनविधि—दुग्ध या पानी के साथ लें।

मुफ़र्रह बारिद जवाहरवाली—१ तोला ।) मात्रा—६ माशा

दिल को ताक़त देती है, धड़कन को दूर करती है, हरारत को तसकीन देती है।

सेवनविधि—अर्क गज़र, बेदमुश्क व मिश्री के साथ।

मुफ़र्रह याक़ूतीमोतदिल—१ तोला ।।।) मात्रा—६ माशा

दिल, दिमाग़, जिगर व मेदे को ताक़त देती है। भूक लगाती है। दस्तों की बीमारी व रहम की बीमारी में लाभदायक है।

सेवनविधि—अर्क गाज़ुबां १२ तोला के साथ लें।

मुफ़र्रह जवाहरात—१ तोला १) मात्रा—३ माशा

यह मुफ़र्रह बहुतसी कीमती दवाओं से तय्यार की जाती है, मुश्क, अम्बर, बहुत से जवाहरात, सोना, मोती वग़ैरह इसके ख़ास जुज़ हैं, खाने मे निहायत लज़ीज़ है। दिल, दिमाग़, जिगर व मेदे को ताक़त देती है व हाज़िम है तथा भूक लगाती है।

जिन्हें दिमाग़ी काम बहुत करना पड़ता है उन लोगों के लिये एक नेमत है, अगर प्रात:काल इसकी एक मात्रा खाली जाय तो दिन भर कैसा ही दिमाग़ी मेहनत का काम हो थकान नहीं होती, अगर थका हुआ दिमाग़ वाला खाये फ़ौरन थकान दूर होजाती है साथ ही याददाश्त को बढ़ाती है, आँखों की रोशनी को क़ायम रखती व बढ़ाती है। लगातार खाने वाले मनुष्यों के बालों को सफ़ेद नहीं होने देती, मुफ़र्रह क्या है अमृत है।

वीर्यवर्धक

यह हमारे औषधालय की सुविख्यात औषध है। इसके सेवन से मनुष्य के शरीर में वीर्य की इस बहुतायत से वृद्धि होती है जैसे खल, चने व बिनौले खिलाने से गाय के दुग्ध में घी बढ़ता है। वीर्य की कमी के कारण जीवन से निराश हुए व्यक्तियों के लिये ये औषध अमृत है। स्त्रियों के प्रदर रोग तथा कोष्ठवद्धता (कब्ज) को नष्ट करती है।

मात्रा—३ माशा, सुबह-शाम दुग्ध से लें।

१ पैकेट २) डाक व्ययादि ।।-)

स्वर्णतरल

यह चीज हमारी संस्था ने एक विशेष रासायनिक क्रिया द्वारा तैयार की है। स्वर्ण (सोना) को तरल रूप में लाया गया है। इसके सेवन से जो जो लाभ होते हैं स्वर्ण के सेवन करने वाले उन्हें भली प्रकार जानते हैं। स्वर्ण एक जगत प्रसिद्ध निहायत ताकतवर चीज है। राजा, महाराजा, नवाब, रईस, जमींदार, तालुकेदार, जज, बैरिस्टर्स वकील आदि मनुष्यों के सेवन करने योग्य है। मूल्य, ६ माशे की शीशी ३) रु० डाक व्ययादि ।।-)

मात्रा—५ बूंद सेवनविधी—सुबह-शाम दूध में मिला कर पीवें।

ग्रन्थ प्रकाशक विभाग

हमारी संस्था के इस विभाग ने आयुर्वेद (चिकित्सा जगत) की जो जो सेवाएँ आजतक की हैं वे कुछ छुपी हुई नहीं हैं। हम सर्वदा से ही हर मुमकिन तरीके से आयुर्वेदोन्नति के लिये प्रयत्न करते चले आरहे है और वही काम अपने इस विभाग द्वारा भी अंजाम दे रहे है; भगवान् की कृपा से इसी प्रकार प्रयत्नशील रहेंगे और उत्तरोत्तर जनता की अधिक से अधिक सेवा करते रहेंगे।

आज तक जो जो ग्रन्थ इस विभाग ने प्रकाशित किये है उनका थोड़ा २ परिचय हम यहाँ देंगे उसे पढ़कर आपको ज्ञात होगा कि इन ग्रन्थों को प्रकाशित कर तथा अपरिमित धन व्यय करके जनताको कितना लाभ पहुँचाने की चेष्टा की गई है। यदि जनता अधिक से-अधिक तादाद में इन्हें मोल लेकर हमारे उत्साह को बढ़ाये, हमें पूर्ण विश्वास है कि हम शीघ्र ही और भी उपयोगी ग्रन्थ आपकी सेवा मे उपस्थित करेंगे।

इन ग्रन्थों को केवल चिकित्सकों तक ही सीमित न रखकर सर्व-साधारण के लाभ के दृष्टिकोण को सामने रखकर प्रकाशन करने का विशेष ध्यान रखा गया है यही कारण है कि साधारण जनता ने भी इन्हें बहुत अपनाया है। मामूली हिन्दी लिखा पढ़ा हुआ व्यक्ति भी इन ग्रन्थों की भाषा को भली प्रकार समझ सकता है और समय पड़ने पर लाभ उठा सकता है। हमारे इन ग्रन्थों को मनन करके बहुत से व्यक्ति चिकित्सा कार्य सीख गये है और जनता में उन्होंने विश्वास पाकर अपना क्षेत्र क़ायम कर लिया है। छोटे-छोटे गाँवों में जहाँ वैद्य, हकीम तथा डाक्टर की सहायता प्राप्त नहीं होसकती, हमारे ये ग्रन्थ उस आवश्यकता के समय एक अनुभवी चिकित्सक का काम देते हैं, नये

चिकित्सक को प्रैक्टिस आरम्भ करने का रास्ता दिखाते हैं, पहिले से कार्य करनेवाले चिकित्सकों के अनुभव को बढ़ाते है। एक साधारण व्यक्ति भी इन ग्रन्थों की मदद से अपनी स्त्री, बच्चों व कुटुम्बियों की चिकित्सा आवश्यकता के समय स्वयं कर सकता है और उन्हें मौत के मुँह मे जाने से बचा सकता है। इन ग्रन्थों की भाषा इतनी सरल है और हर स्थान पर प्रत्येक विषय को इस प्रकार समझाने का प्रयत्न किया गया है जैसे एक सुयोग्य शिक्षक अपने विद्यार्थी को शिक्षा देता है। ग्रन्थों का कुछ थोड़ा-सा परिचय लिखने के अन्त में इनके विषय में प्राप्त कुछ थोड़ी-सी सम्मतियां भी दी गई है भारतवर्ष के प्रसिद्ध लीडर्स, औफ़ी-सर्ज, वकील, बैरिस्टर्स, वैद्य, हकीम, डाक्टर्स और ख्याति प्राप्त पुरुषो ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। आशा है आप भी इन्हें प्राप्त कर लाभ उठायेंगे और निज ज्ञान को बढायेंगे।

महिला रोग विज्ञान—मूल्य २) साइज़ २०×३० अठपेजी

इस ग्रन्थ मे स्त्रियों को होने वाले प्रायः सभी रोगों के लक्षण, भेद, प्रभेद, निदान, और उनकी आज कल प्रचलित एलोपैथिक, होम्योपैथिक आयुर्वैदिक और यूनानी सर्व प्रकार की चिकित्सा का सविस्तार वर्णन इस ख़ूबी के साथ किया गया है कि समय पडने पर एक साधारण गृहस्थ भी सभी रोगों के एक पूर्ण चिकित्सक का काम कर सकता है, और अपनी स्त्री को किसी डाक्टर, हकीम, वैद्यकी सहायता के बिना ही स्वस्थ बना सकता है। बहुत-सी स्त्रियाँ अपने गुप्त रोगों को किसी चिकित्सक के सामने कहती हुई लज्जित हुवा करती हे। उन्हे अब इस लज्जा के कष्ट के सहन करने की कोई आवश्यकता नही। इस ग्रन्थ की सहायता से अपने रोग को समझ जायेंगी और घर बैठे अपना इलाज स्वयं ही कर सकेंगी। यह ग्रन्थ २०० से अधिक पृष्ठ ३० से भी ऊपर रंगीन चित्रों से सुसज्जित है। एक बड़ी मनोहर पढ़ने लायक तथा नित्य पास रखने लायक उपयोगी वस्तु है, जब आप इसे देखेंगे मन प्रसन्न हो जायेगा।

इस ग्रन्थ को जनता के लिये अत्यन्त उपयोगी समझकर अखिल भारतवर्षीय २३वें हिन्दी साहित्य सम्मेलन की प्रदर्शिनी ने स्वर्णपदक प्रदान किया है।

सूज़ाक और आतशक—मूल्य २) साइज़ २० × ३० अठपेजी

इस ग्रन्थ का नाम ही इसमे वर्णित विषय को जाहिर कर रहा है।

सूज़ाक (Gonorrhoea) आतशक (Syphilis) ये संक्रामक रोग भी भारत के स्त्री पुरुषों दोनों में ही ऐसी बहुतायत से फैले हुए हैं कि प्रतिशत् मुश्किल से १५-२० ही ऐसे व्यक्ति होंगे जिन्हें कम से कम एक बार भी ये रोग न हुए हों। बहुत से मनुष्य तो इन्हें प्रायः व्यभिचार जनित रोग होने के कारण अपने चिकित्सक के सामने लज्जावश प्रगट ही नही करते, जिसका फल यह होता है कि मनुष्य के गुह्यांग गल कर बिल्कुल बेकार हो जाते है और इन रोगों के अन्तिम दशा पर पहुँच जाने से उन को गठिया इत्यादि रोग उत्पन्न हो जाते हैं, जिन से उस मनुष्य का सम्पूर्ण शरीर ही बेकार हो जाता है। इस ग्रन्थ मे इन रोगों के विषय मे सविस्तार विवेचन है। इस ग्रंथ को पढ कर मनुष्य को किसी चिकित्सक के समक्ष अपने इन रोगों को प्रगट करने की लज्जा नहीं उठानी पड़ेगी स्वयं ही अपना इलाज कर सकेगा। रंगीन चित्रों से सुशोभित है, प्रत्येक मनुष्य के काम की चीज़ है।

मलेरिया—मूल्य १) साइज़ २० × ३० अठपेजी

आप भली प्रकार जानते है कि मलेरिया एक ऐसा ज्वर है जिसमें लाखों स्त्री पुरुष, बच्चे प्रतिवर्ष ग्रस्त होते हैं। ये ज्वर केवल एक ही दिन में मनुष्य को इतना कमज़ोर कर देता है जैसे महीनों से बीमार क्षयरोग का रोगी होता है। इस ग्रन्थ में इस ज्वर के विषय में तमाम नवीन तहकीकात, इस ज्वर के लक्षण, भेद, निदान, चिकित्सा का वर्णन ऐसी ही खूबी से किया गया है जैसे उपर्युक्त ग्रन्थों में है, ये भी बड़े काम की चीज़ है।

शिशुरोग विज्ञान—मूल्य १॥) साइज़ २० × ३० अठपेजी

क्या आपको ज्ञात है कि कितने नन्हें २ अबोध बालक प्रति वर्ष इस भारतवर्ष में अपने अन्तर्गत भाव प्रगट किये बिना ही अपने जीवन का अन्त कर असमय ही काल के गाल में चले जाते हैं ? आज कल भारतवर्ष में बाल मृत्यु (Children mortallty) की समस्या बड़ी पेचीदा बन गई है, जिसका कारण आजकल शिशु रोगों की संख्या की अधिकता जान पड़ती है। छोटे २ बच्चे ही आपकी सब से बड़ी निधि और देश का सब से बड़ा धन है, जिन पर देश को अभिमान है। सब देशों के शासन अधिकारी अपने देशों से बाल मृत्यु की संख्या कम करने के लिये नित्य प्रयत्नशील रहते हैं और इस कार्य में सफल भी हुए है। परन्तु भारतवर्ष पर प्रकृति देवी का कुछ ऐसा प्रकोप है कि प्रति वर्ष ये मृत्यु संख्या बढ़ती ही जाती है। यथार्थ मे इसका कारण प्रकृति का प्रकोप नही बल्कि शिशुरोगों के विषय में मनुष्यों का अशिक्षित होना ही है, वे इतना तक नहीं जानते कि बच्चों को रोग होते किस कारण से है। यदि आप बच्चों के रोगों के विषय में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना चाहते है 'शिशुरोग विज्ञान' ग्रंथ पढ़े। इसमें शिशुरोगों-पैदा होने के कारण, उन्हे रोकने के उपाय, रोग लक्षण, निदान, चिकित्सा का वर्णन करने में लेखक ने वो कमाल किये हैं कि आप पढ़ कर दंग रह जायेंगे और आपका शरीर रोमाञ्चित हो उठेगा। ऐसे ऐसे दुष्ट कारण बालरोगों के हैं जो हमारे देश से तिल भर भी नही मिटे। आप इसे पढ़कर बालरोगों के पूर्ण चिकित्सक बन सकते हैं, एक साधारण मनुष्य भी समय पड़ने पर अपने प्यारे बच्चे का जीवन बचा सकता है।

पृष्ठ संख्या २३०, चित्र संख्या ४०, तिरंगा कवर।

विष विज्ञान—मूल्य १॥) साइज़ २० × ३० अठपेजी

आजकल भारतवर्ष में विष खाकर आत्मघात करने की प्रथा भी

बहुत ज़ोर पकड़ती जारही है, और समय पर सहायता न मिलने के कारण मृत्यु हो ही जाती है। यदि इन विषों के विषय में कुछ चिकित्सा का ज्ञान हो और उनके लक्षणों को पहिचान लिया जाय तो बहुत सी जानें बचाई जा सकती हैं। विष भी विष की अवस्था विशेष व अधिक मात्रा में खाने से विष हैं परन्तु उचित मात्रा में खाने पर अमृत का गुण करते हैं। इस ग्रंथ में अम्ल खनिज, क्षारीय—वानस्पतिक व मिश्रित जितने भी विष हैं सब पर इस चतुरता के साथ विवेचन किया गया है कि इसे पढ़कर मनुष्य पाइज़न्स मेटीरिया मेडिका का पूर्ण ज्ञाता बन सकता है। विषों को कैसे शुद्ध करना चाहिये? उन्हें शुद्धाशुद्ध मात्रा में सेवन से क्या २ गुण व हानियाँ होती हैं? उनके क्या २ लक्षण हैं? उनका क्या उपचार करना चाहिये? विषों के योग से बनने वाली औषधियाँ, उनके विविध रोगों पर प्रयोग करने के तरीके इत्यादि बातों का इस महत्वता से वर्णन किया है कि चतुर्वैद्य विषों के द्वारा हर प्रकार के रोग का इलाज कर सकता है। यदि भूल से मनुष्य स्थावर, जंगम किसी प्रकार के विष को खाले, इस ग्रन्थ की मदद से एक साधारण मनुष्य भी उस की चिकित्सा कर सकता है। हर मनुष्य को इस ग्रन्थ को घर में रखना चाहिये।

लेखक—मूल्य २) साइज़ २० × ३० अठपेजी

यह एक साहित्यिक ग्रन्थ है। इसमें नवीन और प्राचीन प्रायः तमाम ही भारतीय प्रसिद्ध हिन्दी लेखकों तथा लेखिकाओं की जीवनी तथा उनकी एक एक दो दो उत्कृष्ट सचित्र रचनाओं का समावेश है। चित्र प्रायः तमाम ही लेखकों के दिये गये हैं। महिला समाज विशेष उल्लेखनीय है। हमारे देश में महिलाओं में शिक्षा का बहुत कम प्रचार है, इस ग्रन्थ में कुछ महिलाएँ तो लेखन कला में इतनी आगे बढ़ गई हैं कि उन्होंने हिन्दी साहित्य के अग्रणीय लेखकों को भी पीछे छोड़ दिया है। रचनाओं में कहानियाँ, गद्य गीत, ग्राम्य गीत, भावपूर्ण कविताएँ,

प्रहसन, अनेक ऐतिहासिक घटनाऐं एव सामाजिक समस्याएँ सम्मिलित हैं। पृष्ठ संख्या २५० से भी ऊपर तथा चित्र ६० के लगभग है ग्रन्थ इतना रोचक बनगया है कि एकबार आरम्भ कर देने पर बिना पूरा पढ़े मन नहीं मानता तथा बार-बार पढ़ने के लिये जी चाहता है। लेखकों में श्री मैथिलीशरण गुप्त, प्रो० रामकुमार वर्मा, महात्माजी, श्री जैनेन्द्र, श्री सियारामशरण, श्री 'अज्ञेय', श्री प्रभाकर माचवे, श्री इलाचन्द जोशी, प्रो० गोकुलचन्द्र शर्मा एम० ए०, पं० रामनरेश त्रिपाठी, श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी, श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी तथा लेखिकाओं में श्री उषादेवी मित्रा, श्री तोरनदेवी शुक्ल 'लली', श्री तारा पाण्डे, श्री सुशीला आगा, श्री दिनेशनन्दिनी, श्री निर्मला मिश्रा, श्री आदर्श-कुमारी, श्री कमलादेवी प्रधान बी० ए० इत्यादि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

नोटः—छहों ग्रन्थों को एक साथ लेने पर एक ग्रन्थ बिना मूल्य भेंट किया जायेगा—डाक तथा पैकिंग व्यय हर दशा में पृथक् होगा।

स्वर्ण पदक प्राप्त
महिला रोग विज्ञान
पर
भारत के सुप्रसिद्ध विद्वानों की
कुछ सम्मतियां

अखिल भारतवर्षीय २३ वें हिन्दी-साहित्य सम्मेलन की देहली में होने वाली प्रदर्शनी से महिला रोग विज्ञान को स्वर्णपदक प्राप्त हुआ।

नारायण स्वामी प्रधान सार्वदेशिक सभा देहली—

महिला रोग विज्ञान स्त्री जाति के लिए अधिक से अधिक उपयोगी है उनका स्वास्थ्य किस प्रकार अच्छा रह सकता उसकी तदवीरें बतलाई

हैं उत्तम सामग्री और चित्रों से भरपूर है और विश्वास है कि अवश्य लोक प्रिय होगा—मैं हृदय से उसकी सफलता चाहता हूँ।

प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति संचालक 'अर्जुन'—

'महिला रोग विज्ञान' मैंने देखा है। इसमें स्त्रियों को होने वाले प्रायः सभी रोगों पर लिखा है। इस कारण मैं चाहता हूँ कि यह ग्रन्थ गृहस्थ-मात्र के घर में पहुँचे और इसका सर्वत्र प्रचार हो।

श्रीयुत रायबहादुर हरविलास शारदा एम० एल० ए०—

मैं 'महिला रोग विज्ञान' की उत्तमता पर बधाई देता हूँ मेरे विचार में स्त्रियों की आरोग्यता पर ध्यान रखना इस समय हमारा एक मुख्य कार्य है भारत भविष्य स्त्रियों पर निर्भर है उनकी योग्यता और आरोग्यता के लिए प्रबन्ध करने मे देश के नेताओं को विशेष ध्यान देना चाहिए, यह ग्रन्थ बडी योग्यता और विद्वत्तासे लिखा गया है, मैं आशा करता हूँ इस देश की स्त्रियां और पुरुष पढ़कर अपने जीवन उद्देश्यों में सफल होंगे।

बी० एन० मिश्रा, बार एटला एम०एल०ए०—

महिला रोग विज्ञान को देखकर प्रसन्नता हुई, मैं आशा करता हूँ इसके द्वारा स्त्री जाति को तथा देश को बहुत लाभ पहुँचेगा, मैं इसकी हार्दिक उन्नति चाहता हूँ।

डा० एस० सी० आनन्द, एम० बी० बी० एस० लेफ्टिनेण्ट आई० एम० एस०—

'महिला रोग विज्ञान' नामक ग्रन्थ के लिए धन्यवाद। मैंने बड़े प्रेम से इसे पढ़ा है। इसकी छपाई व बंधाई बड़ी सुन्दर और साफ़ है तथा पाठ्यसामग्री भी जानने योग्य बातों से परिपूर्ण है, ग्रन्थ बहुत ही उपयोगी है आपकी सफलता के लिए शुभ कामना करता हूँ।

श्रीमान् डा० धनीराम जी प्रेम भू० पू० सम्पादक 'चांद'—

'महिला रोग विज्ञान' मिला धन्यवाद, यह ग्रन्थ प्रकाशन कर आपने

हिन्दी भाषा भाषियों और विशेष कर वैद्यों का बड़ा उपकार किया है क्योंकि हिन्दी में महिला रोगों पर इतना अच्छा संकलन अब तक न था। आशा है आप आगे भी इसी प्रकार जनता की सेवा करते रहेंगे।

श्री चतुरसेन जी शास्त्री आयुर्वेदाचार्य—

'महिला रोग विज्ञान' देखा, बहुत सुन्दर और उपयोगी है।

पं० शिवनारायण जी शर्म्मा वैद्यराज आयुर्वेदाचार्य—

मैंने 'महिला रोग विज्ञान' देखा, यह महिला मात्र के लिए बहुत उपयोगी है, और सर्वसाधारण के लिए लाभदायक है।

श्रीयुत कविराज प्रो० हरदयालुजी वैद्य वाचस्पति, आयुर्वैदिक कालेज लाहौर—

'महिला रोग विज्ञान' देखकर अतीव प्रसन्नता हुई। बाह्यदर्शन से ही हृदय फड़क उठता है, मन में भारी आशायें बंध जाती हैं। ऐसा मनोहर सर्वांग सुन्दर ग्रन्थ प्रकाशित करने का श्रेय अद्वितीय भाव से वृ आयुर्वेदीय औषध भंडार ने प्राप्त किया है।

'महिला रोग विज्ञान' के सम्बन्ध में अत्यन्त आवश्यक ज्ञान इस ग्रन्थ में है। लेखक और प्रकाशक इस उपकार के लिए अत्यन्त धन्यवाद के पात्र है।

इस के पाठ से स्त्रियों को विशेष लाभ पहुँचने की सम्भावना है। हिन्दी जानने वाली प्रत्येक स्त्री और धायों को एकबार अवश्य इस को पढ़ना चाहिये।

प्रो० बालकराम जी शुक्ल शास्त्री आयुर्वेदाचार्य ऋषिकेश—

आपका प्रेषित 'महिला रोग विज्ञान' मिला पढ़कर चित्त में अति प्रसन्नता हुई।

आज तक अनेक स्त्री-रोग विषयक पुस्तकें लिखी गई हैं, किन्तु इस ग्रन्थ की छपाई, सफाई गुणगरिमा को देखकर मन अति प्रसन्न होता है।

वैद्य पं०ठाकुरदत्तजी शर्म्मा मालिक "अमृतधारा" लाहौर लिखते हैं—

'महिला रोग विज्ञान' परिश्रम का फल है। यह महिला रोगों के सम्बन्ध में एक उपयोगी कृति समझनी चाहिये।

श्रीयुत रामनारायण जी हर्षुल आयुर्वेदाचार्य लिखते हैं—

महिला रोग विज्ञान मिला आदिसे अन्त तक पढ़ा। यह ग्रन्थ वैद्यों के लिये कर्तव्य प्रदर्शक है, और स्त्रियों के लिये मनन करने योग्य है।

कविराज गयाप्रसाद जी शास्त्री साहित्याचार्य 'श्रीहरि' लखनऊ लिखते हैं—

'महिला रोग विज्ञान' प्राप्त हुआ। यह ग्रन्थ केवल अपने पाठकों के लिए ही नहीं किन्तु समस्त आयुर्वेद प्रेमियों के लिये सब से अधिक सुन्दर आकर्षक, उपयोगी, तथा अत्यधिक ज्ञानवर्धक प्रेमोपहार है। इस ग्रन्थ के अन्तरंग तथा बहिरंग दोनों ही जगत् अत्यन्त रमणीय स्पृश-णीय तथा आयुर्वेद प्रेमियों के लिये गर्व और गौरव की वस्तु है।

रामचन्द्र जी भारद्वाज—

'महिला रोग विज्ञान' निकट भविष्य में वैद्यसमाज में एक आदर की वस्तु समझा जायगा—यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है। केवल 'स्त्री रोग विज्ञान' के आधार पर ही इसका स्थान अपनी श्रेणी में सब से ऊँचा हो गया है।

कविराज शान्तिदेव त्रिपाठी वैद्य शास्त्री—

'महिला रोग विज्ञान' पढ़कर चित्त अत्यन्त प्रसन्न हुआ। प्रत्येक वैद्य को इस ग्रन्थ की एक प्रति अवश्य रखनी चाहिये। इस का मूल्य २) रक्खा गया है, यदि मुझ से सच पूछा जाये तो यह मूल्य इस पर निछावर है। ग्रंथ में स्त्रियों के जटिल से जटिल रोगों का निदान तथा चिकित्सा-क्रम बड़ी योग्यता से प्रकाशित किया गयाहै।

]

डाक्टर पुरुषोत्तमदत्त 'गिरिधर' वैद्यवाचस्पति—

'महिला रोग विज्ञान' प्राप्त करके अत्यन्त प्रसन्नता हुई, पढ़ कर तो हृदय प्रफुल्लित हो उठा वास्तव में अपूर्व वस्तु है। ऐसे प्रचार की हिन्दू महिला समाज में अत्यन्त आवश्यकता है। मैं आपको ऐसे सुन्दर सफल और उपयोगी ग्रन्थ के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे निश्चय है कि यदि आप इसी प्रकार परिश्रम जारी रक्खेंगे तो वैद्यसमाज का बहुत ही उपकार होगा।

भारत के प्रसिद्ध पत्रों की रायें

'अर्जुन' देहली—

'महिला रोग विज्ञान' मिला, बड़े परिश्रम से, बड़े बड़े अनुभवी वैद्यों और डाक्टरों के महिला रोग विज्ञान सम्बन्धी लेख संग्रह किये हैं सभी लेख सचित्र हैं।

शायद ही कोई स्त्री रोग ऐसा बचा हो जिसकी चर्चा इस में न की गई हो। अनेक रोगों की अनुभूत तथा सरल चिकित्सा भी लिखी गई है। गृहस्थी स्त्री पुरुषों के लिये यह बड़े काम की चीज बन गई है।

'रंगभूमि' देहली—

स्त्रियों के रोग हमारे चिकित्सों के लिए एक सतत जटिल समस्या रहे हैं। इस ग्रन्थ मे उन रोगों के लक्षण, कारण और निदान पर अच्छी विवेचना की गई। प्रकाशक ने ऐसा अच्छा ग्रंथ भेंट करके हमारे वैद्यक साहित्य की उल्लेखनीय सेवा की है।

तीन तिरंगे और अनेक सादे चित्रों से इस की शोभा और भी बढ़ गई है छपाई सफाई सुन्दर है।

'वैद्य' मुरादाबाद—

'महिला रोग विज्ञान' में स्त्रियों के विविध रोगों पर लेख हैं, प्रायः

सब उपयोगी और विशेष गवेषणा के साथ लिखे गये है। चित्र तथा छपाई सफाई अतीव सुन्दर है।

'सूज़ाक' और आतशक पर

पं० मनोहरलाल जी शर्मा प्रधानाध्यापक, बी० एल० आयुर्वेद विद्यालय देहली—

मुझे 'सूज़ाक और आतशक' ग्रंथ बहुत ही सुन्दराकार तथा लाभप्रद प्रतीत हुआ। ईश्वर करे वैद्यमंडल का प्रेमभाजन बन कर वैद्यों में विशेष जागृति उत्पन्न करे।

प्रो० बसन्तलाल महर्षि बी० ए०, आयुर्वेदाचार्य, इञ्चार्ज राजयक्ष्मा हस्पताल व सेनिटोरियम लाहौर—

'सूज़ाक और आतशक' ग्रंथ बहुत उत्तम है, काग़ज तथा छपाई पर भी विशेष ध्यान दिया गया है, वैद्य बन्धुवों के लिए बहुत उपयोगी है। इसमे साधारण जन समुदाय के लिए भी बहुत उत्तम २ बातें हैं।

कविराज रामलालजी गुप्त प्रभाकर, वैद्य वाचस्पति लाहौर—

वस्तुतः आप कमाल कर रहे है, अभी 'महिला रोग विज्ञान' तो निकाला ही था कि 'सूजाक और आतशक' भी निकल आया। वही निराली शान, चुने हुए लेख, छपाई सफ़ाई देखने योग्य है।

'मलेरिया' पर

आयुर्वेदाचार्य कविराज हरदयालजी वैद्य वाचस्पति K. R. A. M. V. M. A. S.

आयुर्वेदाध्यापक डी० ए० वी० कालेज शंकर औषधालय लाहौर

मलेरिया ग्रंथ पढ़ कर बड़ी प्रसन्नता हुई, मलेरिया सम्बन्धी विज्ञान को बड़ी खोज से संग्रह करने के कारण आप धन्यवाद के पात्र हैं। लेखशैली, उत्तम विज्ञानपूर्ण है।

वैद्यराज गणेश विट्ठल पलसे जैन आयुर्वेदाचार्य, मु० वार्शी शोलापुर—

मलेरिया ग्रंथ देखकर मन प्रसन्न हुआ, चिकित्सा काल में यह ग्रंथ वैद्यों, डाक्टरों को बड़ा लाभदायक सिद्ध होगा, मैं इसकी हृदय से उन्नति चाहता हूँ।

पण्डित चन्द्रशेखर जी पाण्डेय "चन्द्रमणि"—

मलेरिया ग्रंथ मिला, कृशतनु होते हुए भी यह अपने विषय में अद्वितीय है।

कविराज नानकचन्द्रजी आयुर्वेदाचार्य मच्छीहटा लाहौर—

मलेरिया ग्रंथ मे सब लेख गम्भीर गवेषणापूर्ण लिखे गये हैं। आशा है वैद्यमंडल इन लेखों से विशेष लाभ प्राप्त कर सकेगा।

डाक्टर शिवदत्तप्रसाद वाजपेयी वैद्यभूषण एच० एम० बी० अजगैन उन्नाव—

मलेरिया ग्रंथ मिला, यह वैद्यों के लिए तो संग्रहणीय है ही, किन्तु प्रत्येक व्यक्ति के लिए और खासकर ग्रामीण वैद्यों के लिए बड़ी आवश्यकता की वस्तु है क्योंकि प्रायः ग्रामों में उत्तम वैद्यों के अभाव के कारण यथोचित चिकित्सा न होने से सैकड़ों मनुष्य अकाल में ही काल कवलित हो जाते हैं। लेख खोज पूर्ण और उत्तम हैं इसके लिये प्रकाशक महोदय को बधाई है।

प्रोफेसर वैद्यराज डाक्टर के० डी० तलनियाँ वैद्यशास्त्री,

श्री कैलाश आयुर्वेद विद्यालय, अलमोड़ा—

सम्मत्यर्थ मलेरिया ग्रंथ प्राप्त हुआ यह प्राच्य, प्रतीच्य, सिद्धहस्त चिकित्सकों द्वारा सारगर्भित लेखों से परिपूर्ण है। मलेरिया का पूर्ण इतिहास अन्य रोगों से पृथकीकरण कुनेन से हानि लाभ व उसका इतिहास, तृतीयक, चातुर्थिक ज्वर, तीसरे चौथे ही दिन अपने नियत समय पर क्यों आता है, इत्यादि गम्भीर विषयों का वर्णन इसके सुन्दर

पृष्ठों पर अङ्कित है तिस पर भी सफाई और छपाई विशेष सराहनीय है, अतएव यदि इसे मलेरिया का सर्वाङ्ग-पूर्ण ग्रंथ कह दिया जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी।

शिशुरोग विज्ञान पर

श्री ज्ञानेन्द्रनाथसेन कविराज B. A., प्रिंसिपिल— ऋषिकुल आयुर्वैदिक कालिज हरिद्वार लिखते हैं—

(संस्कृत का हिन्दी अनुवाद)

शिशुरोग विज्ञान प्राप्त हुआ। पढ़कर बड़ा सन्तोष हुआ। विषयों का निर्वाचन गम्भीर भावों से परिपूर्ण है। लेखन शैली अत्यन्त मनोरम है, चित्रों ने इसे और भी चारचाँद लगा दिये हैं। कोई रोग ऐसा नही रहा जिसका इसमें सविस्तार वर्णन न मिलता हो। इसमें ऐलोपैथिक तथा आयुर्वैदिक दोनों प्रकार के चिकित्सा विज्ञान के वर्णन का होना इसकी महत्ता है। यह ग्रन्थ प्रायः सभी के लिये वरन् स्त्रियों को शिशुपालन सम्बन्धी कार्य के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। प्रवर्तक, प्रबन्धक सब का धन्यवाद करते हुए मेरी प्रार्थना है कि आप इसी प्रकार समयानुकूल और २ विषयों पर भी ऐसे ग्रन्थ प्रकाशित कर जन समाज का महान् उपकार करेंगे।

SCHOLAR'S UNION

Rishikul Ayurvedic College Hardwar U. P.

'शिशु-रोग-विज्ञान' यथा समय मिला। देखकर अत्यन्त हर्ष हुआ। इसका आकार, चित्र, छपाई आदि सभी में उत्तमता का पूर्ण रूप से परिचय मिलता है। शिशुरोगों के सम्बन्ध में उच्च कोटि का संकलन है। मानव संसार इसके द्वारा अमृत पान कर सदैव जीवन की नवलता के आनन्द का अनुभव करता रहेगा इसके प्रकाशक महानुभावों को इस सराहनीय कार्य के लिए धन्यवाद है।

श्रीयुत वैद्य मनीषी डा० शिवदत्तप्रसाद वाजपेयी वैद्यभूषण एच० एम० बी०

'शिशु-रोग-विज्ञान' मिला। वास्तव मे परिश्रम सराहनीय है। गृहस्थियों के लिए यह ग्रन्थ बच्चों के रक्षार्थ एक अस्त्र है। इसे प्रत्येक व्यक्ति को अपने घर में संग्रह करके रखना चाहिये।

श्रीयुत आयुर्वेदाचार्य, कविराज गणेशदत्त सारस्वत, बी० ए०, वैद्य-तिलक, मेम्बर, बोर्ड आफ इण्डियन मेडिसिन, यू० पी०

"शिशुरोग विज्ञान" नामक ग्रन्थ हालमे हस्तगत हुआ। इसे बच्चों के विषय का एक पूर्ण ग्रन्थ कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी।

श्रीयत प्रो०बालकराम शुक्ल शास्त्री आयुर्वेदाचार्य, विद्यालय हृषीकेष—

भारतवर्ष में अन्य देशों की अपेक्षा बालकों की मृत्यु संख्या अत्यन्त रोमांचकारी है। आपने इस ग्रन्थ को प्रकाशन कर साधारण जनता और चिकित्सक मंडल को अत्यन्त लाभ पहुंचाया है। अतः शिशुरोगों के ज्ञान के लिये प्रत्येक व्यक्ति को इस पुस्तक का अध्ययन करना चाहिये।

कविराज देवसिंह बिट्ठल शास्त्री आयुर्वेदाचार्य धन्वन्तरि (स्वर्ण-पदक प्राप्त भूतपूर्व चिकित्साध्यक्ष सा० तु० गो० राजयक्ष्मा सैनिटोरियम, परीक्षक ऋषिकुल आयुर्वेदविद्यालय, आ० यू० तिब्बी कालेज आदि)।

मैने शिशुरोग-विज्ञान ग्रन्थ देखा है। यह ग्रन्थ न केवल चिकित्सकों के ही, अपितु साधारण जनता के लिये भी लाभ की चीज़ है। मैं इसकी हृदय से सफलता चाहता हूँ।

श्रीयुत पं० चन्द्रशेखर वैद्यशास्त्री वाइस-प्रिंसिपल तिब्बिया कालेज, देहली।

"शिशुरोग-विज्ञान" नामक ग्रंथ को देख कर हृदय प्रफुल्लित हुआ है। ऐसे ग्रंथों की अत्यन्त आवश्यकता है ताकि वैद्यक विषयों को सर्व समक्ष विस्तार पूर्वक रख कर विशेष लाभ हो सके। तथा प्रत्येक गृहस्थ

अपने शिशुओं को भली प्रकार स्वस्थ्य रख सके।

श्रीमती दमयन्ती प्रभाकर—

मुख पृष्ठ पर शिशु का सुन्दर चित्र बड़ा आकर्षक है। सामग्री सभी पठनीय एवं उपयोगी है। हिन्दी में बच्चों के रोगों के बारे में साहित्य की बहुत ही कमी थी। अधिकांश माताएँ अंग्रेज़ी से अपरिचित हैं। इसलिये यह ग्रंथ उनके लिये और भी अधिक लाभप्रद सिद्ध होगा। प्रत्येक घर में इसकी एक-एक प्रति रहनी चाहिये।

अन्त में ऐसा सुन्दर ग्रंथ प्रकाशित करने के लिये आपको बधाई देती हूँ। भविष्य में आपसे ऐसे ही ग्रंथ प्रकाशन करने की आशा है।

पुरोहित पं० बद्रीनारायण "श्रृङ्गी" प्रोफ़ेसर श्री आयुर्वेदिक ब्रह्मचर्याश्रम संस्कृत विद्यालय इन्दौर—

"शिशुरोग-विज्ञान" अत्यन्त मनोहर तथा पठनीय है। भविष्य में आपके अतुल प्रयास से देशोन्नति होने की आशा है। मैं हृदय से इसकी सफलता चाहता हूँ, तथा यह ग्रंथ प्रत्येक गृहस्थ के गृह में हो, मेरी हार्दिक इच्छा है।

श्रीयुत वैद्यशास्त्री राधागोविन्दजी मिश्र झांसी—

आज हमारे सन्मुख "शिशुरोग विज्ञान" ग्रंथ उपस्थित है।

इस ग्रंथ को प्रकाशित कर आपने भारी कमी की पूर्ति की है। इसको भिषग्वरों, डाक्टरों, हकीमों के सारगर्भित लेखों ने अत्यन्त रोचक बना दिया है। यह आपके परिश्रम का ही फल है कि आज आयुर्वेद संसार के समक्ष सर्व सामग्री से परिपूर्ण सुन्दर तथा सुसज्जित महान् संकलन उपस्थित किया है इसके लिए आप बधाई के पात्र हैं। पुनः हम वैद्य समाज से अनुरोध करना एक वैद्य के नाते कर्त्तव्य समझते हैं कि ऐसे ग्रंथ को अवश्य अपनायें ताकि भविष्य में और भी अधिक उत्तम ग्रंथ प्रकाशित होते रहें और आयुर्वेद की उन्नति में सहायक हो सकें।

श्रीयुत दुलारेलाल भार्गव सम्पादक "सुधा" गङ्गा-पुस्तकमाला-कार्यालय लखनऊ—

"शिशुरोग-विज्ञान" बहुत सुन्दर एवं पठनीय है, मातायें और बहिनें इससे बड़ा लाभ उठा सकती हैं, ऐसे उपयोगी ग्रन्थ के लिये आपको बधाई। मैं हृदय से इसकी उन्नति चाहता हूँ।

श्रीयुत कविराज-दयानन्द पाठक D.I.M. (B.I.M.) पदक प्राप्त—

'शिशुरोग विज्ञान' देखा इसका वाह्य कलेवर तो मनोहर है ही साथ ही अन्तस्तल भी विज्ञान गवेषणा से ओत प्रोत है।

प्राचीन आयुर्वेद में फिर नवीनता का संचार करता हुआ यह ग्रंथ गृहस्थ जीवन के लिये आशीर्वाद ही है।

मैं आशा करता हूँ प्रत्येक मनुष्य इस कार्य को सफल बनाने की चेष्टा करेगा।

श्रीयुत पं० छोटेलाल बरैया आमोल निवासी शान्ति कुटी पो० पान विहार (उज्जैन)—

'शिशुरोग-विज्ञान' में बालरोग सम्बन्धी प्रत्येक विषय की खोज कर सरल से सरल रूप मे उसका अनुपान और उपचार बतलाया गया है जिसके द्वारा छोटे से छोटे ग्राम में निवास करने वाला गृहस्थी भी अपनी प्राण प्यारी सन्तान को भयंकर से भयंकर रोग पिशाच से छुड़ा कर निरोग बना सकता है, कम से कम भारत के प्रत्येक गृहस्थी को चाहिये कि इस बालोपयोगी विशालकाय "शिशुरोग-विज्ञान" नामक ग्रंथ को मंगाकर अपने घर मे विराजमान कर अपनी प्यारी सन्तान को निरोग बनावें।

आयुर्वेदरत्न कविराज योगीन्द्रचन्द्र शुक्ल D.I.M Medalist

'शिशुरोग विज्ञान' हस्तगत हुआ, इसके प्रबन्ध कर्ता सर्वथा धन्यवाद के पात्र हैं। शिशुरोग विज्ञान का अवलोकन कर मन अत्यन्त प्रसन्न हुआ।

Dr. B. M, SHARMA, M. S., M. D

Chandni Chowk, Delhi.

"Shishu Rog Vigyana" has been read by me with keen interest. The general get up of the book is praiseworthy and there are a variety of articles dealing with many aspects of children's diseases. One only wishes that too many dogmatic prescriptions had not been given.

On the whole it is a laudable attempt on the part of the publishers and it is hoped that they may bring out more books in the future.

श्रीयुत प० देवकीनन्दन शर्मा आयुर्वेदाचार्य वैद्यराज रसकेसरी

रजिस्टर्ड ए० क्लास इण्डियन मैडिसन बोर्ड यू० पी०

'शिशुरोग विज्ञान' मिला धन्यवाद। मैंने बड़े प्रेम से इसे पढ़ा। यह ग्रंथ अत्यधिक सुंदर तथा ज्ञानवर्द्धक ठोस सामग्री से परिपूर्ण है, वैद्यों के अतिरिक्त प्रत्येक गृहस्थी के लिए बड़ी उपादेय वस्तु है।

आयुर्वेदाचार्य-धन्वन्तरि कविराज पं० परमानन्दजी शास्त्री

चिकित्सक—म्युनिसिपिल आयुर्वैदिक औषधालय देहली

'शिशुरोग विज्ञान' प्राप्त हुआ। यह ग्रंथ केवल अपने पाठकों के लिए ही नहीं अपितु समस्त आयुर्वेद प्रेमियों तथा गृहस्थ मात्र के लिए अत्यन्त लाभप्रद तथा अत्यधिक ज्ञान वर्द्धक प्रेमोपहार सिद्ध हुआ है, आन्तरिक तथा बाह्य रूप में अत्यन्त स्पृहनीय तथा गौरव की वस्तु है। संचालक बधाई के पात्र हैं।

श्रीयुत पं० प्रेमनारायणजी आयुर्वेदाचार्य, कानपुर—

'शिशुरोग विज्ञान' मिला। प्रारम्भ में ही मुख पृष्ठ के चित्र को देख कर मन अत्यन्त प्रसन्न हुआ। ख्याल था शायद बाहर ही ऐसी शोभा

हो, परन्तु जब इसे आद्योपान्त पढ़ा तो हृदय बहुत ही सन्तुष्ट हुआ ऐसे ग्रंथ बहुत ही कम देखने में आये हैं। मैं सिफारिश करूँगा कि इसे प्रत्येक गृहस्थी और वैद्य अवश्य मंगाकर पढ़े और लाभ उठाये। इस असीम परिश्रम तथा व्यय के लिए संचालक गण बधाई के पात्र हैं।

पं० प्रभुदयाल जी चतुर्वेदी 'आयुर्वेद भास्कर' मनीपुर (आसाम)

'शिशुरोग विज्ञान' देखकर मन बड़ा मुदित हुआ। बाल रोगों पर यह प्रयास सबसे उत्तम कहते हुए मुझे कदापि संकोच नहीं है। सभी विषय पूर्ण रूप से, प्रायः बच्चों के सभी रोग इसमें समझाये गये हैं छपाई, बनवाई अत्युत्तम है, मुख पृष्ठ पर बालक का चित्र बड़ा आकर्षक है। मुझे आशा है, आशा ही नहीं बल्कि मैं आपसे सानुरोध कहूँगा कि भविष्य में भी ऐसे ही और और विषयों पर ग्रंथ रचना कर तथा उन्हें प्रकाशित कर जनता के यश के भागी बनें।

Ayurveda Visharada Dr. M. V. R. N. Acharya, (Sreerama Vaidyashala, Calingapatanam (Vizag)

भवदियः प्रेषितं शिशुरोग विज्ञान पुस्तकं दृष्ट्वा प्रहृष्ट तरंगो अभवम् भवदीय परिश्रमापि नितरां श्लाघनीयेति सानन्दं विज्ञापयामि। ईदृशं प्रबंधरचनेन वैद्यविद्यार्थिलोकस्य, वैद्यलोकस्य च महान उपकारः कृत इति च विज्ञापयामि। भवदशं प्रयत्नाः सफला भवन्तु इति च प्रार्थयामि सर्वेश श्री धन्वंतरिम्।

Dr. Kelash Narain Mathur M. B. B. S.

I read your "Shishu Rog Vigyan" with great interest It is really a very instructive book for the public.

DR. RAJ NARAIN ROHATGI M. B., B. S.

I have read your book on children diseases. There are a number of articles dealing with chro-

nic & every day ailments of the children, which are very useful to the general public. The question of child mortality in India has been very carefully dealt with. In my opinion the book is very useful, handy and should be widely circulated. I congratulate the publishers on their attempt.
S. B. MATHUR, M.B.B.S. (BOM.)

I have received with thanks your book on children diseases and went through it. In my opinion this book will serve great purposes as regards the bringing up of infants and children. Every Hindi knowing mother ought to have a copy of this book to facilitate her knowledge on this special subject of which unfortunately the average Indian mother knows so little. It will help a great deal in her daily cares and worries for her prized little ones.

श्रीयुत विद्वद्वर्य पं० माणिकचन्द्र जी व्याकरणाचार्य, साहित्यरत्न
आचार्य—दि० जैन जम्बू विद्यालय, सहारनपुर।

आपका 'शिशुरोग विज्ञान' ग्रंथ मैंने पढ़ा है इसके अध्ययन करने से अनेक मनुष्य वैद्य की सहायता के बिना ही अपने बच्चों को आरोग्य कर सकते हैं।

शिशु सम्बन्धी रोगों के निवारणार्थ आपने मर्मस्पर्शी प्रयत्न किया है, ऐसे जगत हितैषी आपके शुभ पुरुषार्थ की प्रशंसा कहां तक की जाय। यह ग्रन्थ सम्पूर्ण नर नारियों के अध्ययन मनन करने योग्य है। इसके

अनुसार प्रवृत्ति करने से परिपूर्ण आयुष्य, बलबुद्धि पराक्रम शाली बालक उत्पन्न होवेंगे।

भारत के प्रसिद्ध पत्रों की कुछ सम्मतियां—

भारत का प्रसिद्ध आयुर्वेदिक पत्र "वैद्य" मुरादाबाद अक्तूबर १६३६ के अङ्क में लिखता है:—

भारत में आज हज़ारों और लाखों शिशु, रोगों का समुचित निदान और उपर्युक्त चिकित्सा के अभाव में अकाल ही काल के ग्रास बन जाते हैं, शिशु रोग विज्ञान में बालकों के प्रायः सभी रोगों पर देश के विविध विद्वानों द्वारा लिखे हुए प्रायः ५० लेख और अनुभूत योग आदि दिये हैं। लेख प्रायः सभी पढ़ने योग्य हैं। शिशु रोग सम्बन्धी इतना विशाल संग्रह शायद आज तक भी कहीं से नहीं निकला है। हम इस सफलता पर प्रकाशक को बधाई देते हैं।

आयुर्वेद के धुरन्धर वैद्य कविराज श्री पं० उपेन्द्रनाथ दास काव्य सांख्य व्याकरण न्यायतीर्थ प्रोफेसर ए० ऐण्ड यू० तिब्बिया कालेज द्वारा सम्पादित आचार्य धन्वन्तरी अपने १५ अक्तूबर १६३६ के अंक में लिखता है—

शिशुरोग विज्ञान ग्रंथ में शिशु पालन, रोग, चिकित्सा आदि शिशु सम्बन्धी सब ही विषयों पर प्रकाश डाला गया है अतः यह अत्यन्त उपयोगी होगया है। वस्तुतः भारत जैसे देश में जहां संसार के सब देशों की अपेक्षा बालकों की मृत्यु संख्या अधिक है, शिशु सम्बन्धी ऐसे साहित्य की अत्यन्त आवश्यकता थी। इस से हमारे वैद्यवरों के साथ ही साथ अल्प शिक्षित माताओं को भी विशेष लाभ होगा। अतः शिशु रोग विज्ञान अति उपयोगी कहा जा सकता है। लेखों का चयन अच्छे ढंग से किया गया है।

रुग्ण तथा स्वस्थ बालकों के चित्र विशेष उल्लेखनीय हैं। ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी और संग्रह करने योग्य है। हम हृदय से स्वागत करते

हैं, वैद्यवरों पाठकों और प्रत्येक गृहस्थी से अनुरोध करते हैं कि वे इसे अवश्यमेव पढ़ें।

"विष विज्ञान" पर

अखिल भारतीय आयुर्वेद महामंडल-विद्यापीठके प्रधान मंत्री, रसायनाचार्य, कविराज प्रतापसिंह एम० बी०, आई० एम०, आर ए० पी० लिखते हैं।

आपका "विष विज्ञान" दर्शनीय है। वैद्योंको इसे ध्यान से पढ़कर लाभ उठाना चाहिये। आजकल सामयिक साहित्य जाने बिना चिकित्सा करना कितना कठिन है यह किसी विज्ञ चिकित्सक से छुपा नहीं है। इस ग्रन्थ में प्राच्य प्रतीच्य विषों का परिचय कराकर विज्ञ लेखक ने वैद्यों का भी उपकार किया है।

आशा है ऐसे ही ग्रन्थ निकाल कर इस विद्या का प्रचार करने में आप अग्रणी होंगे।

हिंदी प्रभाकर कविराज हर्षुल मिश्र आयुर्वेद रत्न रायपुर C. P.

विष विज्ञान प्राप्त हुआ। यह अपने विषय का यद्यपि परिपूर्ण ग्रंथ नहीं कहा जा सकता तथापि इस की महत्ता प्रगट हुए बिना नहीं रहती। मेरा जहाँ तक अनुमान है आधुनिक आयुर्वेद जगत में विष विज्ञान का यह अभूतपूर्व ग्रंथ है। इसमें आयुर्वेदीय विषों के गुण धर्म के साथ २ आधुनिक तथा पाश्चात्य, विषों का भी विस्तीर्ण वर्णन किया गया है। इसके पढ़ने से वैद्यबन्धुओं का विष सम्बन्धी ज्ञान भण्डार बढ़ सकता है, इस के लेखक विद्वान मालूम होते हैं। उनकी लेखनी से जो कुछ लिपि-बद्ध हुआ है वह आयुर्वेद साहित्य के लिये नवीन वस्तु है। प्रत्येक चिकित्सक को इस ग्रन्थ का सम्पूर्ण रीति से मनन तथा अध्ययन करना चाहिये। विष विज्ञान में पाश्चात्य वैद्यक पण्डितों द्वारा आविष्कृत अनेक विषों का समावेश कर आयुर्वेद साहित्य को सम्पत्तिशाली बनाने

का जो सराहनीय और स्तुत्य प्रयत्न किया गया है उसे निरीक्षण कर इस ग्रन्थ से अत्यन्त प्रसन्नता होती है। यदि इस के लेखक पाश्चात्य विद्वानों के विष सम्बन्धी अनुभव को भारतीयता का जामा पहना कर अंग्रेजी शब्दों के स्थान में हिन्दी शब्दों की स्थापना करते तो इस की महत्ता हिन्दी साहित्य की दृष्टि से भी प्रगट होने लगती। इतने पर भी जो सेवा की है वह प्रशंसनीय है। मेरी सलाह है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ध्यान ऐसे ग्रंथों की ओर आकर्षित करना चाहिये और सम्मेलन से प्रार्थना करनी चाहिये कि हिन्दी विश्व विद्यालय की वैद्यक परीक्षाओं के लिये विष विज्ञान जैसे आधुनिक ग्रन्थ को पाठ्य पुस्तक के रूप में स्थान दिया जाय।

श्री पं० विश्वनाथजी द्विवेदी—प्रिंसिपिल एल एच आयुर्वैदिक कालिज—पीलीभीत

वास्तव में आपने आयुर्वेद साहित्य को एक ठोस वस्तु प्रदान की है। विषविज्ञान आयुर्वेद में नहीं के बराबर है और इसके ऊपर कोई नया साहित्य प्राप्त भी न था जोकि इस कमी की पूर्ति करता, इस ग्रन्थने इस कमी की पूर्ति करदी है। इस में विषों का विवरण बहुत विशद रूप से किया हुआ है। साथ ही पाश्चात्य विषों के विषय में भी काफी संग्रह है। अतः प्रत्येक वैद्य को इसकी एक प्रति अपने पास रखनी चाहिये। क्योंकि विषों के प्रयोग से हज़ारों की संख्या में प्राण नाश होते हैं। वैद्य इनकी रक्षा बिना विषविज्ञान के नहीं कर सकते। अतः यह आवश्यकीय ग्रन्थ है। "इसके प्रकाशक महोदय धन्यवाद के पात्र हैं"।

वैद्य मनीषी डा० शिवदत्तप्रसाद शर्मा वैद्य भूषण पो० अजगैन जि० उन्नाव, यू० पी०

विष विज्ञान आपने भेजा सो मिला. उत्तम है—

देशी विदेशी प्रत्येक विष के सम्बन्ध में उपयोगी और अनुभवपूर्ण लेखों के संग्रह करने में काफ़ी प्रयत्न किया है, तभी इस योग्य बन सका

है कि प्रत्येक वैद्य अवश्य अवलोकन करे। इसके देखने से बहुत सा विष सम्बन्धी ज्ञान लाभ हो सकता है। इसी कारण ग्रन्थ संग्रहणीय है।

श्री कृष्णचन्द्र वैद्य शास्त्री, बदायूं

आपने ऐसा उपयोगी ग्रन्थ प्रकाशित कर पाठकों का ही नहीं अपितु वैद्य समाज का बड़ा उपकार किया है। इसमें प्रायः सभी विषों पर विद्वान लेखकों द्वारा उपयोगी और सार गर्भित लेख लिखे गये हैं जिससे वैद्य समाज का बड़ा ही लाभ होगा। विषों की जानकारी के लिए प्रत्येक वैद्य को एक बार इस ग्रन्थ को अवश्य पढ़ना चाहिये।

प्रो० उमेदीलाल वैश्य

प्रोप्राइटर---दी० श्यामसुन्दर रसायनशाला, गायघाट बनारस सिटी

आपका भेजा हुआ विष-विज्ञान मिला। इस ग्रंथ के प्रकाशन में आप को काफ़ी सफलता मिली है। एलोपैथिक और आयुर्वैदिक मुख्य-मुख्य विषों का सामूहिक विवेचन, एक अच्छा प्रयास है। यदि आयुर्वेद के अन्य संदिग्ध विषों पर प्रकाश डाला जाता तो बहुत ही उत्तम होता। फिर भी इस दशा में, आपको आशातीत सफलता मिली है। हाइड्रोक्लोरिक एसिड, एमोनियम, एण्टीमनीक्लोराइड, फास्फोरस आदि का बहुत ही सुन्दर विवेचन हुआ है।

विषों के नाम, लक्षण और चिकित्सा विषयक तालिका तो पंफलेट के रूपमें, छपवाकर गोवों में वितरण करने योग्य है। इससे, समय पर, बहुतों की प्राण-रक्षा हो सकती है। विषैली सुन्दरी, नाम की कहानी पढ़कर कौन ऐसा रासायनिक होगा जो अपना एक अलग, विषमय-संसार बनाने की, कुछ देर तक, कल्पना नहीं करेगा। छपाई, सफाई और काग़ज़ नयनाभिराम है। फिर भी १॥) रु० मूल्य है, जो कि अधिक नहीं कहा जासकता है।

स्वर्ण पदक प्राप्त

महिला रोग विज्ञान के विशेष लेख ।

लेख	लेख
डिम्बकोष का शोथ	आर्तव व्याधियों की चिकित्सा
पैरीटेनाइटिस और पलविक सल्युलाइटिस	गर्भाशय में जल संचय
गर्भाशय भित्ति शोथ	गर्भपात और उसकी रक्षा
गर्भाशय की श्लैष्मिक कला शोथ	शिशुपोषण
स्त्री की जननेन्द्रिय के रोग और उनकी चिकित्सा	गर्भाशय और डिम्ब ग्रन्थियों को पृथक कर देने से स्वास्थ्य पर हानि लाभ ।
गर्भावस्था में रक्तस्राव	स्त्री शरीर में चूने का अभाव और उस से उत्पन्न व्याधियाँ
सूजाक	गर्भ न रहने के कारण
प्रदर	प्रसूत ज्वर
प्रदर रोग विवेचन	पित्ताश्मरी
रक्तप्रदर	सूतिका कीटावेश से व्यथित प्रसूता स्त्री
हिस्टीरिया	प्रसवोत्तर रक्तस्राव
सोमरोग	दुग्ध ज्वर
एकलैम्पसिया	गर्भावस्था में आवश्यक नियम
प्रसूत का आक्षेप	प्रसवकाल
क्लोरोसिस	शीघ्र प्रसव
उपदंश	स्त्रियोंके सौंदर्य साधन के उपाय
दांत और उसकी रक्षा के उपाय	योनि कण्डू
नवजात शिशुपालन	अनुभूत प्रयोग
गर्भकाल	
गर्भिणीके रोग तथा चिकित्सा	

शिशुरोग विज्ञान में क्या है ?

"सूज़ाक और आतशक" के कुछ लेख

विष विज्ञान के कुछ विशेष विषय

विष, कार्बोलिक एसिड, एसिड् हाइड्रोस्यानिक, हाइड्रो क्लोरिक एसिड्, सल्फ्यूरिक एसिड्, नाइट्रिक एसिड्, फास्फ़ोरिक एसिड्, एसिड औक्ज़लिकम्, अमोनियम, संखिया, एन्टिमनी क्लोराइड, एन्टिमेनी कम्पौन्ड, टार टार अमेटिक, कास्टिक पोटास, सीसा, तूतिया, आयोडीन, पारद, फ़ास्फ़ोरस, चान्दी, ज़िंक, मीठा विष, अफ़ीम, अफ़ीम विष नाशक उपाय, बेलेडौना, डिजिटेलिस, कर्पूर, सैलोल, सल्फ़ोनल, क्लोरीन, हायोसायमस, कैन्थरी डी.ज़, लोबीलिया, विष सम्बन्धी कुछ साधारण बातें, मूषिक विष, कौलचिकम, चाय में विषैली तत्त्व, विष विज्ञान, विषैली सुन्दरी (कहानी) अर्गट, गर विष चिकित्सा, पारद का विषैला प्रभाव, कुचला, सर्प विष पर आयुर्वेदिक इन्जैक्शन, गुञ्जा, सेहुंड, अर्क दुग्ध, धतूरा, विजिया, भंग की तरंग में (हास्य रस पूर्ण एक कहानी) क्लोरोफ़ार्म, सर्प विष आदि आदि गम्भीर लेख पढ़ें ।

'लेखक' पर कुछ सम्मतियां ।

वीर अर्जुन के संचालक प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखते हैं—

मैंने लेखक देखा । बहुत अच्छा है । उसका सब से बड़ा गुण यह है कि उसमे नये नये लेखकों का प्रादुर्भाव हुआ है, कोई फुलवारी केवल पुराने वृक्षों पर ज़िन्दा नहीं रह सकती, नया पौदा आना चाहिए, और उसकी रक्षा भी होनी चाहिए, साहित्य के लिए यही अमृत है । इस ग्रंथ में लेखों और चित्रों का बहुत उत्तम संग्रह है । नए उठते हुए लेखकों और लेखिकाओं के चित्रों के अतिरिक्त उनके संक्षिप्त परिचय भी दिए गए हैं । कविताएँ तो बहुत सी हैं, परन्तु सेहरा 'बच्चन' जी की 'झाँकी' शीर्षक कविता के सिर पर ही बँधना चाहिए । कविता मे ओज है, प्रतिभा है, अनुभूति है । दिल्ली के साहित्यिक मरुस्थल में रस की धारा बहाने का उद्योग करने वाली युवक लेखकों की एक मंडली पैदा हो रही है, जिसका आभास हमें इस ग्रंथमें मिलता है । मैं इस सफल यत्नका अभिनन्दन करता हूँ और आशा रखता हूँ कि जनता इसे अपनायेगी ।

हिन्दी साहित्य के सर्वोत्कृष्टकलाकार श्री जैनेन्द्र कुमार लिखते हैं
·· आपका लेखक मैंने देखा है ।

आपका चुनाव और आपकी रुचि ठीक है । बहुतेरे नामी लेखकों को आपने ले घेरा है ।

साप्ताहिक कर्मवीर—खंडवा,

ढाई सौ पृष्ठों का यह ग्रंथ बड़ा सुन्दर और महत्वपूर्ण है । श्री अज्ञेय की कहानी, श्री इलाचन्द्र जोशी का लेख व श्री नेमीचन्द्र की कविता के सिवा कितने ही उत्तमोत्तम लेखकों की रचनाओं का इस में समावेश है । अन्त में, एक विशेषता है, वह हैं जीवनियाँ । जितने लेखकगण इस ग्रंथ में हैं उनके अधिकाँशतः चित्र तो हैं ही किन्तु उनका थोड़ा-थोड़ा जीवन-परिचय भी दिया है । यह एक अच्छी पद्धति है ।

दैनिक वीर अर्जुन के सम्पादक श्री रामगोपालजी लिखते है—

लेखक निःसन्देह हिन्दी साहित्य में एक असाधारण वस्तु हुआ है। रचनाएँ विविध रुचियों की और विविध रसों की होने के कारण इससे सभी प्रकार के पाठकों को मनोरंजन होगा ।

मैं आपको बधाई देता हूँ ।

साप्ताहिक वीर—अलीगंज, एटा ।

प्रस्तुत ग्रंथ काफ़ी सुन्दर है, लेखादि एकत्रित करने में काफ़ी परिश्रम किया गया है । श्री जैनेन्द्र जी और अज्ञेय जी की कहानियां सुन्दर हैं । श्री प्रभाकर माचवे का "श्री जैनेन्द्रकुमार : एक व्यक्तित्व चित्र" लेख उत्तम और विद्वत्तापूर्ण है,···श्री रामकुमार वर्मा और 'बच्चन' जी की कविताएँ हमें ख़ूब अच्छी लगी । अंत में लेखकों का संक्षेप में परिचय भी दिया है ।

साहित्य प्रेमियों को इस पुस्तक का अवश्य संग्रह करना चाहिए ।

साप्ताहिक वीर अर्जुन के सम्पादक श्री लेखराम बी० ए० लिखते हैं-

आपका लेखक देखा । अच्छा ख़ासा, भारी भरकम है । लेखक में

पुराने लेखकों पर निर्भर न रहकर जहाँ तक बन पड़ा है नये लेखकों की खोज की गई है और यह एक प्रशंसनीय चीज़ है। उसमें नया साहित्य, नए साहित्य के खिलाड़ी और साथ ही नया उत्साह भी देखने को मिलता है।

श्री सियारामशरणजी गुप्त लिखते हैं—

"लेखक देखा। मुझे यह सुन्दर प्रतीत होता है। मेरी बधाई स्वीकार कीजिए। आप उत्तरोत्तर उन्नति करे, ऐसी आशा है।"

उत्कल भारती डा० (श्रीमती) कुन्तल कुमारी देवी लिखती हैं—

लेखक मिला, देखकर बड़ी ख़ुशी हुई। श्रीमान् राजवैद्य रसायनशास्त्री महावीरप्रसादजी विशेषतया लेखक समाजके धन्यवाद के पात्र हैं।

इस अंक में देखने लायक एक विशेष बात यह है कि हिन्दी के प्रतिष्ठित बड़े-बड़े महानुभाव लेखकोंके अलावा नवीन लेखक, लेखिकाओं की ओर अधिक ध्यान दिया गया है। जो बड़े हैं, सम्मान के पात्र हैं जिनकी प्रतिष्ठा की धाक जम गई है उनका यश गाना मानों सूरज को दीपक दिखाना है; परन्तु जो अभी लेखक जगत के शिशु हैं, भारती नपोवन की कोमल कलियां हैं, उन्हें प्रोत्साहन देकर आगे बढ़ाना बड़ी दूरदर्शिता और साहित्य के लिये परम कल्याण कर कार्य हुआ है। कौन कह सकता है आज के कवि कल 'कवीन्द्र' प्रभात के 'रवि' मध्याह्न के 'रवीन्द्र' न होंगे। उपयुक्त वातावरण न पाकर कितने ही अर्द्ध—विकसित प्रतिभामय फूल अकाल मुर्झा गये हैं।

मैं लेखक को अपने हार्दिक अभिनन्दन के साथ लेखकों को आन्तरिक शुभ कामना ज्ञापन करते हुए परमात्मा से प्रार्थना करती हूँ कि वह सदा हमारे लेखकों को देश की कला, संस्कृति और जातीय जीवन की उन्नति साधन करने के लिए शक्ति दें और देश के कला प्रेमी जन समुदाय उनका अपने मन और धन से आदर करें, उनके परिश्रम की क़द्र करें, यह उनका कर्त्तव्य है।

श्री प्रभात कुमार एडवोकेट हाई कोर्ट
इलाहाबाद लिखते हैं—

'लेखक' सभी दृष्टियों से सुन्दर एवं उपादेय है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह ग्रन्थ स्थायी एक आवश्यक साहित्य प्रस्तुत करने की विधि सिद्ध होगी। इसकी आशातीत सफलता के लियें आप सभी के धन्यवाद पात्र हैं।

प्रो० नगेन्द्र, एम० ए० लिखते हैं—

लेखक मिला मन आह्लादित हुआ। वैसे तो सभी लेख और कवितायें सुन्दर हैं फिर भी प्रो० रामकुमारवर्मा की 'मिलन' 'प्रसाद जी की 'ताण्डव' श्री तारा पाण्डे की 'तुम दीपक—' श्री नरेन्द्र की 'ये कवितायें' बच्चन' जी की 'झाँकी' अज्ञेय जी की—'जब सो जाता है संसार', आदि कवितायें कवियों की परिपूर्ण शब्दों की वाणी हैं। लेखों में श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी का प्रसाद विषयक लेख, प्रभाकर माचवे के दोनों लेख, जैनेन्द्र जी की कहानी, 'पन्त' जी का श्रीमती वर्मा विषयक लेख सभी इस ग्रंथ के गौरव हैं। कहानियों का भी महत्व कम नहीं।

मेरी शुभ कामनाएँ!

श्री उपादेवी मित्रा लिखती हैं—

'लेखक' देखकर चित्त प्रसन्न होगया। लेखकों की संक्षिप्त जीवनी और विचारशील लेख उसकी विशेषता हैं। ऐसा उच्च कोटि का ग्रंथ केवल विस्तृत ही नहीं, वरन् प्रभावित भी करता है। और हिन्दी संसार को एक ऐसे ग्रन्थ भेंट करने के लिए उसके विद्वान प्रकाशक जी बधाई के पात्र हैं।······ निस्सन्देह 'लेखक' घर घर में समादृत होने योग्य है।

श्रीमती कमला प्रधान, बी० ए० लिखती हैं—

लेखक मिला।···वास्तव में यह साहित्यिक पुस्तकालय की शोभा बन गया है। इसके कुछ लेखों की उपयोगिता तो चिरकाल तक बनी रहेगी। और वे लेख हैं—'श्रीमती वर्मा की काव्य-साधना' 'श्री जैनेन्द्र-

कुमारः एक व्यक्तित्व चित्र,' 'प्रेमचन्द जी की कला,' श्री जयशंकर प्रसादः 'महापथ के पथिक' व 'बच्चन' जी इत्यादि। साथ ही कुछ ऐसे लेखों का समावेश भी है जिनके द्वारा साहित्य-सेवकों तथा नए प्रवेश करने वालों को योग्यता-वृद्धि के लिए उत्तम संकेत मिलते हैं। उदाहरणार्थ— 'कविता और जीवन—एक कहानी,' 'नए-नए लेखकों से', 'भावुकता बनाम भावज्ञता'। 'कला के सम्बन्ध में,' तथा 'साहित्य में राजनीति का स्थान' लेख भी प्रशंसनीय है।

इसके अतिरिक्त सुन्दर-सुन्दर कहानियों व कविताओं ने इस ग्रन्थ को विशेष रोचक बना दिया है। प्रारम्भ की श्री मैथिलीशरण जी गुप्त की चार पंक्तियों ने पाठकों के हृदय में चिरस्थाई प्रभाव छोड़कर 'लेखक' को हमारे जीवन के अति निकट पहुँचा दिया है। कहानियों में 'महापुरुष' उल्लेखनीय है।

लेखों को पढ़कर पाठकों के हृदय में लेखकों को जानने का एक विशेष कुतूहल रहता है। इसमें उसकी पूर्ति करके 'लेखक' का नाम भी सार्थक कर दिया है।

'लेखक के रूप, आकार व अनमोल संग्रह पर जो कुछ लिखा जाय वह थोड़ा है।

श्रीमती निर्मला मित्रा लिखती हैं—

'लेखक' मिला·· बहुत सुन्दर लगा। ··

श्री रत्नकुमारी माथुर लिखती हैं—

···मैंने 'लेखक' पढ़ डाला, एक से एक बढ़कर रचनाएँ हैं। फोटोज़ और जीवनियों ने तो सोने में सुगन्ध का काम किया है। कुमारी दमयन्ती प्रभाकर का लेख पढ़कर मुझे खूब हँसी आई। ऐसे-ऐसे लेखकों-लेखिकाओं की चित्ताकर्षक रचनाएँ देने के लिए मैं आपको हृदय से धन्यवाद देती हूँ। अधिक लिखना सूर्य को दीपक दिखाना है।

श्री वजरंगलाल सुलतानिया लिखते हैं—

'लेखक' मिला।'''आकर्षक रूप में आकर्षक गुणों की स्थापना ने सोने में सुहागे का काम किया है। हिन्दी संसार के उतने महारथियों की प्राणदायिनी रचनाओं का ऐसा सुन्दर संग्रह मैंने सचमुच अब तक नहीं देखा था। साहित्य के सर्व मान्य आचार्यों के अतिरिक्त 'श्री रत्नकुमारी माथुर', 'श्री अक्षयकुमार जैन' 'श्री हरदयाल', 'श्री उमेश', 'श्री दमयन्ती प्रभाकर', 'श्री चातक', आदि की रचनाओं से भी मेरा विशेष मनोरंजन हुआ। 'श्री ओमिला पाठक' की 'माँ की याद' मुझे बहुत सुन्दर लगी। ऐसा सुन्दर ग्रन्थ निकालने के लिए बधाई।'''

श्री गजेन्द्रनाथ पटरैया बी० ए०, एल-एल० बी० लिखते हैं—

'लेखक' मिला। अनेक धन्यवाद। आपने जो अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है वह निस्सन्देह साहित्यिक नवयुवकों के लिए स्पर्द्धा की बात है।

इसने उच्च कोटि का ग्रन्थ निकालकर हिन्दी साहित्य की अनुपम सेवा की है, और उसमें सदैव के लिए सम्मान पूर्ण स्थान पा लिया है। गम्भीर लेख, भाव पूर्ण कविताएँ, सुन्दर तथा मौलिक कहानियाँ, अभिनव शैली, परिमार्जित तथा ओजस्विनी भाषा, उत्तम छपाई और बाह्य रूप आदि ने 'लेखक' को साहित्य की स्थायी वस्तु बना दिया है।

हिन्दी जगत के प्रसिद्ध कवि ठा० गोपाल शरणसिंह के सुपुत्र कुँवर सोमेश्वरसिंह, बी ए, एल एल, बी. लिखते हैं—

आपका 'लेखक' बहुत ही सुन्दर है; लेख और छपाई दोनों ही मनोहर हैं। मुझको विश्वास है कि यदि आपका यही उत्साह बना रहा तो आप पुस्तक प्रकाशन कला में श्लाघनीय स्थान शीघ्र प्राप्त कर लेंगे।

वीर प्रेस आफ इण्डिया, कनॉट सर्कस न्यू देहली।